सत्रहवां अंक–2012

स्वर्ण जयंती विशेषांक

नियोजन संदेश

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन
शहरी विकास मंत्रालय

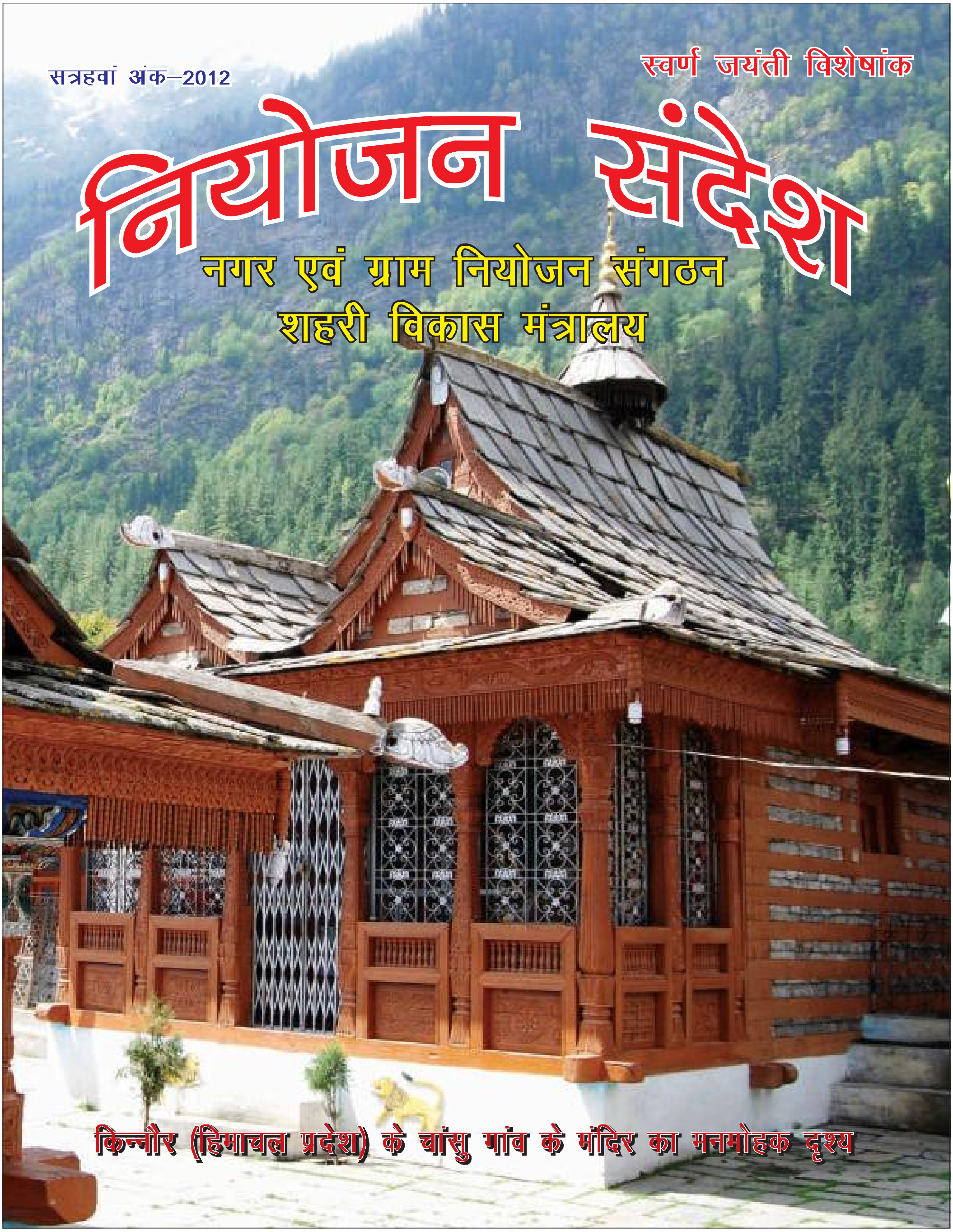

किन्नौर (हिमाचल प्रदेश) के चांसु गांव के मंदिर का मनमोहक दृश्य

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

रॉटरडैम सेंट्रल स्टेशन, नीदरलैंड

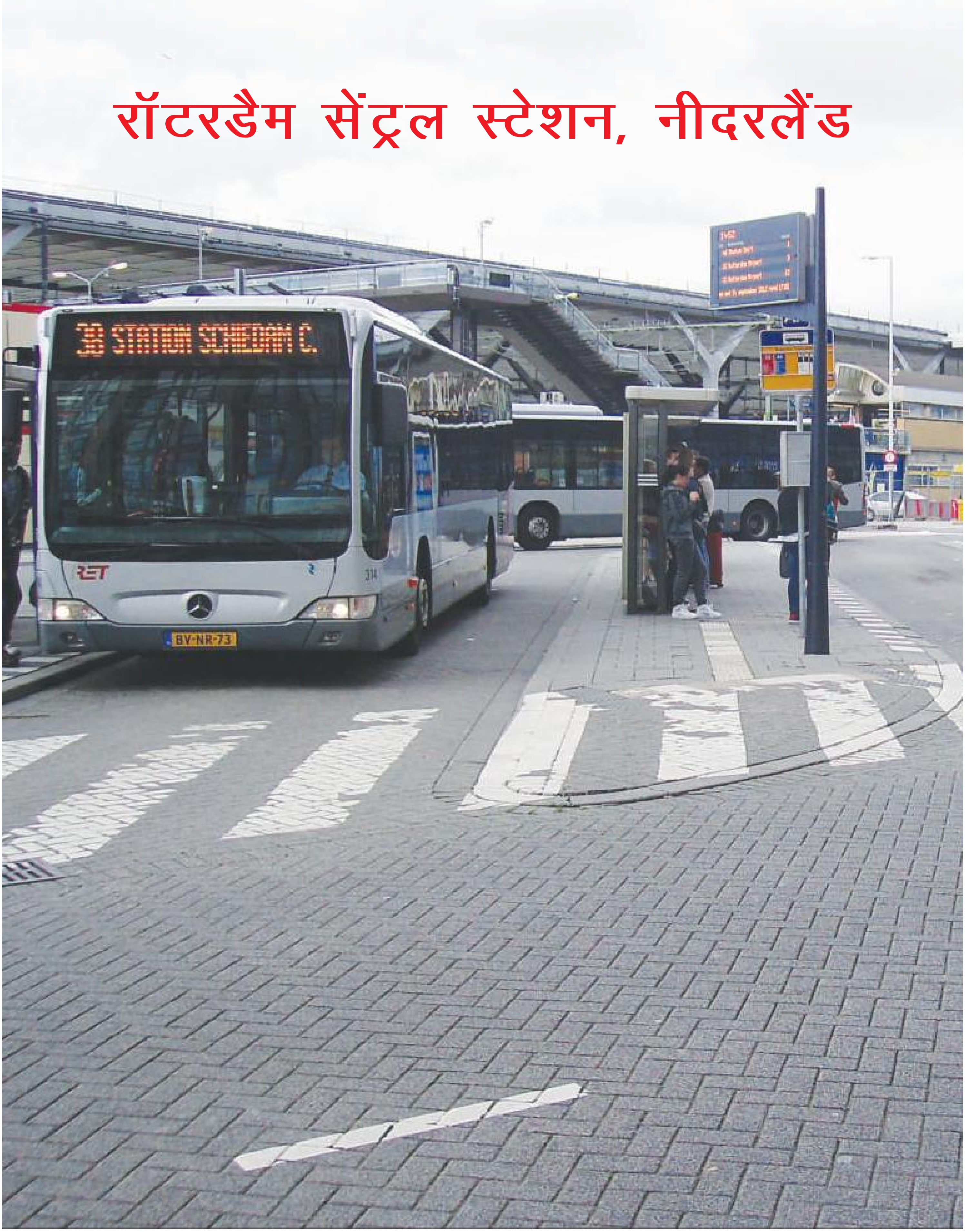

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सत्यमेव जयते

नियोजन संदेश

2012

सत्रहवां अंक

प्रधान संरक्षक

जय बी. क्षीरसागर
मुख्य नियोजक

परामर्शदाता

के.के. जोद्दार
अपर मुख्य नियोजक

संपादक

धनसिंह वर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सहायक संपादक

ललित मेहता
हिन्दी अनुवादक

संपादन सहयोग

नेत्रपाल
आशुलिपिक–ग्रेड–II

मोख्तार राय
ग्रुप–ग–कर्मचारी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

'नियोजन संदेश' पत्रिका में व्यक्त विचार
रचनाकारों के अपने विचार हैं। उनके लिए
सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नियोजन संदेश के अगले अंक के लिए नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से स्वरचित रचनाएं आमंत्रित हैं। रचना के साथ अपना पासपोर्ट आकार का फोटो अवश्य भेजें। फोटो के पीछे अपना नाम जरूर लिखें।

सम्पर्क सूत्र :

राजभाषा अनुभाग
नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन
भारत सरकार
शहरी विकास मंत्रालय
ई–ब्लॉक, विकास भवन,
इंद्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली–110002
फोन : 011–23370898 ई–मेल: adoltcpo@gmail.com

मुद्रक

सब–अरबन प्रेस
244/5, गली नं. 13, थान सिंह नगर, आनन्द पर्वत, नई दिल्ली–110005
फोन : 011–23612594 ई–मेल: sub_urbanpress@indiatimes.com

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

डॉ. अशोक सिंघवी
संयुक्त सचिव
(शहरी विकास)

भारत सरकार
शहरी विकास मंत्रालय
निर्माण भवन, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

किसी भी राष्ट्र के लिए राजभाषा का उतना ही महत्व होता है जितना महत्व राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का होता है। आजादी के संघर्ष के दिनों से ही हिंदी भाषा भारत की एकता, अखण्डता और संस्कृति की वाहक रही है। हिंदी विश्व की एकमात्र ऐसी भाषा है कि इसे जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है। इसमें अन्य भाषाओं के शब्दों को अपना लेने की अद्भुत क्षमता है। अपने इन्हीं गुणों के कारण आज यह विश्व भाषा के रूप में उभर रही है और चीन, अमेरिका आदि देशों ने इसके महत्व को समझा है और अपने यहां इसकी पढ़ाई आरंभ कर दी है।

तकनीकी कार्यालय होते हुए भी नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन में हिंदी में कार्य किया जा रहा है। यह संगठन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के राजभाषा प्रेम के कारण ही संभव हुआ है। पिछले कुछ वर्षों से प्रकाशित अपनी हिंदी पत्रिका "नियोजन संदेश" में तकनीकी लेखों को सरल एवं सुगम हिंदी में प्रस्तुत करना इस बात का पर्याय है कि नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान प्राप्त है।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन अपनी गृह पत्रिका नियोजन संदेश का सत्रहवां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। मुझे पूर्ण आशा है कि पत्रिका का यह अंक पहले अंकों की भांति सभी पाठकों को पसंद आएगा।

हार्दिक शुभकामनाएं,

(डॉ. अशोक सिंघवी)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जय बी. क्षीरसागर
मुख्य नियोजक

भारत सरकार
नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन
शहरी विकास मंत्रालय
ई ब्लॉक, विकास भवन,
आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन अपने शानदार 50 वर्ष पूरे कर चुका है। मैं संगठन के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को संगठन के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के इस अवसर पर अपनी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन एक तकनीकी संगठन है, इसके बावजूद संगठन में सरकार की राजभाषा नीति का पालन करते हुए संगठन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं में हिंदी में प्रविष्ठियां करना, सभी कार्यालय आदेशों को अनिवार्य रूप से द्विभाषी रूप में जारी करना, अधिकांश फाइलों में हिंदी में नोटिंग लिखना तथा 'क' व 'ख' क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय एवं राज्य सरकारों के कार्यालय के साथ अधिकाधिक हिंदी पत्राचार किया जाना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि हमने संगठन में सरकार की राजभाषा नीति को प्रभावी रूप से लागू करने को बहुत महत्व दिया है।

संगठन की हिंदी गृह पत्रिका "नियोजन संदेश" के सत्रहवें अंक को "स्वर्ण जयंती विशेषांक" के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। संगठन में हिंदी कार्य को बढ़ाने में इसकी भूमिका भी सराहनीय रही है। पत्रिका ने जहां संगठन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना काम हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया है, वहीं उन्हें हिंदी में अपनी लेखन क्षमता को विकसित करने का एक मंच भी प्रदान किया है।

मैं पत्रिका में लेख भेजने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूं कि उनके प्रयासों से ही संगठन की हिंदी गृह पत्रिका "नियोजन संदेश" नए आयामों को छू रही है और देश के कोने–कोने से हमें इस पत्रिका की सफलता की कामना प्राप्त हो रही है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी सभी को पसंद आएगा। 'नियोजन संदेश' के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को मेरी बधाई और शुभकामनाएं।

(जय बी. क्षीरसागर)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

संपादकीय

राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रभाषा किसी भी स्वतंत्र देश की विशिष्ट पहचान होती हैं। भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्ज़ा दिया गया है लेकिन आजादी मिलने के 65 वर्ष के बाद भी हिंदी को उसका उचित स्थान न मिलना इस बात को इंगित करता है कि अभी हमें सच्ची आजादी प्राप्त नहीं हुई है। लॉर्ड मैकाले ने इंग्लैंड में भाषण देते हुए यह घोषणा की थी कि उन्होंने भारत में जो शिक्षा प्रणाली लागू की है उसका प्रभाव 50 वर्ष बाद देखने को मिलेगा, जब भारतवासी न तो अपने देश पर और न ही अपने महापुरूषों एवं अपनी संस्कृति पर गर्व करेंगे। आजादी के लिए संघर्षरत नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, सरदार बल्लभ भाई पटेल और लाल बहादुर शास्त्री जैसे नेताओं और सरदार भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरू जैसे देशभक्ति के दीवानों ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाते समय यह कल्पना भी नहीं की होगी कि देशवासी आजादी के लिए किए गए उनके बलिदान को इतनी जल्दी भूल जाएंगें।

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन की स्थापना 1962 में हुई थी। अपने 50 वर्षों का लेखा–जोखा करने पर पाते हैं कि तकनीकी कार्यालय होते हुए जहां हमने देश में शहरी एवं क्षेत्रीय योजनाओं और विकास की नीतियों तथा कार्यक्रमों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वहीं संगठन में सच्चे अर्थों में सरकार की राजभाषा नीति को लागू करके देशभक्त नेताओं एवं आजादी के क्रांतिकारियों को सच्ची श्रद्धांजलि दी है।

हाल ही में अमेरिका में हुए राष्ट्रपति चुनाव में मतपत्रों को हिंदी में भी छापा गया। "जो बात हिंदी में है, और किसी में नहीं" स्टार क्रिकेट चैनल का यह विज्ञापन बरबस ही हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। डिस्कवरी आदि चैनलों पर हिंदी में कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाना एवं विश्व के अनेकों विश्वविद्यालयों में हिंदी विषय को पढ़ाया जाना इस बात का प्रतीक है कि पूरे विश्व ने हिंदी के महत्व को समझ लिया है। हम सभी भारतीयों का भी यह दायित्व है कि हम भी हिंदी के महत्व को समझें और इसे आगे बढ़ाने में अपना भरपूर योगदान देकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करें। **आइए, संगठन के स्वर्ण जंयती वर्ष के अवसर पर हम शपथ लें कि हम अपना अधिकाधिक काम हिंदी में करेंगे तथा भारत सरकार के अन्य कार्यालयों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करेंगे।**

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

संगठन की हिंदी पत्रिका 'नियोजन संदेश' के सत्रहवें अंक को 'स्वर्ण जंयती विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया गया है। पत्रिका के पिछले अंक के बारे में प्रबुद्ध पाठकों से कुछ पत्र प्राप्त हुए हैं जिसमें उन्होंने जहां पत्रिका की दिल खोलकर प्रशंसा की है, वहीं दूसरी ओर हमारी कुछ त्रुटियों की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित किया है। हमने इन त्रुटियों को दूर करके इस अंक को और बेहतर बनाने का प्रयास किया है।

आशा है नियोजन संदेश का यह अंक सभी पाठकों को पसंद आएगा। पत्रिका के अगले अंक को इससे भी बेहतर बनाने के लिए आपके विचारों एवं सुझावों का हमें इंतजार रहेगा।

(धनसिंह वर्मा)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

जीवन–सूत्र

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागे तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम।
कुछ किए बिना ही जय–जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

– हरिवंश राय बच्चन

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	सरस्वती वंदना		1
2.	टी.सी.पी.ओ. के शानदार 50 वर्ष		2
3.	भारतीय नगरों एव शहरों में मिश्रित भू–उपयोग	जय. बी. क्षीरसागर	3
4.	वर्ष 2012–13 के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य	राजभाषा खंड	11
5.	राजभाषा नियम, 1976–प्रमुख नियम	राजभाषा खंड	12
6.	राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) का अनुपालन	राजभाषा खंड	13
7.	सरकारी कामकाज (टिप्पण/प्रारूपण) मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना	राजभाषा खंड	14
8.	यूनिकोड की आवश्यकता	ललित मेहता	15
9.	रहो इस तरह जिंदगानी में	धनसिंह वर्मा	19
10.	तमन्ना	रानी वधवा	20
11.	नगर नियोजन एवं शहरी गरीबों से संबंधित सुधार	डॉ. अचला मेदिरत्ता	22
12.	कहीं यही तो प्यार नहीं	प्रभाष कुमार	29
13.	तनाव के कारण व इससे मुक्ति के उपाय	विमल कुमार	30
14.	माँ का रूप	रणसिंह सैनी	31
15.	वैश्विक मंदी और भारतीय अर्थव्यवस्था	डॉ. अशोक कुमार बंदूनी	32
16.	भ्रष्टाचार	सुबोध कुमार श्रीवास्तव	35
17.	'महिमा सत्संग की'	प्रवीण कुमार	38
18.	नैतिक मूल्यों का पतन	नेत्रपाल	39
19.	परिवहन महायोजना निर्माण में ट्रक परिवहन की आवश्यकता एवं ट्रक चालकों के व्यक्तित्व तथा उससे जुड़े मुद्दों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	उदित रत्न	41
20.	हमारा सामाजिक बदलाव	विपिन कुमार	46
21.	आधुनिक समाज और नारी	तनवीर अहमद खान	47
22.	महिलाएं और व्यक्तिगत वित्त	आभा अग्रवाल	49
23.	सन्यासी बनूं या गृहस्थ	अमीर सिंह	51
24.	भ्रष्टाचार एवं विकास	अनिल कांत मिश्रा	52

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

25.	ब्रिक्स : उभरती शक्ति	आर.पी.सिंह	53
26.	आतंकवाद से कार्यालय की सुरक्षा	आर.डी. मीना	57
27.	वचनबद्धता	किरन बाला	59
28.	समाज में मीडिया की भूमिका	आशा चंद्रा	60
29.	माता–पिता का ऋण	रामसिंह	62
30.	भारत में पंचायती राज व्यवस्था	राम स्वरूप मीना	64
31.	श्रद्धा का महत्व	मोख्तार राय	66
32.	चमक	सरोज बाला	67
33.	सफलता का मूल मंत्र : अच्छा स्वास्थ्य	राम प्रकाश	68
34.	दिल्ली मेट्रो ट्रेन	प्राण कुमार	69
35.	भाभी का बलिदान	उदयवीर सिंह प्रजापति	70
36.	चिंतन के मोती	चंद्रकान्ता शर्मा	72
37.	आपका पत्र मिला		73
38.	संगठन में प्रयोग में आने वाले अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी पर्याय		75

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सरस्वती वंदना

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
अज्ञानता से हमें तार दे माँ ।
तू स्वर की देवी ये संगीत तुझसे
हर स्वर तेरा हर गीत तेरा
हम हैं अकेले हम हैं अधूरे
एक तू ही है पूर्ण, हे शारदे माँ ।
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
अज्ञानता से हमें तार दे माँ।

मुनियों ने समझी मुनियों ने जानी
वेदों की भाषा वेदों की वाणी।
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें
विद्या का हमको अधिकार दे माँ।
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
अज्ञानता से हमें तार दे माँ ।

तू श्वेतवर्णी कमल पर विराजे,
हाथों में वीणा मुकुट सिर पर साजे
मिटा दे तू हमारे अंधकार, हे माँ
उजालों का हमको संसार दे माँ ।
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
अज्ञानता से हमें तार दे माँ ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

टी.सी.पी.ओ. के शानदार 50 वर्ष (1962–2012) एक परिचय

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन (टीसीपीओ) की स्थापना 1962 में नगर नियोजक संगठन (टीपीओ) तथा केंद्रीय क्षेत्रीय और शहरी नियोजन संगठन (सीआरयूपीओ) को मिलाकर की गई थी। नगर नियोजन संगठन (टीपीओ) की स्थापना पण्डित जवाहर लाल नेहरू द्वारा 1955 में दिल्ली का प्रथम मास्टर प्लान तैयार करने के लिए की गई थी जबकि शहरी नियोजन संगठन (सीआरयूपीओ) की स्थापना दिल्ली क्षेत्र की योजना तैयार करने और स्टील नगरों, नदी घाटी परियोजनाओं इत्यादि पर परामर्श देने के लिए की गई थी। टीसीपीओ 1962 से शहरी विकास मंत्रालय का एक तकनीकी अंग है जो शहरी एवं क्षेत्रीय नियोजन और विकास के क्षेत्र में शीर्ष तकनीकी सलाहकार संगठन के रूप में कार्य करता है।

टी.सी.पी.ओ. देश में शहरी एवं क्षेत्रीय नियोजन और विकास की नीतियों, कार्यक्रमों और कार्यनीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और विभिन्न राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में टी.सी.पी.ओ. द्वारा तैयार किए गए मॉडल नियमों के आधार पर नगर एवं ग्राम नियोजन विभागों की स्थापना की गई है और राज्य नगर एवं ग्राम नियोजन अधिनियम तैयार किए गए हैं। यह संगठन देश में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, उपक्षेत्रीय और स्थानीय स्तरों पर स्थानिक नियोजन और विकास से संबंधित केंद्रीय सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों को पेश करने एवं बढ़ावा देने में मुख्य भूमिका भी निभाता है और इस क्षेत्र में एक विशेषज्ञ एजेंसी के रूप में उभरा है। यह संगठन शहरी विकास, शहरी डिजाइन, स्थानिक नियोजन, पर्यटन विकास परियोजनाओं इत्यादि पर परामर्श देने का कार्य करता है और शहरी नियोजन, जी.आई.एस. प्रयोग इत्यादि के क्षेत्रों में सेवारत नियोजकों एवं शहरी प्रबंधकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संचालन करने के अलावा शहरी विकास मंत्रालय की विशिष्ट योजना स्कीमों को भी मॉनीटर करता है।

वर्ष 2006 से श्री जय बी. क्षीरसागर संगठन के विभागाध्यक्ष हैं। वर्तमान में डॉ. अशोक सिंघवी, आई.ए.एस., संयुक्त सचिव (शहरी विकास) संगठन के पदेन अध्यक्ष हैं।

संगठन देश में उत्तरदायी शहरी और क्षेत्रीय योजना और विकास को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।

देश में एकीकृत और स्थायी शहरी और क्षेत्रीय योजना तथा विकास प्राप्त करने के लिए कार्यप्रणाली बनाने और प्रोत्साहन देने के लिए नवीन विचारों और रणनीतियों को सुविधाजनक बनाना, मजबूत बनाना और उपलब्ध कराना ही संगठन का मिशन है। तकनीकी कार्यालय होते हुए जहां संगठन ने देश में शहरी एवं क्षेत्रीय योजनाओं और विकास की नीतियों तथा कार्यक्रमों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वहीं संगठन में सच्चे अर्थों में सरकार की राजभाषा नीति को लागू किया है। संगठन के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं में शत–प्रतिशत प्रविष्टयां हिन्दी में की जा रही है। सभी आशुलिपिकों/लिपिकों को हिन्दी आशुलिपि/टंकण का प्रशिक्षण दिला दिया गया है। धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी कागजातों को अनिवार्य रूप से द्विभाषी रूप में जारी किया जाता है। हिन्दी में मूल–पत्राचार एवं फाइलों पर हिन्दी में नोटिंग राजभाषा कार्यक्रम के अनुरूप ही है। प्रति तिमाही हिन्दी कार्यशाला एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें आयोजित की जाती हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भारतीय नगरों एवं शहरों में मिश्रित भू–उपयोग

जय. बी. क्षीरसागर

प्रस्तावना

भारत की शहरी जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। नगरों और शहरों की संख्या 2001 में 5161 थी जो 2011 में बढ़कर 7935 हो गई है। इसके फलस्वरूप भारत आज दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा शहरी तंत्र बन गया है। यह अनुमान लगाया गया है कि 2051 तक देश की जनसंख्या का आधा हिस्सा शहरी हो जाएगा। महानगरीय शहरों (मिलियन प्लस) की संख्या बढ़कर 100 से अधिक हो जाएगी और शहरी बस्तियों की कुल संख्या बढ़कर 10,000 से अधिक हो जाएगी। कुल जनसंख्या 1.70 अरब और भूमि मनुष्य का अनुपात 0.19 हेक्टेयर हो जाएगा। सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का योगदान लगभग 75–80 प्रतिशत हो सकता है।

शहरीकरण के मुद्दे को ध्यान में लाने के लिए भारत को न केवल इसकी शहरी अवसंरचना, प्रशासन और उत्पादकता में सुधार लाना होगा तथा गरीबों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने होंगे बल्कि भू–उपयोग एवं विकास पर नियंत्रण करके नगरों/शहरों के भौतिक विकास को विनियमित करना होगा। साथ ही भारत के शहरी क्षेत्रों में निवेश को बढ़ाने की आवश्यकता होगी।

जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीकरण मिशन (जेएनएनयूआरएम) ने बुनियादी अवसंरचना के प्रावधान के लिए सुधारों से जुड़ी वित्तीय सहायता प्रदान करके काफी हद तक इस पर ध्यान दिया है तथा इस संबंध में यह राष्ट्रीय स्तर पर सबसे महत्वपूर्ण पहल रही है। संविधान (74वें संशोधन) अधिनियम (सीएए) के अधिदेश के अनुरूप एक महत्वपूर्ण सुधार में शहरी नियोजन कार्यो का हस्तांतरण शहरी स्थानीय निकायों को करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। संविधान संशोधन के साथ जोड़ी गई 12वीं अनुसूची में भू–उपयोग सहित शहरी नियोजन को एक प्रमुख तत्व के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

जेएनएनयूआरएम का उद्देश्य शहर के बाहरी क्षेत्रों, आउट ग्रोथ, शहरी गलियारों, नागरिक सुविधाओं के वितरण में वृद्धि और शहरी गरीबों के लिए सुविधाओं को सरलता से उपलब्ध कराने की व्यवस्था, आंतरिक शहरी क्षेत्रों का शहरी नवीकरण, बुनियादी सुविधाओं की व्यवस्था, वहनीय कीमतों पर भूधृति (पट्टेदारी) की सुरक्षा, बेहतर आवास और पर्यावरण एवं सामाजिक सेवाओं के नियोजित विकास के साथ अवसंरचना के एकीकृत विकास की तलाश करना है। जेएनएनयूआरएम ने परियोजनाओं के व्यावहारिक प्रदर्शन, दूसरे शहरों से सीखने का नेटवर्क, संबंधन और सुधारों द्वारा संचालित उच्च प्रोफाइल घटनाओं के माध्यम से शहरों में शहरी स्थिरता के लिए उत्प्रेरित कार्रवाई की है। सामाजिक विकास योजनाओं की अधिकता के माध्यम से आजीविका और शहरी प्रक्रिया/प्रबंधन परिवर्तन को निकट लाने का प्रयास करना महत्वपूर्ण है, इसमें केवल आर्थिक विकास के बजाए मानव विकास के लिए जिला और शहरी दोनों बस्ती योजनाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाए और सभी संबंधितों के लिए जीत की स्थिति प्राप्त करने के लिए युक्तिसंगत और भागीदारी शासन प्रक्रिया के माध्यम से योजना के ज्ञान प्रबंधन और सूचना विज्ञान को मजबूती प्रदान की जाए।

भू–उपयोग को भूमि के खण्ड और इस पर होने वाली गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जाता है। नेटवर्क के साथ–साथ भू–उपयोगों का संयोजन इसके विभिन्न रूपों में नगर/शहर की स्थानिक संरचना को परिभाषित करता है। भारतीय नगरों एवं शहरों में मिश्रित उपयोग का प्रचलन हमेशा से ही रहा है विशेषकर जिनका व्यवस्थित

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

विकास हुआ है। इसे भूतल पर दुकान, प्रथम तल पर आवासीय उपयोग और साथ के प्लाट पर डेयरी सहित शीर्ष मंजिल पर एक प्लेग्रुप तथा सभी के सामने एक संकरी गली के रूप में प्रकट किया गया। इस प्रकार का विकास जोखिम भरा था। आपातस्थिति में निकासी और राहत उपलब्ध कराने में कुछ बाधाएं थीं। दिल्ली मास्टर प्लान, 1962 में साहसिक कदम उठाया गया और योजना की विकेन्द्रीकृत सौपानिक प्रणाली पर ध्यान केंद्रित किया जिसमें शहर को आठ योजना भागों और 24 उपयोग जोनों में बांटा गया था। योजना में सुविधाजनक खरीदारी की सुविधा से शुरू होकर उप–सीबीडी/सीबीडी तक वाणिज्यिक उपयोग के पॉच स्तरीय क्रम सहित उपयोगों के स्पष्ट प्रथक्कीकरण का प्रस्ताव किया गया है। हालांकि, समय अवधि बीतने पर भी पॉच स्तरीय क्रम कार्यान्वित नहीं किया जा सका। मुख्यत आवासीय उपयोग में पारिश्रमिक उपयोग (वाणिज्यिक) के अनधिकृत रूप से जगह लेने से गलियों में भूतल पर वाणिज्यिक उपयोग और ऊपरी तल पर आवासीय उपयोग ने जगह ले ली है।

यहां तक कि ली कोरबुजियर द्वारा तैयार किए गए चंडीगढ़ के प्लान में पड़ोस की शॉपिंग गलियों (वी4एस) पर दुकान–सह–फ्लैटों के रूप में मिश्रित उपयोग का प्रावधान था क्योंकि कोरबुजियर संदर्भ के लिए प्लान को उत्तरदायी बनाना चाहता था और इसके लिए वह वी4एस के दक्षिण की ओर शॉपिंग ब्लॉक को बनाने की सीमा तक गया। मुम्बई, कोलकता, हैदराबाद इत्यादि जैसे अधिकांश शहरों के मास्टर प्लानों में निश्चित गलियों और जोनों के साथ मिश्रित भू–उपयोग उपलब्ध कराए गए हैं।

जोनिंग की उत्पत्ति

गालिऑन और ईजनरः सिटि प्लानिंग एंड डिजाइन के चौथे संस्करण, 1980 में गुफा से गाँव, प्राचीन शहरों, क्लासिक शहर, मध्ययुगीन नगर, नव–क्लासिक शहर, औद्योगिक क्रांति, नियोजन प्रक्रिया, विस्तृत योजना कार्यान्वयन के साधन के माध्यम से भविष्य की योजना और क्षेत्रीय अवधारणाओं के अनुसार नए क्षितिज इत्यादि से शहरी योजना के विकास का पता लगाया गया है।

वास्तव में वह समय प्रागैतिहासिक रहस्य में छिपा है जब विशिष्ट उपयोगों के लिए पहली बार भूमि आबंटित की गई होगी। भूमि पर खेती की विफलता से यह प्रदर्शित हुआ कि कुछ भूमि कृषि उपयोग के अनुकुल नहीं थी लेकिन दूसरों को यह जानकारी देने के कुछ तरीके थे, शायद यह निरंतर आवश्यक था। पुराने समय में भू–उपयोग की परिपाटी ने रोपण मौसम, कटाई मौसम, फसल चक्र का पहला वर्णन और कई बार उपयोग में लाने के बाद भूमि को खाली छोड़ने की अवधारणा को परिभाषित किया।

सभ्यता के विकास के साथ, शहरों के निर्माण और आबादी में वृद्धि होने के कारण कृषि उपयोग से जुड़ी भूमि का प्रयोग अन्य प्रयोजनों हेतु होने लगा। निश्चित बाजार वाले स्थान बहुमूल्य भू–उपयोग वाले स्थान बन गए, सार्वजनिक खुली जगह, हाट और साधारण स्थान नगर के महत्वपूर्ण केंद्र बन गए। विशिष्ट स्थानों को विस्फोटकों के भंडारण के लिए, पशुओं के बूचड़खाने के लिए और कुलीन वर्ग के आवासीय विकास के लिए निर्दिष्ट किया गया। शासकों को यह समझने में ज्यादा समय नहीं लगा कि भू–उपयोगों के बीच संबंध सर्वोपरि महत्व का है जैसे उनके महलों की ओर आने वाली हवा की तरफ बूचड़खाने होना उचित स्थान नहीं था। हमारे वर्तमान शहरों में हानिकारक उद्योगों का स्थान निर्धारित करने की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया।

प्राचीन शहरों में लोग स्वयं विनियमित करते थे कि उन्हें कहां रहना है। श्रमिकों को किले की दीवारों के बाहर के क्षेत्रों तक ही सीमित रखा जाता था और जब शासकों के हित की रक्षा के लिए उनकी आवश्यकता होती थी तब उन्हें भीतर बुलाया जाता था। आधुनिक शहर नियोजन की दिशा में पहले कदम का पता जिलों की स्थापना के तरीकों से लगाया जा सकता है जिसके अंतर्गत नागरिकों के अधिकारों को कानूनी तौर पर नियंत्रित किया गया।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

स्पेन के शासक फिलिप ने नए विश्व में समुदायों की स्थापना की प्रक्रिया की रूपरेखा (लॉ ऑफ इंडीज, 1573) में अपने अन्वेषकों को निदेश दिया कि गलियों को इस तरीके से बनाएं कि हवा का तेज बहाव न आएं और बूचड़खाने नगर की बाहरी सीमा पर स्थित हो ताकि नगर के निवासियों के लिए उसकी दुर्गंध नुकसानदायक साबित न हो। बोस्टन में, शहर के केंद्र से गन पाउडर के भण्डारण स्थान का पृथक्करण अमेरिका में जोनिंग का सर्वप्रथम रिकार्ड किया गया कार्य था। 1810 में नेपोलियन के कुछ न्यायिक निर्णय और 1845 के प्रूशियन कोड में भू–उपयोग विनियम निहित थे।

मिश्रित भू–उपयोग एक जवाब? (विशेष रूप से विकसित अर्थव्यवस्था के संबंध में)

तेजी से हो रहे शहरीकरण से भीड़भाड़ बढ रही है, विशेष रूप से शहरों के मध्य भागों में। इन क्षेत्रों में रहने के मानकों में सामान्य गिरावट के साथ ऑटोमोबाइल वहन करने की बढ़ती सामर्थ्य ने उपनगरों को जन्म दिया और अधिक से अधिक लोगों ने शहरों की बाहरी सीमा पर स्थित बड़े घरों में जाना शुरू कर दिया। इसके फलस्वरूप पिछले बीस वर्षों में बढ़ते उपनगरीकरण के समानांतर शहर के भीतरी भागों में गिरावट आई है। भू–उपयोग की एकरूपता, ऑटोमोबाइल पर अत्यधिक निर्भरता, सतत यातायात जाम और सामाजिक अलगाव आज की गंभीर समस्याएं हैं। इन समस्याओं पर ध्यान देने के लिए अनुसंधानों और शहरों के मध्य क्षेत्रों के समीप मिश्रित भू–उपयोग सृजन के लिए आर्थिक अनुदान देने में लाखों रूपये निवेश किए जा रहे हैं।

आज के शहरी और उपनगरीय विकास में, मिश्रित–भू–उपयोग योजनाओं को प्रायः आकर्षक और स्थायी निवास वातावरण के निर्माण और संरक्षण की दिशा में आवश्यकता के रूप में प्रोत्साहित किया जाता है। डिजाइनर और डवलपर ऐसी विकास योजनाओं के पीछे प्रेरणा का कारण किसी समुदाय की जनता की इच्छा को मानते हैं। शहरी क्षेत्रों में भवनों की ऊंचाई शीर्षाभिमुख (वर्टिकल) बढ़ती जा रही है जिसमें खुदरा, कार्यालय और आवासीय इकाईयों का घनत्व अधिकतम होता है। उपनगरीय क्षेत्रों में शॉपिंग केंद्रों और परम्परागत समीपवर्ती विकास के रूप में व्यापक और क्षैतिज (हॉरिजेन्टल) विकास पनप रहे हैं। शीर्षाभिमुख अथवा क्षैतिज योजना अपनाने की प्रवृत्ति भौगोलिक रूप से भी भिन्न होती है।

भू–उपयोग विकास निम्नलिखित तीन कारणों से महत्वपूर्ण होते जा रहे हैः

- और अधिक सार्वजनिक नीतियां उस दिशा की ओर डवलपर का ध्यान खींचती हैः डवलपर्स मौजूदा अवसंरचना और बढ़ते घनत्व का लाभ उठाते हुए शहर स्तर पर आर्थिक बढ़त प्राप्त कर सकते हैं।

- बाजार में इसकी मांग हैः ऐसे अधिकाधिक संकेत है कि जब लोग ऐसे मिश्रित–उपयोग विकास में रहते हैं तो वे जीवंतता और समुदाय की भावना महसूस करते हैं।

- मिश्रित–उपयोग विकास में रहने वाले लोगों के पास निश्चित परिवहन सुविधा होती हैः इससे उनका समय बचता है जो अपने निवास के पास ही काम करते हैं और जिनके निकट ही जनसुविधाएं/सुविधाएं होती हैं।

जब समकालीन नियोजक और डिजाइनर मिश्रित उपयोग की वकालत करते हैं तो वे प्रायः उपयोग के घाल–मेल को प्रोत्साहन नहीं दे पाते। समकालीन मिश्रित–उपयोग के समर्थक या तो नियोजित समुदाय को बढ़ावा देते है अथवा सुझाव देते है जिसे शहरी भू–संस्थान शहर के भीतरी क्षेत्रों में "बहु–उपयोग परियोजनाएं" (एक अथवा अधिक भवनों में कई उपयोग) कहते हैं। सीधे शब्दों में, इसे तालमेल का नाम दिया जाएगा – सभी उपयोगों को स्वतंत्र आधार पर और एक दूसरे के सहयोग से आसानी से कार्य करना आवश्यक है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तालिका 1. मिश्रित–उपयोग और एकल–उपयोग परियोजनाओं के बीच मुख्य विशेषताओं की तुलना

विकास प्रक्रियाओं के चरण	मिश्रित–उपयोग विकास	एकल–उपयोग विकास
परियोजना की शुरूआत	अनुभवी एवं विविध परियोजना विकास टीम सार्वजनिक क्षेत्र की एजेंसियों की भागीदारी महत्वपूर्ण वित्तीय और गैर–वित्तीय विकास दोनों उद्देश्यों को अच्छी तरह परिभाषित किया जाना चाहिए बहु–बाजार/विकास संभावना का विश्लेषण करना और समग्र बाजार तालमेल का मूल्यांकन करना	एकल अनुभवी वास्तुकार/नगर नियोजक /परियोजना प्रबंधक परियोजना के टीम लीडर के रूप में कार्य करता है सार्वजनिक क्षेत्र की एजेंसियों की अपेक्षाकृत मामूली/सामान्य भागीदारी सामान्य एवं स्पष्ट विकास उद्देश्य केवल किसी विशिष्ट बाजार क्षमता का विश्लेषण करना (इसमें तालमेल पर कम ध्यान दिया जाता है क्योंकि यह एकल–उपयोग के लिए होता है)।
व्यवहार्यता अध्ययन और वित्त पोषण	वैकल्पिक विकास कार्यक्रमों और रणनीतियों को परिभाषित करनें की अनिवार्यता विकास कार्यक्रमों को परिभाषित करने और उनके उज्जवल पक्ष को समक्ष रखने के लिए जटिल व्यवहार्यता विश्लेषण बड़ी बहु–परत वित्तीय प्रतिबद्धता और वित्तीय व्यवस्था की संरचना को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता	स्वतंत्र विकास कार्यक्रम और रणनीति सरल प्रोफार्मा विश्लेषण और आर्थिक मॉडलिंग परियोजना स्वामी और वित्तीय संस्थान के बीच वित्त पोषण का एकल स्रोत संभव होता है और वित्तीय व्यवस्था सरल होती है
योजना और डिजाइन	जटिल योजना और डिजाइन के मुद्दे जिनमें शहरी सोच शामिल हो डिजाइन घटकों और परियोजना एवं आसपास के वातावरण के बीच अंतर्संबंध का निर्माण करना विशेषज्ञों की महत्वपूर्ण भागीदारी होती है	परम्परागत वास्तुकला और संरचनात्मक डिजाइन प्रक्रिया समग्र परियोजना नियोजन और डिजाइन में शहरी सोच बेहद सीमित भूमिका निभाती है डिजाइन की सरलता के कारण विशेषज्ञों की भागीदारी अत्यंत कम होती है

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

निर्माण	विभिन्न खण्डों/चरणों में कार्यरत बहु–ठेकेदार; इंटरफेसिंग संकटपूर्ण होती है अधिक विशेषज्ञों/डिजाइनरों के साथ बातचीत	आमतौर पर एक ही ठेकेदार कार्य करता है जिसके पास स्थल की योजना और समन्वय का पूर्ण नियंत्रण होता है कम वास्तुकार/डिजाइनर विशेषज्ञों की आवश्यकता
विपणन (मार्केटिंग) और प्रचालन प्रबंधन	अनेक उपयोगों के लिए विपणन रणनीतियों पर अधिक विविध और नवीन दृष्टिकोण आम जनता में रूचि बनाए रखने के लिए लंबी अवधि का प्रोत्साहन जरूरी होता है बहु–उपयोग के लिए केंद्रीकृत नियंत्रण प्रबंधन प्रणालियां	विपणन दृष्टिकोण जो केवल विशिष्ट उपयोग को लक्षित करते हों परियोजना के पूरा होने से पहले उसके प्रोत्साहन पर पूरा ध्यान देना और उसके बाद अपेक्षाकृत कम ध्यान देना संपत्ति प्रबंधन एजेंसी का एकल उत्तरदायित्व

मिश्रित भू–उपयोग – वास्तविक अवरोध

विकसित देशों के व्यवस्थित एकल भू–उपयोग पैटर्न, जिसे अधिकांश मंडल मॉडलों ने विकसित किया, के विपरीत विकासशील देशों में सभी नगर पालिकाओं में मिश्रित भू–उपयोग व्यवहारिक रूप में एक वास्तविकता है। भारत में, वे शहर जनता के ध्यान को आकर्षित कर रहे हैं जहां अधिकांश क्षेत्रों में सभी प्रकार की गतिविधियां होते दिखाई देती हैं। यह तथ्य कि प्रायः भूमि का मिश्रित उद्देश्यों के लिए उपयोग विकसित देशों में योजना, कराधान और सरकारी नीतियों को कार्यान्वित करना मुश्किल बना देता है। इसके लिए पूरी तरह से अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

मिश्रित भू–उपयोग, जिसमें एक ही स्थान पर समन्वित तरीके से कार्यालयों, रिटेल, होटल अथवा आवासीय विकास सहित विभिन्न उपयोगों का मिश्रण किया जाता है, इन्हें किसी भी समाधान के महत्वपूर्ण भाग के रूप में देखा जाता है। वास्तव में, किसी मंडल अथवा आस–पड़ोस के मिश्रित उपयोग क्षेत्र के रूप में पहचान करते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। इसमें बड़ा जोखिम होता है कि अधिकांश लाभकारी भू–उपयोग का विधिवत विकास नहीं होता और मिश्रित उपयोग, जैसा कि सोचा गया है, पूरी तरह खो जाता है।

वैध रूप से अथवा इसके बिना, हमने आसपास में बहुत सफल मिश्रित भू–उपयोग अड़ोस–पड़ोस का निर्माण करने का प्रबंध कर लिया है। वास्तव में, हमारे सुव्यवस्थित ढंग से विकसित शहरी क्षेत्र आदर्श मिश्रित भू–उपयोग स्थान होने के बहुत निकट है जिसे पश्चिमी देश अब बनाने का प्रयास कर रहे हैं। हमें इसका लाभ उठाने का प्रयास करने की आवश्यकता है, न कि इसे नष्ट करने की। उस समय बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है विशेष रूप से तब, जब शहरी स्थानों को इतने खराब ढंग से विनियमित किया जाता है जैसा कि भारतीय शहरों में विनियमित किया गया है। जब किसी जोन अथवा आस–पास के क्षेत्र को मिश्रित भू–उपयोग के रूप में चिन्हित किया जाता है तो इसमें इस बात का बहुत जोखिम होता है कि अधिकांश लाभकारी भूमि का उपयोग विधिविरूद्ध विकास के लिए होगा और मिश्रित उपयोग, जैसा कि सोचा गया है, पूरी तरह खो जाएगा। इससे बचने के लिए कार्यालयों को इस विकास की अनुमति देने के लिए विशिष्ट मिश्रित उपयोग मंडलन अध्यादेश अपनाना चाहिए। प्रत्येक जोन के अंदर

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भूमि उपयोग की विभिन्न किस्मों का प्रतिशत वितरण विनिर्दिष्ट करने के लिए अध्यादेश में उपयुक्त खण्ड (क्लॉज) स्वीकार करने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया में नागरिकों की सहभागिता भी बहुत सहायक होगी।

मिश्रित भू–उपयोग विकास के दो विशिष्ट प्रकार भीतरी क्षेत्र का विकास और पारगमन उन्मुख विकास (टीओडी) हैं। ये स्थान–विधिक मिश्रित उपयोग विकास है।

- भीतरी क्षेत्र (इनफिल) विकास : भीतरी शहरी क्षेत्रों का मिश्रित उपयोग विकास के रूप में पुनरूद्धार करने को कहा जाता है। उदाहरण के लिए, तेजी से विकसित हो रहे बेंगलुरू तथा पुणे शहरों में सशस्त्र सेना की पर्याप्त भूमि है तथा उसी प्रकार मुम्बई में मुम्बई पोर्ट ट्रस्ट की भी काफी भूमि है। इसके अलावा, इन शहरों में पुराने व्यवसाय तथा कारखाने भी पुनर्विकास के लिए तैयार हैं और चुनिंदा अचल संपत्ति बने हुए हैं।

- पारगमन (ट्रांजिट)–उन्मुख विकास (टीओडी) : मिश्रित उपयोग के आसपास के क्षेत्रों को बताता है जिन्हें पारगमन अथवा सार्वजनिक परिवहन स्टॉप के चारों ओर बनाया जाता है। ये प्रायः पैदल चलने योग्य पैमाने पर उच्च घनत्व वाले होते हैं और मिश्रित उपयोग वाले होते हैं। यह देखना बहुत उत्साहवर्धक है कि हमारे प्रशासक सार्वजनिक परिवहन को बढ़ती यातायात समस्या के समाधान के रूप में देखते हैं। तथापि तीव्र बस परिवहन या मेट्रो जैसी सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों को पूरी तरह वास्तविक बनाने के लिए भू–उपयोग योजना के महत्व को समझना महत्वपूर्ण है। इसके लिए स्टेशन क्षेत्रों को पारगमन–उन्मुख विकास के रूप में विकसित करना अति आवश्यक है। अच्छी तरह से डिजाइन किए गए टीओडी का अर्थ है कि कोई भी भू–उपयोग स्थल 10 मिनट की पैदल दूरी अथवा आधा मील से अधिक दूर नहीं होना चाहिए। 10,000 करोड़ रूपये की दिल्ली मेट्रो परियोजना में अपेक्षा से 10 लाख कम लोग सफर करते हैं, इसका मुख्य कारण स्टेशन क्षेत्र योजना की कमी है।

अच्छी शहरी योजना के लिए सुनियोजित मिश्रित भू–उपयोग विकास का होना महत्वपूर्ण है। शहरी जीवन शैली में परिवर्तन को देखते हुए ऐसे गंतव्य स्थलों की आवश्यकता है जिसमें "रहने और काम करने, खरीदारी और अवकाश" की पेशकश की गई हो। मिश्रित भू–उपयोग के कई लाभ हैं विशेष रूप से शहर के मध्य में। गतिविधियों की श्रेणी दिन और रात में अलग–अलग समय पर लोगों को आकर्षित करने में मदद कर सकती है जो क्षेत्र को सजीव बने रहने में सहायक होता है। यह बदले में, ग्राहकों को आकर्षित करता है जो क्षेत्र को आर्थिक और सामाजिक दोनों रूप में कामकाज करने में कामयाब बनाने में सहायक होता है।

इस संकल्पना की उत्पत्ति वास्तविक बहु–उपयोग विकास का सृजन करना है जिसमें खुदरा, मनोरंजन, आतिथ्य तथा कार्यालयों के लिए स्थान सम्मिलित किए गए हों, इस प्रकार सहक्रियाओं में सहायता भी देती हैं। ये विकास पर्याप्त भूमि की उपलब्धता पर निर्भर करते हैं जो शहरों में दुर्लभ हैं। यह एकीकृत टाउनशिप विकसित करने में सहायक होता है। निवासियों को स्कूल, अस्पताल, क्लब, पार्क, शॉपिंग–कॉम्पलेक्स और कार्यालय स्थल जैसी सुविधाएं टाउनशिप के अंदर ही प्रदान की जाती हैं।

भारत में मेट्रो शहरों से लेकर श्रेणी–2 एवं श्रेणी–3 शहरों तक मिश्रित भू–उपयोग विकास की उभरती प्रवृत्ति तेजी पकड़ रही है। डवलपर्स के दृष्टिकोण से, यह निवेश पर अधिकतम लाभ का मॉडल सुनिश्चित करता है साथ ही पर्याप्त मैदान और आसपास खेलने की सुविधा प्रदान करता है। इसके अलावा, यह भीड़भाड़ से दूर एक आदर्श शहर और नियोजित विकास को सुगम बनाता है जो शहर के भीतरी भाग में अन्यथा संभव नहीं है। यह सभी प्रकार से मूल्य–वर्धित और आत्मनिर्भरता को सुनिश्चित करता है और विभिन्न आवश्यकताओं के लिए परिसर के अंदर ही एकल खिड़की समाधान प्रदान करता है। आवासीय, वाणिज्यिक, मनोरंजन और सेवाओं के विकास की सुविधा युक्त मिश्रित–उपयोग विकास का विशिष्ट उदाहरण होगा।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पिछले कुछ वर्षों में मिश्रित–उपयोग विकास ने स्वयं को एक विशिष्ट उत्पाद किस्म और प्रवृत्ति के रूप में स्थापित किया है। इससे अचल संपत्ति परिदृश्य में आमूल–चूल परिवर्तन आ रहा है। आवासीय, खुदरा, कार्यालय और मनोरंजन क्षेत्रों के घटकों को मिलाकर, मिश्रित–उपयोग परियोजनाएं शहरी और उपनगरीय बाजारों और वैश्विक पैमाने दोनों पर सफल हो रही हैं। विकास के लिए भूमि की कमी ने मजबूर कर दिया है कि भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपलब्ध भूमि का आधिक्य प्रयोग किया जाए।

हाल के शोध के अनुसार, मिश्रित–उपयोग परियोजनाएं विकास की विशिष्ट किस्म के रूप में चुनी गईं जो व्यस्त पेशेवरों के लिए अधिक सुविधा प्रदान करती हैं। ऐसी परियोजनाएं पैदल पहुंचने योग्य खुदरा, रेस्टोरेंट, पार्क, सुपर मार्केट और कार्यालय उपलब्ध कराकर मात्र बसेरा करने वाले और उनकी युवा व्यस्क संतानों दोनों को आकर्षित करती हैं।

मिश्रित–उपयोग विकास अचल संपत्ति में नवीनतम प्रवृत्ति है जिसमें आवास, वाणिज्यिक और खुदरा स्थान उपलब्ध कराकर पूरी पैकेजिंग का अभिप्राय बनाया जाता है। यह मॉल की सफलता से उभरा है जो ग्राहकों को विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं। मिश्रित उपयोग विकास के अपने कई लाभ हैं। उभरते और निरंतर विकसित हो रहे अचल संपत्ति सेक्टर ने उनके विकास को सुगम बना दिया है। इसमें विशेषज्ञता की विफलता अथवा कमी के बजाए इसमें निहित सभी तत्वों की आवश्यकता पर विचार किया जाता है।

भारतीय शहरों से चुने उदाहरण

दिल्ली के 2021 के मास्टर प्लान में पहली बार मौजूदा शहरी क्षेत्र और शहर बनाने लायक क्षेत्रों में मिश्रित–उपयोग क्षेत्रों की पहचान, मिश्रित–उपयोग परिसरों के पंजीकरण, प्रभारों के भुगतान तथा अनुमत और गैर–अनुमत क्रियाकलपों के साथ–साथ मिश्रित भू–उपयोग के निर्धारित विनियमों को शामिल किया गया है। इससे पहले दिल्ली के 2001 के मास्टर प्लान में उपयोग जोन के आदेश के संबंध में शहर के भीतरी भाग और इसके विस्तार तथा 2600 हेक्टेयर के करोलबाग के विशेष क्षेत्र को निर्दिष्ट किया गया था। विकास कोड में अनुमेय उपयोग परिसर/उपयोग क्रियाकलापों के साथ एक से अधिक उपयोग के मिश्रित उपयोग जोन निर्दिष्ट किए गए। एमएमआर योजना आवासीय पक्ति घर, अर्द्धअसम्बद्ध और असम्बद्ध घर जैसे आवासीय उपयोग परिसरों में खुदरा, वाणिज्यिक और रेस्टोरेंट की अनुमति दी गई है।

लखनऊ मास्टर प्लान में, मौजूदा शहरीकृत सीमाओं के अंदर पुराने विकसित क्षेत्र और वाणिज्यिक केन्द्रों में मिश्रित भू–उपयोग को अनुमति दी गई है। तथापि, शहरी विस्तारों में मिश्रित भू–उपयोग के प्रस्ताव नहीं हैं।

चैन्नई में 1975 से मिश्रित भू–उपयोग की संकल्पना का प्रचलन है और यह प्रथम मास्टर प्लान का हिस्सा है। भारतीय संदर्भ में मिश्रित भू–उपयोग को महत्व मिल रहा है विशेष रूप से बड़े अनौपचारिक समूह के अस्तित्व के कारण। प्रथम मास्टर प्लान के अनुभव के आधार पर इस प्लान में उपयोगों की श्रेणी उपलब्ध कराने के अलावा जिनकी विभिन्न जोनों में अनुमति दी जा सकती है, एक नए जोन अर्थात शहर बनाने लायक जोन को विनिर्दिष्ट किया गया है। यह नौ अन्य विनिर्दिष्ट जोनों अर्थात प्राइमरी आवासीय, मिश्रित आवासीय, वाणिज्यिक, संस्थागत, औद्योगिक, विशेष एवं खतरनाक औद्योगिक, खुले स्थान एवं मनोरंजन संबंधी, गैर–शहरी और कृषि उपयोग जोनों के अतिरिक्त है।

बेंगलूरू मास्टर प्लान, 2015 विजन दस्तावेज भूमि के मिश्रित उपयोग की वकालत करता है और इसलिए इस नीति में पहचाने गए क्षेत्रों के स्वरूप के आधार पर विशिष्ट दृष्टिकोण का अनुसरण किया गया है जो आस–पड़ोस के सामाजिक–आर्थिक विषयों और आस–पड़ोस के अंदर वाणिज्यिक गतिविधियां बनाए रखने की उनकी वरीयता के अधीन होती है। शहर के विनिर्दिष्ट भागों में भूमि के मिश्रित उपयोग को बढ़ावा देने में मास्टर प्लान समुदाय की

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जरूरतों को पूरा करने, पर्यावरण संबंधी प्रभावों को कम करने और सुरक्षित एवं सुविधाजनक परिवहन और पार्किंग उपलब्ध कराने के लिए पर्याप्त प्रावधान करता है।

निष्कर्ष

एक शक्तिशाली सामुदायिक विकास साधन के रूप में मिश्रित–उपयोग परियोजनाओं का निरंतर आविर्भाव अंततः सभी शामिल पक्षों के लिए इन परियोजनाओं के बारे में जानने और इनके प्रति अपने दृष्टिकोण को परिष्कृत करने की आवश्यकता होगी। मिश्रित–उपयोग परियोजना के सफल कार्यान्वयन के लिए सावधानी से जुटाए गए विकास दल की आवश्यकता होती है जिसे मजबूत प्रबंधन, विकास और डिजाइन का अनुभव हो। इस प्रक्रिया में स्थानीय सरकार को एक भागीदार के रूप में शामिल करना सर्वाधिक उपयोगी होता है क्योंकि वे स्थानीय शहरीकरण की योजनाओं को विकसित करने, आवश्यक बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराने और क्षेत्र में बाजार की स्थितियों के बारे में जनता की धारणा में फेरबदल करने में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। वित्तपोषण मिश्रित–उपयोग परियोजनाएं और अधिक जटिल हैं। इसे इस तथ्य द्वारा बढ़ावा मिलता है कि अधिक जोखिम की धारणा के कारण वित्तपोषण (बैंक–ऋण) के परम्परागत साधन की अधिक लागत होगी। जैसा कि, विकास दल को मौलिकरूप से परियोजना संरचना की जरूरत होती है ताकि निवेशकों की श्रेणी को निवेश के अवसर प्रदान किए जा सकें। यह दिखाने की जिम्मेदारी दल पर है कि परियोजना अपने अल्पकालिक बाजार निष्पादन से परे समुदाय में अहमियत पा रही है और समय पर बाजार में अपने महत्व को प्रमाणित करेगी।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि मिश्रित–उपयोग सामान्यतया अन्य तकनीकी योजना पहलू होने के बजाए एक और विकास संस्कृति है। अन्ततः यह मिश्रित–उपयोग आउटपुट (उपयोग के मिश्रण वाले आधारित विकास) के बजाए मिश्रित–उपयोग निष्कर्ष (जीवन की गतिविधियों के मिश्रण वाला बड़े पैमाने पर संरचित पर्यावरण) है जो मिश्रित–उपयोग विकास परियोजना की सफलता को सहारा प्रदान करता है।

केन्द्रीय शहरी विकास मंत्रालय दिल्ली के मास्टर प्लान (2001) को आशोधित करने की हद तक जा चुका है और दिनांक 11.3.2003 की राजपत्र अधिसूचना द्वारा मिश्रित भू–उपयोग के मानदंड बना रहा है। इसमें निम्नलिखित को अनुमति दी गई हैः–

उन नर्सिंग होम, गेस्ट हाउस और बैंकों को आवासीय प्लॉट में अनुमति दी गई है जो आकार में 209 वर्ग मीटर (250 वर्ग गज) से अधिक हों और जिनके सामने न्यूनतम 18 मीटर चौड़ी सड़क हो (पुनर्वास कालोनियों में 13.5 मीटर चौड़ी और पुराने शहर/विशेष क्षेत्रों में 9 मीटर चौड़ी सड़क हो)।

इसके अलावा 2001 के मास्टर प्लान में निम्नलिखित विकल्प हो सकते हैंः–

- आवासीय परिसरों में भूतल कवरेज के अधिकतम 25 प्रतिशत तक अथवा केवल भूतल पर फर्श क्षेत्रफल के 50 वर्ग मीटर तक खुदरा दुकानों (खतरनाक, क्षतिकारक को छोड़कर) जो भी कम हो, की अनुमति दी गई।
- किसी भी तल पर फर्श क्षेत्रफल अनुपात के 25 प्रतिशत तक अथवा 100 वर्ग मीटर तक, जो भी कम हो, व्यासायिक कार्यालय।
- आवासीय प्लाटों में फर्श क्षेत्रफल के 25 प्रतिशत अथवा 30 वर्ग मीटर तक, जो भी कम हो, प्रदूषण न फैलाने वाले घरेलू उद्योगों को अनुमति दी गई।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2012–2013 के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य

क्रम संख्या	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (टेलेक्स, फैक्स, ई–मेल आदि सहित	1. 'क' क्षेत्र (उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह) से 'क' क्षेत्र को 100 प्रतिशत 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100 प्रतिशत 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65 प्रतिशत 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 'क' से 'क' 100 प्रतिशत एवं 'क' से 'ख' 100 प्रतिशत	1. 'ख' क्षेत्र (गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़) से 'क' क्षेत्र को 90 प्रतिशत 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90 प्रतिशत 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55 प्रतिशत 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 'ख' से 'क' 100 प्रतिशत एवं 'ख' से 'ख' 100 प्रतिशत	1. 'ग' क्षेत्र ('क' एवं 'ख' क्षेत्रों में आने वाले राज्यों एवं द्वीप समूह को छोड़कर अन्य सभी राज्य व केंद्रशासित प्रदेश) से 'क' क्षेत्र को 55 प्रतिशत 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55 प्रतिशत 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55 प्रतिशत 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 85 प्रतिशत
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
3.	हिंदी में टिप्पण	75 प्रतिशत	50 प्रतिशत	30 प्रतिशत
4.	हिंदी में डिक्टेशन	65 प्रतिशत	55 प्रतिशत	30 प्रतिशत
5.	हिंदी में प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
राजभाषा संबंधी बैठकें/हिन्दी कार्यशालाएं				
6.	(क) हिंदी कार्यशाला	वर्ष में 4 कार्यशालाएं (प्रति तिमाही एक कार्यशाला)		
	(ख) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

राजभाषा नियम, 1976 – प्रमुख नियम

नियम संख्या	नियम
5	हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाएं।
6	धारा 3(3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेज द्विभाषी रूप में तैयार और जारी किए जाएं।
7	हिंदी में हस्ताक्षरित या हिंदी में प्राप्त आवेदन, अपील या अभ्यावेदन का उत्तर हिंदी में दिया जाए ।
8(4)	अधिसूचित कार्यालयों में हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों को हिंदी में कार्य संबंधी आदेश जारी करना।
9	हिंदी में प्रवीणता प्राप्त
10(1)	हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त
10(4)	जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत से अधिक कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है, उनके नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे।
11	सभी मैनुअल व अन्य साहित्य हिंदी और अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित किया जाएगा। सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष आदि हिंदी और अंग्रेजी में लिखी/प्रदर्शित होंगी।
12	**केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का उत्तरदायित्व है कि वह** राजभाषा अधिनियम और नियमों तथा इनके तहत जारी आदेशों तथा निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित करे तथा इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त तथा प्रभावकारी जाँच बिंदु बनाए।

जीवन–सूत्र

लहरों की एक किताब है जिंदगी, सांसों और ख्यालों का हिसाब है जिंदगी,
कुछ जरूरतें पूरी, कुछ ख्वाहिशें अधूरी, बस इन्हीं सवालों का जवाब है जिंदगी।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) का अनुपालन

सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों और अधीनस्थ कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी होने वाले सभी कागजातों को द्विभाषी रूप में यानी हिन्दी और अंग्रेजी में साथ–साथ जारी करें। नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन में राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) का पूर्णतया पालन किया जा रहा है। धारा 3 (3) के अंतर्गत निम्नलिखित कागजात आते हैं:–

1.	सामान्य आदेश	General Orders
2.	संकल्प	Resolution
3.	नियम	Rule
4.	अधिसूचनाएं	Notifications
5.	प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट	Administrative and other Reports
6.	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Communiques
7.	संविदाएं	Contracts
8.	करार	Agreements
9.	अनुज्ञप्तियां	Licences
10.	अनुज्ञा पत्र	Permits
11.	सूचनाएँ	Information
12.	निविदा प्रपत्र	Tender Form
13.	निविदा सूचना	Tender Notice
14.	संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाले कागजात	Papers to be placed before both the Houses of Parliament

जीवन–सूत्र

हम स्वर्ग के उद्यान में नाचते हुए मोर के स्वप्न तो देखते हैं, परन्तु प्रत्येक सुबह अपने घर की खिड़की से आती चिड़ियों की चीं–चीं की मधुर आवाज को अनसुना कर देते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सरकारी कामकाज (टिप्पण/प्रारूपण) मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निदेशानुसार केंद्रीय सरकार के सभी कार्यालयों में सरकारी कामकाज (टिप्पण/प्रारूपण) मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए एक प्रोत्साहन योजना चलाई जा रही है। इस योजना के अंतर्गत उन अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जाता है जो अपने सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिन्दी में टिप्पण/प्रारूपण का कार्य करते हैं। इस संगठन में दिनांक 1.4.2011 से 31.03.2012 की अवधि के दौरान सरकारी कामकाज (टिप्पण/प्रारूपण) मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना चलाई गई। उक्त प्रतियोगिता में भाग लेने वाले 10 अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया । पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची नीचे दी गयी हैः—

क्रम संख्या	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	स्थान	पुरस्कार राशि (रूपये में)
1.	श्री रणसिंह सैनी, प्र.श्रे.लि.	प्रथम पुरस्कार	800
2.	श्रीमती सीमा, प्र.श्रे.लि.	प्रथम पुरस्कार	800
3.	श्री विमल कुमार, प्र.श्रे.लि.	द्वितीय पुरस्कार	400
4.	श्रीमती किरन बाला, प्र.श्रे.लि.	द्वितीय पुरस्कार	400
5.	श्रीमती आशा चन्द्रा, सहायक	द्वितीय पुरस्कार	400
6.	श्री आर. श्रीनिवास, न.ग्रा.नि.	तृतीय पुरस्कार	300
7.	श्री प्राण कुमार, अ.श्रे.लि.	तृतीय पुरस्कार	300
8.	श्री राम प्रवेश मिश्रा, अ.श्रे.लि.	तृतीय पुरस्कार	300
9.	श्री आर.पी. सिंह, प्रलेखन सहा.	तृतीय पुरस्कार	300
10.	श्री राम प्रकाश, कार्यालय अधीक्षक	तृतीय पुरस्कार	300
	(चार हजार तीन सौ रूपये मात्र)	**कुल राशि**	**4,300/—रू**

जीवन—सूत्र

चापलूसी का जहरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नहीं पहुंचा सकता है, जब तक कि आपके कान उसे अमृत समझकर पी न जाएं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

यूनिकोड की आवश्यकता

ललित मेहता

आधुनिक युग कंप्यूटर युग है और इसके बिना जीने की कल्पना नई पीढ़ी सोच भी नहीं सकती तथा इसके बिना किसी कार्यालय की कल्पना करना भी अनुचित लगता है । आधुनिक प्रौद्योगिकी की बात करें तो आज के समय में सरकारी विभाग हो या कोई गैर सरकारी वित्तीय सेवा केंद्र, बैंकिंग उद्योग हो या कोई अन्य बहुराष्ट्रीय कंपनी, मोबाइल कंपनी हो या यात्रा प्रबंधन से जुड़ी निजी एजेंसी, सभी को कंप्यूटर की आवश्यकता है । कंप्यूटर का उपयोग बड़े से बड़े शोध कार्य से लेकर छोटे से छोटे प्रस्तुतीकरण के लिए किया जा रहा है तथा इसकी आज के युग में उपयोग की सीमा अनंत है ।

प्रारंभ में कंप्यूटर पर सारा कार्य अंग्रेजी में ही होता था लेकिन विभिन्न साफ्टवेयर कंपनियों के निरंतर प्रयास से कंप्यूटर के साथ संचार किसी भी भाषा में किया जाना संभव हो पाया तथा विभिन्न हिंदी फांट्स का निर्माण किया गया । धीरे–धीरे हिंदी का प्रयोग कंप्यूटर पर बढ़ने लगा मगर डाटा को एक कंप्यूटर से दूसरें कंप्यूटर में ई–मेल के माध्यम से या अन्य किसी माध्यम से भेजने पर हिंदी फांट्स का दूसरें कंप्यूटर पर पहले से होना अनिवार्य होने जैसी समस्याएं भी बरकरार रही जिसके फलस्वरूप विश्व के कंप्यूटरों के साथ हिंदी फांट्स की अंग्रेजी के टाईम्स न्यू रोमन फांट्स की तरह एकरूपता नहीं लाई जा सकी। इस समस्या से निपटने में 'यूनिकोड' के इस्तेमाल से सफलता मिली है । यह एक ऐसी मानक कोडिंग प्रणाली है, जिसका उपयोग माइक्रोसॉफ्ट, आइबीएम, लिनक्स ओरेकल जैसी वैश्विक कंपनियों द्वारा किया जा रहा है । फांट्समुक्त, प्लेटफॉर्म मुक्त और ब्राउजर मुक्त इस प्रणाली को विंडोज़ 2000 या उसके ऊपर की सभी परिचालन प्रणालियां (ऑपरेटिंग सिस्टम) सपोर्ट करती हैं । जहॉं तक माइक्रोसॉफ्ट के पैकेजों की बात है, तो यह विंडोज एक्सपी और एमएस ऑफिस 97 में पूरी शुद्धता से काम करता है ।

16 बिट (2 बाइट) यूनिकोड – यूनिकोड मानक सार्विक करैक्टर इनकोडिंग मानक है जिसका प्रयोग कंप्यूटर प्रोसेसिंग के लिए टेक्स्ट के निरूपण (representation) के लिए किया जाता है। यूनिकोड मानक में विश्व की लेखनीबद्ध भाषाओं के लिए सब करैक्टरों के इनकोड करने की क्षमता है। यूनिकोड मानक करैक्टर के बारे में सूचना और उनका उपयोग बताते हैं । कंप्यूटर उपयोक्ताओं के लिए जो बहुभाषी टेक्स्ट पर काम करते है, व्यापारियों, भाषाविदों, अनुसंधानकर्ताओं, वैज्ञानिकों, गणितज्ञों और तकनीशियिनों के लिए यूनिकोड मानक बहुत लाभप्रद है । यूनिकोड 16–बिट इनकोडिंग का प्रयोग करता है जो 65000 करैक्टरों से भी ज्यादा (65536) के लिए कोड–प्वाइंट उपलब्ध कराता है । यूनिकोड स्टैंडर्ड प्रत्येक करैक्टर को एक विलक्षण संख्यात्मक मान और नाम देते है । यूनिकोड को व्यापक रूप से विश्वव्यापी सूचना आदान–प्रदान के मानक के रूप में स्वीकार किया जा रहा है क्योंकि बड़ी आई टी कंपनियों ने इसके लिए अपने समर्थन की घोषणा की है। सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, यूनिकोड कैंसोरटियम का पूर्ण–सदस्य है, जिसे वोट देने का भी अधिकार है ।

युनिकोड के प्रयोग से लाभ

1. एकरूपता
2. कार्यालय के सभी कार्य कंप्यूटर पर हिंदी में आसानी से होते हैं जैसे – वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई–मेल, वैबसाइट निर्माण आदि ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

3. हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान–प्रदान कर सकते हैं ।

4. हिंदी की वर्ड पर गूगल या किसी अन्य सर्च इंजन में सर्च कर सकते हैं ।

कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के लिए यूनिकोड को अपने कंप्यूटर पर आप आसानी से डाऊनलोड कर सकते हैं । अगर आपकी परिचालन प्रणाली (ऑपरेटिंग सिस्टम) विंडोज एक्सपी है तो आप नीचे बताए कुछ कदमों द्वारा मिनटों में यह सुविधा जुटा सकते हैं:

1. कंप्यूटर में स्टार्ट पर क्लिक करें तत्पश्चात सैटिंग पर क्लिक करें तत्पश्चात कंट्रोल पेनल को क्लिक करें ।

2. इसके बाद रिजनल एण्ड लेंगुवेज आप्शन को डबल क्लिक करें ।

3. ऊपर बताए अनुसार क्लिक करने पर निम्नलिखित विंडो दिखाई देगी । इसमें लेंगुवेजिज को क्लिक करें ।

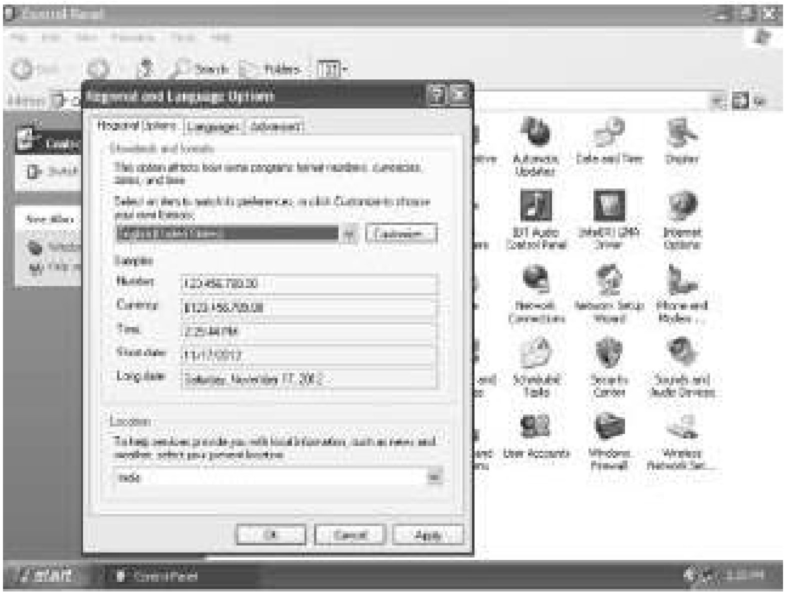

4. उक्त विंडो में लेंगुवेजिज पर क्लिक करने पर इसमें सपलीमेंटल लेंगुवेज सपोर्ट के अंतर्गत दिए गए दो विकल्पों में से ऊपर वाले विकल्प को टिक करें । टिक करते ही एक संदेश प्राप्त होगा कि आपने अरबी आदि भाषाओं को इंस्टाल करना चुना है, जिसमें 10 एमबी या ज्यादा स्पेस लगेगा । इस संदेश को ओके करते ही यह चला जाएगा । इसके बाद अप्लाई पर क्लिक करें । इस स्टेज पर कंप्यूटर विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम की सीडी इन्सर्ट करने का संदेश देगा जिसे इन्सर्ट करने के बाद सिस्टम उसमें से जरूरी फाइलें कॉपी कर लेगा और कंप्यूटर सिस्टम को रि–स्टार्ट करने का संदेश देगा ।

सिस्टम के दुबारा चालू होने पर माइक्रोसॉफ्ट की वेबसाइट http://bhashaindia.com पर जाए डाउनलोडस में हिंदी डाउनलोड पर क्लिक करें । एक जिप फाइल डाउनलोड हो जाएगी जिसे एक फोल्डर में अनजिप करके हिंदी इडिंका इंपुट 2 सैटअप पर डबल क्लिक करें या राईट क्लिक करके रन करें इसके बाद कंप्यूटर एक संदेश देगा की हिंदी इडिंका इंपुट 2 कुशलतापूर्वक इंस्टाल हो गया है ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तत्पश्चात् ऊपर बताई विधि (start>setting>control panel>regional and languages>language) से उक्त स्टेज तक दुबारा आएँ । इस बार उक्त विंडो में डिटेल्स पर क्लिक करें । निम्ननिखित विंडो आने पर पहले Add पर और फिर ऊपर बने ड्रॉप–डाउन मेनू पर क्लिक करें:

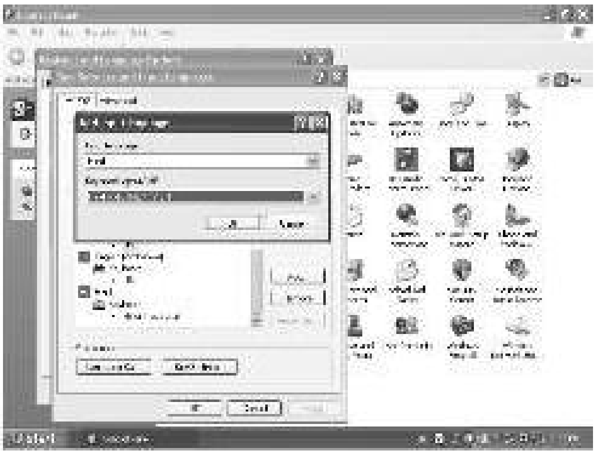

ऊपर बताए अनुसार ड्रॉप डाउन मेनू को क्लिक करने पर भाषाओं की सूची दिखाई देगी । इसमें अपनी पसंद के अनुसार भाषा Add की जा सकती है । मान लीजिए हम हिंदी Add करना चाहते हैं तो, हिंदी पर क्लिक करें।

Input language में हिंदी लिखा होगा । साथ ही, इससे नीचे के ड्रॉप–डाउन मेनू में विभिन्न की–बोर्डों के विकल्प मौजूद रहते हैं । इसमें से Hindi Indic IME का चयन कर लेना चाहिए । इसके बाद ओके पर क्लिक करें । यह विंडो बंद हो जाएगी।

उक्त विंडो में text services and input languages के अंतर्गत हिंदी भाषा और Hindi Indic IME की–बोर्ड दिखाई देना यह दर्शाता है कि अब संबंधित सिस्टम पर हिंदी में काम किया जा सकता है । यहाँ एप्लाई पर क्लिक कर दें । कंप्यूटर एक बार फिर से रि–बूट हो सकता है । इसी विधि से अन्य भाषाएँ और उनके की–बोर्ड लोड किए जा सकते हैं, पर जितनी ज्यादा भाषाएँ होंगी, उतना ही एएलटी+शिफ्ट का प्रयोग करना पड़ेगा । मान लें कि कोई यूज़र अपने सिस्टम पर हिंदी और तमिल Add करता है तो, कंप्यूटर खोलने पर डिफॉल्ट सेटिंग के रूप में अंग्रेजी सामने आएगी, किंतु एएलटी+शिफ्ट दबाते ही भाषा बदलकर हिंदी हो जाएगी । दुबारा एएलटी+शिफ्ट दबाने पर भाषा तमिल हो जाएगी । पुनः एएलटी+शिफ्ट दबाने पर अंग्रेजी आ जाएगी । इस प्रकार एएलटी+शिफ्ट के माध्यम से जब चाहें तब भाषा बदली जा सकती है । एक ही फाइल में एक ही पेज पर कई भाषाओं में एक साथ काम किया जा सकता है । फोंट बदलने का कार्य भी हमें नहीं करना होता । सिस्टम अपने आप कर लेता है ।

हिंदी में डिफॉल्ट फोंट के रूप में मंगल फोंट उपलब्ध होता है, किंतु एक अन्य फोंट unicode MS के अक्षरों का आकार मंगल से ज्यादा सुंदर होता है और वे मंगल से कम स्थान घेरते हैं, इसलिए WORD में Format>font में जाकर डिफॉल्ट फोंट के रूप में एरियल यूनिकोड एमएस को चुन लेना चाहिए । यह कार्य जब चाहे तब किया जा सकता है । मंगल और एरियल यूनिकोड एमएस फोंट को आपस में बदला भी जा सकता है ।

अगर आपने ऊपर बताई गई प्रक्रिया पूरी कर ली है तो अब आप हिंदी या लोड की गई किसी भी अन्य भाषा में कार्य कर सकते हैं । वर्ड खोलने पर डिफॉल्ट सेटिंग के रूप में अंग्रेजी भाषा होगी । एएलटी+शिफ्ट के सहारे भाषा परिवर्तन कर लें । यह परिवर्तन स्क्रीन पर नीचे की ओर दिखाई देता है । अंग्रेजी होने पर EN या English हिंदी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

होने पर H या Hindi गुजराती होने पर G या Gujrati स्पष्ट रूप से दिखाई देता है । निम्नानुसार पट्टी नीचे दायीं ओर दिखाई देती है। इसके पॉच आइकन में से चौथे पर क्लिक करने पर "On–the–Fly–Help On/Off" दिखाई देगा ।

इसे ऑन पर क्लिक कर दें । क्लिक होते ही यह बंद हो जाएगा । अब यदि हमें हिंदी में अशोक टाइप करना है, तो रोमन में ashok टाइप करने पर हिंदी में अशोक दिखाई देता है। इतना ही नहीं नीचे दिखाई गई पूरी बारहखड़ी हर समय

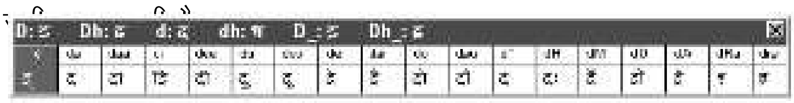

इस प्रकार हम उक्त विधि से अपने सभी विंडोज एक्सपी या उससे ऊपर के कंप्यूटरों को बिना कोई अतिरिक्त खर्च किए बहुभाषी बना सकते हैं और ग्राहक–सेवा तथा आंतरिक कामकाज में भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ाकर अपने कार्यालय के कार्य को हिंदी में बढ़ा सकते हैं ।

इसी प्रकार विंडोज 7 परिचालन प्रणाली (ऑपरेटिंग सिस्टम) प्रयोग करने वाले लोग हिंदी फॉण्ट को एक्टीवेट करने के लिए निम्नलिखित तरीका अपना सकते हैं:–

स्टार्ट मेनु → कंट्रोल पैनल → क्लाक, लैंग्वेज एण्ड रिजन → रिजिन एण्ड लैंग्वेज → की–बोर्डस एण्ड लैंग्वेजज → चेंज की–बोर्ड → ऐड → हिंदी → की–बोर्ड → देवनागरी–इंस्क्रिप्ट → ओ.के. → अपलाई → ओ.के.

अब नीचे टास्क बार में एक लैंग्वेज ऑप्शन आता है जिस पर क्लिक करके हिंदी अथवा अंग्रजी फॉण्ट का इस्तेमाल कर सकते हैं या Alt+Shift Button अबाकर भी फॉण्ट को बदल सकते हैं।

यहाँ एक स्वाभाविक प्रश्न हो सकता है कि पहले से मौजूद हिंदी पैकेजों (एपीएस, आकृति, विंकी, अक्षर आदि) के स्थान पर इसकी आवश्यकता क्यों है । इसके उत्तर में दो बातें कही जा सकती हैं । एक तो यह कि ये सभी पैकेज उस समय बनाए गए थे जब "ऑफिस" में मूल रूप से भारतीय भाषाओं में काम करने की सुविधा नहीं थी । परंतु यूनिकोड के सहारे अब यह सुविधा एम एस ऑफिस आदि में मूल रूप से उपलब्ध है । यह सही है कि एपीएस आदि में उपलब्ध अनेक तरह के फोंट और सीमित शब्दावली की सुविधा इसमें नहीं है, परंतु उसका ज्यादा महत्व भी नहीं है । दूसरी बात, जो यूनिकोड को इंटरफेस पैकेजों के मुकाबले कहीं बहुत आगे बढ़ा देती है, वो यह है कि यूनिकोड द्वारा हम "ऑफिस" की उन्नत सुविधाओं – मेल मर्ज, ई–मेल आदि का अंग्रेजी जितनी ही आसानी से प्रयोग कर सकते हैं, जो एपीएस आदि में संभव नहीं । एपीएस आदि की फाइलों को यूनिकोड में कन्वर्ट किया जा सकता है।

आइए, कंप्यूटर पर यूनिकोड का अधिकाधिक प्रयोग करें और हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा दें । भारत सरकार ने भी इसे मान्यता प्रदान की हुई है । इस तरह से अब आप संवैधानिक और व्यवहारिक दोनों रूप से अपना

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

रहो इस तरह जिंदगानी में

धनसिंह वर्मा

उन्होंने की शिव–पूजा, शिव उन्हें नागराज नजर आते हैं,
शिव का क्या दोष इसमें, वे तो मात्र दर्पण दिखाते हैं ।

नाग मैं खुद हूँ, भरा है दिल में अहंकार का हाला,
शिव तो परहित में पीते हैं, जहर का प्याला,
नाग मैं खुद हूँ, दिल में विष भरा है,
शायद इसलिए ही शिव भोले ने, नागराज का रूप धरा है ।
शिव जपन से मन–मक्खी ने मधुमक्खी का रूप धारा है,
गंदगी के बजाए अब मुझे फूल ही प्यारा है ।

कह 'धनसिंह भारतीय' क्यों शिव को दोष देते हो,
अपनी आत्मा पर पड़ी अज्ञान की धूल, क्यों नहीं हटाते हो ।
शिव तो तुम्हें, तुम्हारे ही रूप का दर्शन कराते हैं,
साथ ही यह भी याद दिलाते हैं,
न हर भूलो, न जग भूलो,
रहो इस तरह जिंदगानी में,
जैसे कमल रहता है,
तालाब के बंद पानी में ।

जज ने चोर को डांट लगाई। एक ही घर में बार–बार चोरी करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती। तुम्हारा एक ही आदमी से बार–बार मुकदमा चलने से मैं बोर हो गया हूं।
चोर ने बड़ी शालीनता से जवाब दिया, जज साहब, मैं तो इनका फैमिली चोर हूं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तमन्ना

रानी वधवा

आज सुमिता बहुत खुश थी और दुखी भी। खुश इसलिए थी कि आज उसे भारत सरकार द्वारा समाज सेवा के लिए सम्मानित किया गया था और दुखी इसलिए थी कि उसने यह सब पाने के लिए बहुत कुछ खोया था । हॉल में आराम कुर्सी पर बैठी सुमिता अपने उन दिनों को याद करने लगती है जब वह मात्र 20 साल की कॉलेज जाने वाली लड़की थी, जो हर समय एक चिड़िया की तरह चहकती थी । अपने माता–पिता की इकलौती संतान, जो चाहा वो हाजिर, हमेशा स्कूल और कॉलेज में अव्वल आना । सुमिता को नृत्य और संगीत से बहुत प्यार था । सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी सुमिता हमेशा भाग लेती और हमेशा जीतती, जैसे सुमिता ने हारना कभी सीखा ही न हो । हमेशा हँसना, खुश रहना और दूसरों को खुश रखना सुमिता का बस यही जीने का मकसद था । कॉलेज की पढ़ाई पूरी होने पर सुमिता के माता–पिता को अपनी गुड़िया अब बड़ी लगने लगी थी, सो उन्हें उसकी शादी की चिन्ता होने लगी थी। सुमिता नृत्यांगना बनना चाहती थी, लेकिन माता–पिता के कहने पर उसने शादी के लिए हां कर दी और एक हफ्ते बाद ही सुमिता के लिए सुनील का रिश्ता आया । सुनील पेशे से कम्प्यूटर इंजीनियर था और अच्छे परिवार का था । उन्होंने सुमिता को पसन्द कर लिया। सुनील के पिता ने दहेज में तीन लाख रुपये नकद और एक कार की मांग की और कहने लगे देखिए हमें तो सिर्फ इतना ही चाहिए, आगे आपकी मर्जी आप अपनी बेटी के लिए जो देना चाहें, दें। सुमिता के पिता पहले तो थोड़ा हिचके परन्तु उन्होंने अपनी बेटी के सुख के लिए अंततः उनकी हर शर्त स्वीकार कर ली। सुमिता यह सब दरवाजे के पीछे से सुन रही थी । उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे बाजार में खड़े होकर दूल्हों की बोली लगाई जा रही हो और उसके पिता खरीदार हों। आखिर सुमिता हमेशा–हमेशा के लिए अपने माता–पिता को छोड़कर उन लोगों के बीच में चली गई जिनसे वो बिल्कुल अन्जान थी। आज सुमिता के माता–पिता इस घर में अकेले रह गए। जहां पहले सुमिता की हंसी गूंजती थी वहां आज सिर्फ खामोशी की चादर बिछी हुई थी। आज सुमिता के बिना उसके माता–पिता को यह घर, घर नहीं मात्र चार दीवारी लग रहा था। सुमिता की मां सुमिता की चीजों को सीने से लगा कर खूब रो रही थी और सिर्फ यह कह रही थी कि क्यों बेटियों को ही दूर भेजा जाता है ।

उधर मन में कई सपने और उमंगे लिए सुमिता घूंघट में सिमटी हुई सी कार में चली जा रही थी । एक तरफ जहां उसे अपनों से बिछड़ने का गम था वहीं नई जिन्दगी से कई आशाएं और कई सवाल थे कि कैसे होंगे वहां के लोग, मुझे प्यार भी करेंगे या नहीं, इसी कशमकश के बीच उसे पता ही नहीं चला कि वह कब अपनी ससुराल पहुंच गई । सुमिता को उसकी ननद और सास ने कार से उतारा और उसका गृह प्रवेश किया । लम्बें घूंघट में सुमिता को कमरे में ले जाकर बैठा दिया गया । तभी कहीं से एक औरत सबको धक्का देते हुए आगे बढ़ी और बोली, सबसे पहले मैं अपनी देवरानी का चेहरा देखूंगी । यह कहते हुए उसने अचानक सुमिता के चेहरे से घूंघट खींच लिया और उसके चेहरे की कम लेकिन उसके गहनों की ज्यादा मुंह दिखाई होने लगी । दो दिन बाद जब सब मेहमान चले गए तो सुमिता को ससुराल वालों का असली रंग दिखने लगा । कुछ समय बाद उसकी सास ने उसके गहने उससे मांगे तो सुमिता ने इन्कार कर दिया । लेकिन शाम को जब सुनील घर आया तो उसने भी सुमिता से गहने मांगे परन्तु सुमिता ने मना कर दिया, इस पर सुनील ने उस रात सुमिता को खूब पीटा । बन्द अन्धेरे कमरे में बैठी सुमिता आज बिल्कुल शांत थी, उसके सारे सपने टूट चुके थे, उसकी हंसी कहीं खो चुकी थी । उसने सुनील से बात करना बंद कर दिया।

एक दिन वह रसोई का काम कर रही थी कि उसे चक्कर आ गया और वह बेहोश हो गई। होश में आई तो देखा कि वह अपने कमरे में थी और डाक्टर उसके सामने बैठी थी । डाक्टर ने सुमिता को खुशखबरी सुनाई कि वह मां बनने वाली है, वह बहुत खुश हुई । अगले दिन जब सुनील ने कहा कि तैयार हो जाओ डाक्टर के पास चैकअप के

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

लिए जाना है तो वह इसके पीछे छुपे हुए राज को नहीं समझ पा रही थी । शाम को सुमिता रसोई में काम कर रही थी तो उसने अपनी सास के जोर–जोर से रोने की आवाज सुनी । जब वह हाल में पहुंची तो घर के सब लोग माथे पर हाथ रखकर बैठे हुए थे। उसने सास के पास जाकर इसका कारण पूछा तो उसने कहा कि हमें घर का वारिस चाहिए, कर्मजली लड़की नहीं। सुमिता ने पूछा, आप को कैसे पता चला कि लड़की ही है तो सास ने उसे अल्ट्रासाउंड की रिपोर्ट दिखाई। सुमिता यह देखकर स्तब्ध रह गई और कहा कि मम्मी जी यह कानूनन जुर्म है। इसपर सुनील चिल्ला कर बोल उठा कि हमें इस घर का वारिस चाहिए न कि लड़की, जो मेरी छाती पर बोझ बने। अगले ही दिन सुनील सुमिता को घसीटता हुआ जबरदस्ती डाक्टर के पास ले जाने लगा। सुमिता बिल्कुल कटे हुए पंछी की तरह छटपटा रही थी, लेकिन सुनील पर इसका कोई असर नहीं हो रहा था। तभी सुमिता ने दीवार पर टंगी दुर्गा माँ की फोटो देखी, तो उसके अंदर न जाने कहां से ताकत आ गई। उसने दरवाजे को कस कर पकड़ लिया और पूरी ताकत लगाकर सुनील को खींचा और अचानक वह जमीन पर गिर पड़ा। इससे पहले कि सुनील उसे दबोचता उसने टेबल पर पड़ा चाकू उठा लिया। घर के बाकी लोग भी अपनी–अपनी जगह रुक गए। सुमिता बिल्कुल चण्डी का अवतार प्रतीत हो रही थी, उसके इस रूप को पहले किसी ने नहीं देखा था। सुमिता ने कहा, नहीं मारुंगी मैं इस नन्ही जान को, कोई हक नहीं तुम्हारा इस पर, यह सिर्फ मेरा बच्चा है। बोझ नहीं है यह। बहुत सह चुकी हूं तुम्हारा अत्याचार, अबला मत समझना मुझे, मैं जीना चाहती हूं । करीब चार महीने बाद सुमिता ने सुनील से नाता तोड़ दिया और अपनी मर्यादा का पालन किया। तुम पुरुष लोग इस मर्यादा को औरत की कमजोरी समझते हो, भूल है तुम्हारी ! यह कहते हुए सुमिता उस घर को हमेशा के लिए छोड़कर चली गई ।

तभी अचानक सुमिता की आंख खुली और उसने तमन्ना को सामने पाया । तमन्ना सुमिता की वही बेटी है जिसे वे लोग मारना चाहते थे । तमन्ना आज एक सफल वकील है और अपनी मां के साथ एक संस्था चलाती है । सुमिता ने तो अपनी तमन्ना को बचा लिया लेकिन न जाने कितनी और तमन्नाएं जन्म लेने से पहले ही मार दी जाती हैं। ऐसा होने से आज नारी का अस्तित्व ही खत्म होता जा रहा है । जिसके खिलाफ हम सबको आवाज उठानी चाहिए। यदि आज हम चुप रहेंगे तो आने वाला समय हमें इसके लिए दोषी ठहराएगा ।

जीवन–सूत्र

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है, चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।

मन का विश्वास रंगों में साहस भरता है, चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।

आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती, लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती

–हरिबंश राय बच्चन

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नगर नियोजन एवं शहरी गरीबों से संबंधित सुधार

डॉ. अचला मेदिरत्ता

सिंहावलोकन

ऐसा अनुमान है कि वर्ष 2051 तक देश की आधी आबादी शहरी हो जाएगी। मेट्रोपोलिटन (मिलियन प्लस) शहरों की संख्या बढ़कर 100 हो जाएगी और शहरी बस्तियों की कुल संख्या बढ़कर 10,000 से अधिक हो जाएगी। मूल बुनियादी ढांचे की सीमित पहुंच वाली शहरीकरण की स्थिति, विभिन्न आय समूहों में अनुचित वितरण की समस्या, बुनियादी ढांचे की कमी तथा कुशल एवं प्रभावी प्रबंधन के अभाव में बढ़े अनुचित वितरण के कारण संपर्क (लिंकेज) अप्रभावी हुआ है और इसे क्षति पहुंची है। इसके अलावा, शहरी क्षेत्रों में सेवाओं में कमी का सामना काफी हद तक निम्न आय और गरीब क्षेत्रों की जनसंख्या को करना पड़ रहा है। इसके आगे शहरों में गैर–विनियमित और बेतरतीब विकास शहर की अवसंरचना पर बहुत बोझ डालता है। जैसे ही शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या में बढ़ोत्तरी होती है, तो वो बाहर और ऊपर की ओर फैलते हैं जिससे प्रायः प्राकृतिक पर्यावरण और पारिस्थितिकी प्रणालियां नष्ट हो जाती हैं।

हालांकि, लगभग 91 प्रतिशत शहरी जनसंख्या को सुरक्षित पीने के पानी की आपूर्ति हो रही है परंतु पानी की मात्रा के संबंध में गंभीर कमियां हैं। इसके अलावा, 28 प्रतिशत शहरी स्थानीय निकाय प्रति व्यक्ति 50 लीटर से कम पानी उपलब्ध कराते हैं। जहां तक साफ–सफाई का संबंध है, 50 प्रतिशत शहरी जनसंख्या को ही यह सुविधा उपलब्ध है। तथापि 28 प्रतिशत शहरी परिवार सीवरेज प्रणाली से जुड़े हैं। वर्तमान में, शहरीकरण का तात्पर्य अत्यधिक भीड़–भाड़, अवसंरचना की कमी और अपर्याप्त सेवा व्यवस्था से है जिसके कारण पर्यावरण को क्षति पहुंचती है, इससे सामाजिक–आर्थिक विकास भी प्रभावित होता है।

भूमि उपयोग, स्लम में सुधार, पानी आपूर्ति में सुधार, सफाई, कचरा प्रबंधन और कुशल परिवहन जैसे आपस में जुड़े मुद्दों का समाधान अकेले नहीं किया जा सकता। नगर योजना में शहरी गरीबों से संबंधित मुद्दों पर ध्यान देकर इनका समाधान किया जा सकता है।

शहरी गरीबों के लिए सुविधाएं

शहरी विकास की तुलना में शहरी योजना के अनिवार्य तत्वों में से एक है शहरों में निम्न आय वर्ग, विशेषरूप से स्लम में रहने वाले लोगों की आवश्यकता पर ध्यान देना। स्लम खराब रहन–सहन की स्थिति को प्रस्तुत करता है और शहरी व्यथा को भी दर्शाता है। इसी समय शहरी आवास स्टॉक को ध्यान में रखते हुए गरीबों के लिए और गरीबों द्वारा आवास समाधान और निवेश पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

विकसित भूमि की कमी, भूमि की ऊंची कीमतें, सामग्री की बढ़ती कीमतें और सरकारी एजेंसियों के पास संसाधनों की कमी ऐसे कुछ तत्व हैं जो शहरी गरीबों को घटिया आवास और अस्वास्थ्यकर वातावरण में जीने के लिए मजबूर करते हैं। शहरी क्षेत्र में एक तरफ भूमि संसाधन कम हैं जिसे संतुलित विकास हासिल करने के लिए विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग में लाने की आवश्यकता है और दूसरी ओर गरीबों को आवास के लिए भूमि उपलब्ध कराने की बहुत अधिक आवश्यकता है।

शहरी गरीबों को कई अभावों में रहना पड़ता है। उन्हें दैनिक जीवन में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

है जो इस प्रकार हैः—

- सीमित रोजगार अवसर और आय;
- अपर्याप्त और असुरक्षित आवास और सेवाएं;
- हिंसक और अस्वास्थ्यकर वातावरण;
- सामाजिक सुरक्षा बहुत कम अथवा बिल्कुल न होना; और
- पर्याप्त स्वास्थ्य और शैक्षिक अवसरों तक सीमित पहुंच।

दिल्ली मास्टर प्लान—2021 खंड 4.2.3.3: शहरी गरीबों के लिए नया आवास एफएआर के 15 प्रतिशत अथवा आवासीय इकाई के 35 प्रतिशत, जो भी अधिक हो, को ईडब्ल्यूएस के लिए चिन्हित किया जाए।

जवाहरलाल नेहरू शहरी विकास मिशन के अंतर्गत गरीब—समर्थक सुधारों में शहरी गरीबों के लिए विकसित भूमि का 25 प्रतिशत भाग आरक्षित किया गया है।

बड़े किफायती आवासीय क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न सार्वजनिक—निजी भागीदारी मॉडलों का पता लगाने की आवश्यकता है। इसके अलावा, जहां निजी क्षेत्र की भागीदारी संभव नहीं है वहां सार्वजनिक एजेंसियों को शहरी गरीबों के लिए किफायती आवास लागत, नागरिक बुनियादी सुविधाओं और सेवाओं को पूरा करने के लिए संसाधनों को जुटाने और चिन्हित करने की आवश्यकता है।

शहरी गरीबों की संख्या का पहले एक मोटा अनुमान लगाने और इसे समय—समय पर अद्यतन करने की आवश्यकता होती है और इसके लिए स्पष्टरूप से मानचित्रण और अनुमानों के साथ विस्तृत आंकड़ों की आवश्यकता होती है।

गरीब समर्थक सुधारों पर ध्यान देने के लिए महत्वपूर्ण पहलूओं को कार्यान्वित करना महत्वपूर्ण हैः

1. बहु नोडल शहरी विकास में क्षेत्रीय योजना तैयार करने हेतु कानून में अधिकार देने के लिए उपबंधों को शामिल किया गया है। पेरी—शहरी क्षेत्रों में भूमि उपयोग और विकास नियंत्रण के निर्धारण में कमी है जिसके परिणामस्वरूप अनियोजित और अव्यवस्थित विकास कुकुरमुत्ते की तरफ फैल जाते हैं और इसके साथ भूमि उपयोग और परिवहन के बीच बहुत कम अथवा नहीं के बराबर एकीकरण हो पाता है। जिसका परिणाम यह होता है कि स्थायी विकास नहीं हो पाता। क्षेत्रीय योजना रूपरेखा में बस्तियों के प्रस्तावित पदानुक्रम और क्षेत्रीय भूमि उपयोग के निर्धारण, नेटवर्क और विकास नियंत्रण का ध्यान रखा जाता है। अतः क्षेत्रीय योजना तैयार करने के लिए उपबंधों को शामिल करना अनिवार्य है ताकि सभी मास्टर प्लान, क्षेत्रीय योजना के अंदर ही तैयार की जाएं जिससे क्षेत्र और संबंधित नगर/शहर का स्थायी विकास हो सके।

2. कार्य केन्द्रों के निकट जीविका के विकल्पों को बढ़ाने के लिए विशिष्ट पॉकेटों की पहचान द्वारा पर्यावरण की दृष्टि से स्थायी परिवहन और भूमि उपयोग परिवहन के एकीकरण को बढ़ावा देना। क्योंकि नगरों और शहरों

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

में नौकरी की तलाश में बाहर से काफी लोग आ जाते हैं अतः नगर एवं शहर तेजी से बढ़ते हैं। स्लम कुल शहरी आबादी का 1/4 भाग है। अधिकांश मिलियन प्लस शहरों जैसे मुम्बई में आधी से अधिक जनसंख्या स्लम में रहती है जिनमें से कई नगर के बीच में रोजगार केन्द्रों के निकट स्थित हैं। बहुत तेजी से बढ़ रही शहरी जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करना एक सामरिक नीति का मामला है और रहेगा। जिन महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है वे निम्नलिखित हैंः–

- स्थानीय शासन
- कमजोर वित्त
- महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे और मुख्य सेवा की कमी जिसमें अनियमित जल एवं विद्युत आपूर्ति और दयनीय अपर्याप्त परिवहन प्रणालियां शामिल हैं।

शहरी गरीबों को कार्य केन्द्रों के निकट उनके लिए विशिष्ट पॉकेट नियत करके जगह दी जानी चाहिए जहां व्यवहार्य सार्वजनिक परिवहन उपलब्ध हो और उन्हें मौजूदा और नए विकास के साथ एकीकृत किया जाए ताकि आवास से कार्यस्थल की यात्रा के समय और दूरी में कमी लायी जा सके और ईंधन लागत में बचत की जा सकें।

इसके लिए ढांचे को विकसित करना महत्वपूर्ण है जिसमें सर्वेक्षण एवं स्लम प्रोफाइल, गरीबी प्रोफाइल तथा शहरों/नगरों की जीविका प्रोफाइल और योजना व शासन के लिए शहर विशेष के ढांचे के लिए दिशा–निर्देशों का समूह हो ताकि इसे संचालित किया जा सके और शहरी गरीबों को बुनियादी स्तर की शहरी सेवाएं मुहैया करायी जा सकें।

3. सार्वजनिक–निजी भागीदारी में परियोजनाओं के कार्यान्वयन के माध्यम से सेवा स्तर के मानक को प्राप्त करने के लिए बुनियादी सुविधाओं की व्यवस्था करना।

जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीकरण मिशन के अंतर्गत दिल्ली के समग्र विकास के लिए गरीब–समर्थक सुधारों को कार्यान्वित करने की प्रभावी वैकल्पिक रणनीति

जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीकरण मिशन के अंतर्गत दिल्ली के समग्र विकास के लिए गरीब–समर्थक सुधारों को कार्यान्वित करने हेतु प्रभावी वैकल्पिक रणनीति पर काफी विचार–विमर्श करने के पश्चात् दिल्ली के समग्र विकास के लिए गरीब–समर्थक सुधारों को कार्यान्वित करने के लिए तीन मुद्दों को ध्यान में लाया गया था।

1. सुधारों के लिए बजट को चिन्हित करना।
2. शहरी गरीबों के लिए 35 प्रतिशत आरक्षण का विनियम। क्या यह विनियम शहरी गरीबों के लिए आवास उपलब्ध कराने के अपेक्षित अनुबंध को पूरा कर रहा है?
3. शहरी गरीबों के लिए शहर योजना।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

शहरी योजना के संबंध में गरीब–समर्थक सुधारों को कार्यान्वित करने के लिए उठाए जा रहे कदमः–

क. हुप्पा द्वारा कार्यान्वित रे योजना के अंतर्गत–

- स्लम विकास योजनाओं और स्लम मुक्त शहर योजनाओं को बनाने के लिए दिशा–निर्देश तैयार करना
- स्लम विकास/पुनर्वास/स्लम मुक्त शहरी योजना बनाने के लिए योजना मानकों का निर्माण
- सिटी मास्टर प्लान/शहर विकास योजना के साथ स्लम मुक्त शहर योजनाओं का एकीकरण
- राज्य/शहरों को परिचालित की जाने वाली स्लम मुक्त शहर योजनाओं को तैयार करने के लिए दिशानिर्देशों को अंतिम रूप देना ताकि इससे उन्हें स्लम मुक्त शहर योजनाओं को बनाने में मदद मिल सके।
- विशेषज्ञों की एक सूची का सुझाव देना जो विभिन्न क्षेत्रीय और राज्य स्तरीय क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के लिए संसाधन व्यक्तियों के रूप में उपलब्ध रहें।
- स्लम विकास योजनाओं, क्षेत्रीय स्लम मुक्त योजनाओं एवं शहर की स्लम मुक्त योजनाओं की तैयारी तथा कार्यान्वयन से संबंधित क्षमता निर्माण के लिए राष्ट्रीय संसाधन केन्द्रों और क्षेत्रीय संसाधन केन्द्रों की सूची तैयार करना।

स्लम विकास योजनाएं (रूपरेखा)

- स्लम /शहर के स्तर की रणनीतियों के लिए राज्य नीति प्रस्तुत करना
- संबंधित शहर के मास्टर प्लान में स्लम विकास की व्यवस्था
- स्लम पॉकेटों की पहचान
- सड़क एवं भवन के लेआउट, खुले स्थान, सुविधाओं, भूमि उपयोग, भूमि मूल्य, अवधि (ऐज), ढांचों की स्थिति और ऊंचाई तथा स्वामित्व की स्थिति इत्यादि के संबंध में भौतिक और सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं की विस्तृत सूची।
- संख्या/घरेलू चीजों/आय स्तर तथा व्यवसाय के स्वरूप द्वारा मौजूदा स्लम जनसंख्या का रिकार्ड
- व्यक्तियों द्वारा विभिन्न गतिविधियों के लिए की गयी यात्राओं के आंकड़े
- मौजूदा स्लम पॉकेटों को शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल जैसी सुविधाओं का उपयोग करने सहित शहर के अन्य भागों से जोड़ना

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

- भौतिक और सामाजिक बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता के संबंध में प्रलेखन
- परिप्रेक्ष्य अवधि के लिए स्थानिक आवश्यकताएं
- विकास के मुद्दों और प्राथमिकताओं का विश्लेषण करना और उन पर काम करना
- वैकल्पिक रणनीतियां
- उन पर हितधारकों (स्टेकहोल्डरों) के साथ चर्चा करना
- किसी रणनीति को अपनाने का निर्णय लेना
- सामुदायिक दृष्टिकोण, सरकारी हस्तक्षेप, सार्वजनिक निजी भागीदारी, टीपीएस इत्यादि को कार्यान्वित करने के तौर–तरीके

स्लम विकास योजना को स्थाई बनाने के लिए

➢ सामुदायिक प्रबंधन एवं रखरखाव को प्रोत्साहन देना

➢ पर्यावरण संबंधी खतरों को दूर करना/कम करना

➢६ सुरक्षा, हिंसा, मादक द्रव्यों के सेवन के मुद्दों पर ध्यान देने के लिए स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा तथा सामजिक सहायता कार्यक्रम में सुधार लाना

➢ प्रशिक्षण और सूक्ष्म ऋण के माध्यम से आय–अर्जन के अवसरों को बढ़ाना

➢ व्यवहार्य सार्वजनिक परिवहन विकल्पों की तलाश करना

➢ सुधारों को स्थायी बनाए रखने के लिए सामाजिक पूंजी और संस्थागत ढांचे का निर्माण करना

➢ जलापूर्ति, सफाई/अपशिष्ट संग्रह, तूफान जल निकासी, बाढ़ नियंत्रण, विद्युत, सुरक्षा, प्रकाश और सार्वजनिक टेलीफोन, स्वास्थ्य देखभाल, परिवहन सुविधा, खुले स्थान जैसी बुनियादी सुविधाओं में सुधार करना

➢ मास्टर प्लान की रूपरेखा के अंतर्गत एकीकृत करना ताकि उन्हें खाद्य सामग्री और स्थान उपलब्ध कराया जा सके ताकि शहरी गरीबों को रहने की जगह, कार्यस्थल और बिक्री स्थल उपलब्ध कराए जा सकें

➢ स्ववित्त पोषित विकल्पों–स्वामित्व की भावना का पोषण करना

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

- ➢ ऋण तंत्र उपलब्ध कराना
- ➢ स्लम विकास शामिल करने के लिए मास्टर प्लान उपबंधों की समीक्षा करना

स्लम मुक्त शहर योजना

- ◆ सड़क और भवन के लेआउट, खुले स्थान, सुविधाओं, भूमि उपयोग, भूमि मूल्य, अवधि (ऐज), ढांचे की स्थिति और ऊंचाई और स्वामित्व स्थिति इत्यादि (स्थानिक एवं विशेष डेटा) के संबंध में भौतिक और सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं की विस्तृत सूची
- ◆ प्रायोजना (प्रोजेक्शन)
- ◆ध प्रत्येक नयी सार्वजनिक/निजी आवास परियोजना में भूमि का 10–15 प्रतिशत अथवा एफएआर का 20–25 प्रतिशत, जो भी अधिक हो, ईडब्ल्यूएस/एलआईजी आवास के लिए आरक्षित किया जाना है। इसे प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
- ◆ध मास्टर प्लान/क्षेत्रीय योजना/स्थानीय क्षेत्र योजना/आवास/कार्यस्थल/बिक्री के लेआउट में शहरी गरीबों के लिए भूमि का पर्याप्त आरक्षण
- ◆ध प्रोत्साहन जोन बनाना
- ◆ यात्रा कटौती के जोन बनाना और पारगमन–उन्मुख विकास–सार्वजनिक परिवहन नोड/कॉरीडोर पर गरीबों के लिए स्थान निर्धारित करना
- ◆ध सभी 2बीएचके की आवासीय इकाइयों में अनिवार्य सेवा कार्मिक आवास
- ◆ एकीकृत–समग्र टाउनशिप
- ◆ शहरी स्थानीय निकाय/एजेंसी आरक्षित भूमि की लागत का भुगतान अविकसित भूमि की लागत दर पर करेगी
- ◆ध कॉलोनाइजर को 15 प्रतिशत आरक्षित भूमि के बदले में 'शेल्टर शुल्क' भुगतान करने का विकल्प प्राप्त है (यदि विकास पांच एकड़ से कम क्षेत्र में हो, तभी लागू होगा)
- ◆ध सरकार शहरी स्थानीय निकायों को नाममात्र शुल्क पर सरकारी भूमि का आवंटन करेगी जैसाकि छत्तीसगढ़ में सामाजिक आवास परियोजनाओं के लिए एक रूपया प्रतिवर्ग फीट की दर पर सरकारी भूमि आवंटित की जाती है।

किराया नियंत्रण अधिनियम में संशोधन करके और कमजोर वर्गों के लिए किराया आवास के विभिन्न विकल्पों के प्रोत्साहन के माध्यम से किराया आवास को बढ़ावा देना।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सिटी मास्टर प्लान के साथ स्लम मुक्त शहर योजनाओं के एकीकरण का वर्गीकरण

मास्टर प्लान	• मास्टर प्लान बनाना • अनुमोदन / अधिसूचना • यदि आवश्यकता हो तो भूमि उपयोग में परिवर्तन (इसमें हरित भूमि नहीं होगी जिसे बचाने की आवश्यकता हो) • स्लम पुनर्विकास के रूप में भूमि उपयोग का पुनःनामकरण

जोनल प्लान	• स्लम पुनर्विकास का ब्योरा • अवसंरचना एवं सुविधाओं की व्यवस्था • व्यवहार्य सार्वजनिक परिवहन विकल्पों का एकीकरण

एरिया प्लान	• बड़े शहरों में एरिया एवं स्लम विकास योजना कम से कम एक वर्ग किलोमीटर अथवा 100 हैक्टेयर की होगी एवं छोटे एवं मध्यम शहरों में 25 हैक्टेयर की होगी • स्लम पुनर्विकास के लिए पॉकेटों का रेखाचित्रण • परिचालन नेटवर्क की योजना बनायी जाए • बिक्री जोन अथवा रेहड़ी मार्किट के लिए स्थान की पहचान

लेआउट प्लान	• भूतल कवरेज– 35 प्रतिशत • एफएआर – 140 • भूमि उपयोग को टुकड़े–टुकड़े में बांटना

जीवन–सूत्र

धृतराष्ट्र की तरह किसी के मोह में इतने अंधे न बनो,
कि उचित–अनुचित में अंतर करना ही भूल जाओ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कहीं यही प्यार तो नहीं

प्रभाष कुमार

जिंदगी में जो प्यास सी लगी
जिसे देखकर मिले दिल को सुकून,
लगे ऐसा कि जैसे उसमें रब हो
जिंदगी में जो चाहा वो सब हो
कहीं यही प्यार तो नहीं।

जिसके साथ जीने की ख्वाइश हो
और मरने की तमन्ना,
जिसका साथ तारों के बीच
चाँद के जैसा लगे
जो हर मौसम में लगे बहार हो
कहीं यही प्यार तो नहीं।

जिसके बिना लगे जिंदगी
पाने के पहले कहीं खो न जाए
जीना हो जाए जिसके बिना मुश्किल
और रात आँखों ही आँखों में गुजर जाए
कहीं यही प्यार तो नहीं।

ऐसा लगे जो सांसों में बसा हो
अपनी भी जिंदगी उसकी अमानत हो
जैसे लम्हा–लम्हा
इंतजार में कहता हो
और पूरी जिंदगी बस एक एहसास हो
कहीं यही प्यार तो नहीं।

जिसके आँसू से भीगता हो दिल अपना
उसकी खुशियों से पूरा हो अरमान अपना,
जी चाहे सारी कायनात कर दूं उसके नाम
वो कहें तो हो जाऊँ
उसके लिए कुर्बान
कहीं यही प्यार तो नहीं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तनाव के कारण व इससे मुक्ति के उपाय

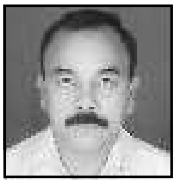

विमल कुमार

आज का समय अंधी दौड़ का युग है। आज हर व्यक्ति एक दूसरे से आगे निकल जाने की अंधी दौड़ में शामिल होकर दौड़ रहा है । इससे मनुष्यों के अंदर तनाव पैदा हो रहा है। आज का मानव अशांति, मानसिक उद्वेग व व्याकुलता के कारण सबसे ज्यादा परेशान है। इसलिए लोगों में अनिद्रा का रोग भी बढ़ता जा रहा है। व्यक्ति को नींद ठीक से नहीं आती है तो इसका कारण डिप्रेशन होता है। यदि हमें बात–बात पर गुस्सा आए, डर लगे, रोने को दिल करे, अकेला रहना अच्छा लगे और किसी की कोई भी बात अच्छी न लगे तो यह मान लेना चाहिए कि कहीं न कहीं हम डिप्रेशन के शिकार हैं। आपने कुछ लोगों को देखा होगा कि वे सड़क पर अकेले चलते हुए भी बोलते रहते हैं। महिलाएँ भी कभी घर में सास पर गुस्सा करती हैं तो कभी बच्चों पर गुस्सा उतारती हैं।

कुछ लोगों को तो चीज रखकर भूलने की आदत होती है तो कुछ लोगों को अपने बच्चों तक के नाम याद नहीं रहते । तनावग्रस्त रहने पर व्यक्ति का बल्डप्रेशर बढ़ता जाता है व उसकी स्मरण शक्ति कमजोर हो जाती है और एक समय ऐसा आता है कि व्यक्ति हँसना ही भूल जाता है। उसे हँसें हुए सालों गुजर जाते हैं और जब सालों बाद वह हँसता है तो लोग बड़ी विचित्र निगाहों से उसे देखते हैं कि क्या वह सचमुच हँस रहा है अथवा कहीं पागल तो नहीं हो गया है।

तनावग्रस्त रहने से व्यक्ति की सहन शक्ति कमजोर हो जाती है। आजकल पढ़ाई के बोझ के कारण छोटे–छोटे बच्चे भी तनाव में रहते हैं। प्रत्येक साल हजारों बच्चे आत्महत्या कर रहे हैं। इंजीनियरी पढ़ रहे युवा भी आजकल आत्महत्या कर रहे हैं। भारत में काफी किसान भी तनाव के कारण आत्महत्या कर रहे हैं जो समाचार की सुर्खियाँ बन रहे हैं। आजकल रोडरेज में बात–बात पर हत्या तक कर दी जाती है।

अपने कार्यक्षेत्र में जहाँ हम कार्यरत हैं वहाँ भी कुछ न कुछ तनाव होता ही रहता है। इस दवाब के कारण कई बार अंदर इतना तनाव भर जाता है कि जब वह फूटता है तो या तो अपने से जूनियर पर अपना गुस्सा निकालेगा अथवा घर जाकर पति–पत्नि अथवा बच्चों पर गुस्सा निकालेगा। कभी–कभी तो तनावग्रस्त व्यक्ति रोने भी लगता है। रोने से उसका मन कुछ हल्का हो जाता है।

तनाव का सबसे बड़ा कारण बहुत ज्यादा महत्वाकांक्षी होना है। आपके पास जो कुछ है उसी में संतुष्ट और सुखी रहने की आदत बनाएँ। आगे बढ़ने की योजनाएँ भी बनाएं। बहुत अधिक महत्वाकांक्षाएं जब टूटती हैं तो तनाव पैदा करती हैं। आजकल के युवा 5 साल में इतना आगे पहुँचना चाहते हैं कि 5 साल में ही 20 साल का कार्य कर लेना चाहते हैं। ये भावना बहुत हानिकारक है। आप आगे बढ़ने की चाहत अवश्य रखें, लेकिन उसी के अनुसार तैयारी भी करें। ऐसी तैयारी करने के लिए कम से कम 6 घंटे नींद लेने की आदत बनाएं। रोज सुबह जल्दी उठकर ताजी हवा में जाएं। नियमित रूप से व्यायाम करें और दिन में कम से कम 5 बार खुल कर हँसे, ज्यादा से ज्यादा पानी पीएं, अनुभवी लोगों के मार्गदर्शन का लाभ उठाएं। लेकिन हम इससे उल्टा ही करते हैं जिससे हम तनाव में आ जाते हैं। आलस्य को त्यागें, आज का काम कल पर न छोड़ें अन्यथा आप पर काम का बोझ बढ़ता जाएगा। एक साथ इस काम को निपटाना चाहोगे तो आप समय पर इस काम तो नहीं निपटा पाओगे और तनावग्रस्त हो जाओगे।

आजकल घरों में पति–पत्नी में तालमेल के अभाव के कारण तनाव बढ़ रहा हैं। कहीं पत्नी शक के कारण अपनी गृहस्थी बर्बाद कर रही हैं तो कहीं पति पत्नी के प्रति वफादार न होकर दूसरी स्त्री से संबंध बना लेता है। इसके कारण भी घरों में तनाव बढ़ रहा है। विवाह एक ऐसा बन्धन है जिसमें एक दूसरे पर विश्वास होना बहुत जरूरी है। पति–पत्नी दोनों को छोटी–छोटी बातों का बतंगड़ नहीं बनाना चाहिए। उन्हें एक–दूसरे का सम्मान करना चाहिए। घर में पति–पत्नी में तनाव होगा तो इसका प्रभाव बच्चों पर भी अवश्य पड़ेगा और उनका सही विकास नहीं हो पाएगा।

अतः जीवन को खेल–खेल में खुशी से बिताने की आदत डालें। आय से अधिक खर्च करने की आदत न बनाएं। अपनी ड्यूटी को मुस्कुराते हुए पूरा करें। दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप उनसे अपने लिए व्यवहार की आशा करते हैं । इन छोटी–छोटी बातों को ध्यान में रखते हुए हम तनाव मुक्त जीवन जी सकते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

माँ का रूप

रणसिंह सैनी

तुम करूणा का सागर हो माँ,
तुमसे सब खुशहाली है ।
तुम बिन सब–कुछ लगता सूखा,
मिट जाती हरियाली है ।

तुम बिन चमन, मुझे नहीं भाता,
खुशबू भी मिट जाती है ।
नजर नहीं आती फूल पत्तियाँ,
कांटो की चुभन सताती है ।
तेरी ममता के फूलों की,
खुशी बड़ी अनमोल है ।

तुम करूणा का सागर हो माँ,
तुमसे सब खुशहाली है ।
तुम बिन सब–कुछ लगता सूखा,
मिट जाती हरियाली है ।

एक सूत्र में सबको बांधा,
घर को स्वर्ग बनाया है ।
जो भी रूठा, तुरन्त मनाया,
गले से अपने लगाया है ।
तुम ममता की मूरत हो माँ,
सबकी डोर संभाली है ।
तुम करूणा का सागर हो माँ,
तुमसे सब खुशहाली है ।
तुम बिन सब–कुछ लगता सूखा,
मिट जाती हरियाली है ।

माँ तेरी ममता के कारण,
घर में हुआ उजाला है ।
कष्टों को अपने तन पर झेला,
किसने तुझे सम्भाला है ।
खुशी से सहन किया सब तूने,
तू भी खूब निराली है ।

तुम करूणा का सागर हो माँ,
तुमसे सब खुशहाली है ।
तुम बिन सब–कुछ लगता सूखा,
मिट जाती हरियाली है ।

वो, क्या जाने माँ की ममता,
जो, ममता से वंचित होते हैं ।
दर–दर की वे खाते ठोकर,
कदम–कदम पर रोते हैं ।
जिनको माँ का मिला दुलार,
वे ही भाग्यशाली हैं ।

तुम करूणा का सागर हो माँ,
तुमसे सब खुशहाली है ।
तुम बिन सब–कुछ लगता सूखा,
मिट जाती हरियाली है ।

जीवन–सूत्र

सुख और आनन्द ऐसे इत्र हैं, जिन्हें आप जितना अधिक दूसरों पर छिड़कोगे, उतनी ही सुगन्ध आपको भी मिलेगी।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वैश्विक मंदी और भारतीय अर्थव्यवस्था

डॉ. अशोक कुमार बंदूनी

मौजूदा वैश्विक संकट के कारणों की यदि हम व्याख्या करें तो पाएंगे कि पश्चिमी देशों की सरकारों ने भी समय रहते समुचित और व्यावहारिक कदम नहीं उठाए जिसका नतीजा इन देशों की खराब होती आर्थिक स्थिति के रूप में सामने हैं। भारत के लिए इसका कोई औचित्य नहीं कि वह दुनिया का तेजी से तरक्की कर रहा राष्ट्र बन गया है। अभी बहुत से मामलों में भारत दुनिया के अधिकांश देशों से पीछे है। इसलिए विकास की जो रफ्तार भारत ने हासिल की है, उसे बनाए रखने के लिए राजनीतिक परिपक्वता की जरूरत है।

वर्तमान समय में, जब अमेरिका और यूरोप समेत दुनिया के कई देशों में आर्थिक संकट के बादल गहरा रहे हैं, भारत को भी सजग रहने की जरूरत है। खतरे को इस बात से समझा जा सकता है कि अब विदेशी निवेशक भारत पर पहले की तरह भरोसा नहीं कर रहे हैं। वास्तव में, वर्तमान सरकार से जिन आर्थिक सुधारों की अपेक्षा की जा रही थी उस दिशा में भी कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं। इन कदमों में एक महत्वपूर्ण काम था वस्तु एवं सेवा कर यानी जीएसटी को लागू करने का, लेकिन अभी तक यह कार्यान्वित नहीं किया जा सका है। जीएसटी के लागू न होने और कर नीतियों में भिन्नता के कारण निवेशक यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि वे आखिर निवेश करें तो कहां करें और क्या उनके निवेश की सुरक्षा की गारंटी भी होगी? देश में ताजा राजनीतिक माहौल का उथल–पुथल भरा होना भी अच्छी बात नहीं है। इसके अलावा जो अहम मुद्दा चिंता में डालता है वह है लगातार बढ़ रही महंगाई ओर उससे निपटने के लिए उठाई जा रही सरकार की अव्यावहारिक नीतियां।

आज भारत सहित पूरी दुनिया में महंगाई की एक बड़ी वजह खाद्यान्न की बढ़ती कीमतें हैं। यदि दो साल पहले भारत सरकार ने गोदामों से उचित मात्रा में खाद्यान्न को बाजार में उतारा होता तो महंगाई की यह स्थिति नहीं होती। अब जबकि महंगाई नियंत्रित नहीं हो रही है तो भारतीय रिजर्व बैंक ने समाधान के तौर पर ब्याज दरों में बढ़ोतरी की मौद्रिक नीति को अपनाया है, जो अव्यावहारिक कदम है। ब्याज दरों में बढ़ोतरी से बाजार में खाद्यान्न की उपलब्धता तो बढ़ने से रही और जब तक उपलब्धता नहीं बढ़ेगी तब तक कीमतें भी कम नहीं होंगी। इससे कालाबाजारी और जमाखोरी बढ़ेगी और महंगाई पर नियंत्रण पाने का मौद्रिक उपाय भी विफल होगा। ब्याज दरों में बढ़ोतरी का प्रभाव औद्योगिक उत्पादन की लागत में बढ़ोतरी के रूप में सामने आएगा। इससे वस्तुओं की कीमतें बढ़ेंगी और मांग घटेगी, जिसका नकारात्मक प्रभाव अर्थव्यवस्था की विकास दर पर पड़ेगा। इसके अलावा कर्ज महंगा होने से उद्योगों में निवेश घटेगा। ऐसे समय में जब भारतीय औद्योगिक विकास दर गिर रही है, उद्योगों में निवेश बढ़ाने वाली नीतियों की आवश्यकता थी, लेकिन दुर्भाग्य से न तो सरकार और न ही भारतीय रिजर्व बैंक ने इस बात को समझा है। अभी भारत की आर्थिक विकास दर 7 प्रतिशत के आसपास है, लेकिन यदि आर्थिक और राजनैतिक माहौल में सुधार नहीं होता तो इस बात की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता कि आने वाले समय में भारतीय अर्थव्यवस्था एक बार फिर से अपनी परंपरागत विकास की दर यानी 5 प्रतिशत के विकास बिंदु दर के दुश्चक्र में फंस सकती है।

भारत सरकार को इस बात पर विचार करना चाहिए कि जो भी नीतियां बनें उनका सही क्रियान्वयन और मूल्यांकन सुनिश्चित हो। प्रभावी सुशासन की दिशा में ठोस कदम उठाए जाएं और तात्कालिक की बजाय दीर्घकालिक नीतियों पर जोर दिया जाए। देश को नए आर्थिक सुधारों की दिशा में कदम उठाने की आवश्यकता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इसके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और तकनीक पर अधिक खर्च करने की जरूरत है। आज भी भारत में शिक्षा ढांचा त्रुटिपूर्ण है और स्वास्थ्य सेवाएं अपर्याप्त हैं।

शेयर बाजार में लगातार गिरावट का क्रम जारी है जो इस आशंका को बल देता है कि यूरोपीय देशों के कर्ज संकट और अमेरिका की दुबली होती आर्थिक स्थिति ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गहराई से प्रभावित करना शुरू कर दिया है। यह सहज–सामान्य नहीं कि पिछले तीन माह (सितंबर–नवंबर, 2011) में शेयर बाजार में 12 प्रतिशत से अधिक गिरावट हो चुकी है। ताजा गिरावट का एक अन्य कारण एक अंतरराष्ट्रीय रेटिंग एजेंसी द्वारा देश के सबसे बड़े बैंक – भारतीय स्टेट बैंक की रेटिंग घटाना है। ध्यान रहे कि बैंकिंग क्षेत्र के शेयर पहले ही दबाव में हैं। भारतीय रिजर्व बैंक इसकी अनदेखी नहीं कर सकता कि बढ़ती ब्याज दरों के चलते नई तरह की समस्याएं जन्म ले रही हैं और वे आर्थिक विकास दर पर बुरा असर डाल रही हैं। आश्चर्यजनक है कि जब पूरी दुनिया यह महसूस कर रही है कि भारत में दूसरे चरण के आर्थिक सुधार ठप पड़े हुए हैं तब सरकार कोई ठोस कदम उठाने से इंकार कर रही है। अब तो वह इससे भी चिंतित नहीं नजर आती कि आर्थिक विकास दर लगातार सुस्त होती जा रही है। वैश्विक अर्थव्यवस्था के इस दौर में भारत पश्चिमी देशों के आर्थिक माहौल से अछूता नहीं रह सकता, लेकिन वह उससे कम से कम प्रभावित होने के उपाय तो कर ही सकता है।

यदि विश्व में नजर दौड़ाएं तो पाएंगे कि यूरोपीय देशों में मंदी के ये हालात पिछले कुछ सालों में सरकारी नीतियों के चलते उपजे हैं। यूरोप के कई देशों की सरकारें गिर चुकी हैं, तो कई जगह सरकार विरोधी प्रदर्शन अब हिंसक होने लगे हैं। फिर भी भारत के लिए खतरा अभी टला नहीं है। इस संदर्भ में निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का जिक्र हो रहा है :

बेल आउट पैकेज

इसके अंतर्गत किसी देश, कंपनी या फिर समूह जिन पर असफल होने या आर्थिक दिवालियापन का खतरा मंडरा रहा हो, को इस संकट से उबारने के लिए एक पैकेज (कर्ज, अनुदान के रूप में) दिया जाता है। यही बेल आउट पैकेज है।

कठिन समय (हार्ड टाइम)

यह टर्म आर्थिक संकट की स्थिति का सूचक है। जब कोई अर्थव्यवस्था विषम परिस्थिति से गुजर रही होती है तो उसकी इस संकटकालीन परिस्थिति को कठिन समय (हार्ड टाइम) से संबोधित किया जाता है।

जुंबी बैंक

यह शब्द अमूमन उन अमेरिकन बैंकों के लिए प्रयोग होता है जो बुरी तरह घाटे में चल रहे है। लेकिन तमाम सरकारी मदद व पैकेजों के बल पर वे किसी तरह अपना अस्तित्व बनाए रखते हैं।

क्ला बैंक

यह एक प्रकार की ऐसी आर्थिक व्यवस्था है जिसमें मंदी की स्थिति में अपने वर्तमान घाटे को पूरा करने के लिए कोई कंपनी या फर्म अपने कर्मचारियों को पिछले सालों में दिए गए बोनस वापस ले लेती है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नीचे की तरफ दोहरी मंदी (डबल डिप रिशेसन)

यह मंदी के अलग–अलग प्रकारों को ग्राफ के माध्यम से दर्शाने का एक तरीका है। जिसमें अर्थव्यवस्था के उतार–चढ़ाव के आधार पर उसका प्रदर्शन देखा जाता है। यहां इन उतार–चढ़ावों को 'वी' शेप्ड (जब मंदी का शिकार अर्थव्यवस्था बहुत कम समय में ही इससे उबरने की प्रवत्ति दिखाती है) 'यू' शेप्ड (जब मंदी का दौर कई–कई साल तक जारी रहता है) 'डब्लू शेप्ड' (वो अर्थव्यवस्था जहां बहुत कम–कम अंतराल में उतार–चढ़ाव आते रहते हैं) आदि नामों से जाना जाता है।

डिफ्लेशन

यह मंदी की स्थिति दर्शाने वाला एक प्रमुख कारक है जिसके चलते बाजार में आवश्यक वस्तुओं व सेवाओं की कीमत बहुत कम हो जाती है, लेकिन लोगों के पास इतना पैसा भी नहीं होता कि इन चीजों व सेवाओं का उपयोग कर सकें। इस स्थिति में इंफ्लेशन रेट सामान्यतः शून्य प्रतिशत से भी नीचे चला जाता है।

ग्रेट डिप्रेशन एरा

दो विश्व युद्धों के बीच की अवधि में दुनिया पर छाए भयावह आर्थिक मंदी (1929 से 1940 तक) के इस दौर को ग्रेट डिप्रेशन एरा के नाम से जानते हैं। इसकी शुरूआत अमेरिका से हुई और जल्द ही इसने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया। इस दौरान बेरोजगारी अपने चरम पर थी, औद्योगिक उत्पादन, विदेशी व्यापार, थोक मूल्य सूचकांक आदि ऋणात्मक स्तर पर थे, तो शेयर बाजारों में भी तेज गिरावट दर्ज की जा रही थी। इन गिरावटों में अमेरिकी शेयर बाजारों में (29 अक्तूबर, 1929) को केवल एक दिन में दर्ज अभूतपूर्व गिरावट सबसे प्रमुख है, जिसे 'ब्लैक ट्यूज डे' के नाम से जाना जाता है।

कैश डेब्ट रेशियो

किसी कंपनी के कर्ज की तुलना में उसके पास मौजूद कैश का अनुपात कैश डेब्ट रेशियो कहलाता है। किसी कंपनी की आर्थिक स्थिति दर्शाने वाला यह एक महत्वपूर्ण सूचकांक है।

यूरो जोन

यूरो जोन की स्थापना 1 जनवरी, 1999 में हुई जिसका उद्देश्य एकल मुद्रा प्रणाली, एकीकृत वित्तीय नीतियों के बल पर तेज आर्थिक दर सुनिश्चित करना था। आज इसमें 17 देश शामिल हैं जो परस्पर उत्तरदायित्व के सिद्धांत पर काम करते हैं। यूरोपियन सेंट्रल बैंक इनकी वित्तीय नीतियों पर नियंत्रण रखता है। जीन क्लाउडे जंकर इसके वर्तमान ग्रुप प्रेसीडेंट हैं।

जीवन–सूत्र

**जहां छीना–झपटी है, आलोचना है, निन्दा है, चुगली है,
जहां एक–दूसरे को नीचा दिखाने की भावना है, वहां नरक है।**

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भ्रष्टाचार

सुबोध कुमार श्रीवास्तव

वर्तमान समय का सबसे चर्चित मुद्दा भ्रष्टाचार है। सीधे अर्थों में इसका अभिप्राय ऐसे भ्रष्ट आचरण से है, जो निजी स्वार्थपूर्ति हेतु कर्त्तव्यों की अवहेलना और अधिकारों का दुरुपयोग प्रदर्शित करता है।

मौर्यकालीन "केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था" से लेकर वर्तमान "उदारीकृत शासन व्यवस्था" तक जो एक चीज शाश्वत दिखती है, उनमें "भ्रष्टाचार" भी है। वास्तव में कौटिल्य से लेकर अमर्त्यसेन तक ने "भूख" और "भय" के लिए सार्वजनिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार को ही प्रमुख कारण माना है। भारत जैसे विकासशील देशों में यह सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक पक्ष में छिपा बैठा है यही कारण है कि यहाँ विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और अन्ततः समग्र जीवन में भ्रष्टाचार एक संस्थात्मक स्वरूप ग्रहण करता जा रहा है।

लोकप्रतिनिधियों का भ्रष्टाचारः—

सर्वप्रथम हम लोकप्रतिनिधियों या नेताओं पर नजर डालते हैं, जिनके पूर्ववर्तियों ने 'नियति के साथ मुखामुखम्' के दिन "प्रत्येक आंख से आंसू पोंछ लेने" का वायदा किया था लेकिन अब न तो गांधी, नेहरू, पटेल जैसे जन नेता रहे और न ही उनकी समृद्ध विरासत। अब तो प्रधानमंत्री जैसे प्रथम श्रेणी के नेतृत्व पर भी कमीशन खा लेने और बड़े घोटालों में लिप्त होने के आरोप लगते हैं। सच तो यह है कि मसीहाई चरित्र हासिल कर लेने वाले अनेक राजनेता आज भ्रष्टाचार के दलदल में डूबते नजर आ रहे हैं। आम जनता में "राजनीति" को घृणास्पद मानने की प्रवृत्ति हो गई है और "नेता" शब्द गाली का पर्याय बनता जा रहा है।

पैसे लेकर संसद में प्रश्न पूछने जैसी अनेकों घटनाएं भ्रष्टाचार का जीता जागता उदाहरण है। जनता के पैसे की लूट से राजनीति अब एक प्रचुर संभावनायुक्त 'व्यवसाय' बनती जा रही है दूसरी ओर 'अपराधियों का राजनीतिकरण' कुंठित बेरोजगार युवकों के लिए राजनीति में रोजगार के असीम अवसर पैदा कर रहा है। राजनीतिक भ्रष्टाचार के इस 'तहलका' में आम आदमी आजादी के टूटे सपनों के बीच अरण्य—रोदन करने को विवश है।

लोकसेवकों का भ्रष्टाचारः—

यदि यह कहा जाए कि लोक प्रतिनिधियों की तरह ही लोकसेवकों के सार्वजनिक जीवन में भ्रष्ट आचरण के काफी दृष्टान्त मिलते हैं, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहां तक कि भारतीय सिविल सेवा का 'स्टील फ्रेम' भी भ्रष्टाचार के जंग से खोखला होने लगा है। पूर्व केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त ने तो भ्रष्ट सिविल सेवकों की सूची भी सार्वजनिक कर दी थी। लोक सेवी कार्यालयों में एक प्रवृत्ति यह भी उभरी है कि अब न केवल गलत काम करने हेतु रिश्वत ली जाती है, बल्कि सही काम को सही समय पर करने के लिए भी कुछ 'अतिरिक्त भेंट' की आवश्यकता होती है।

ऐसे में प्रखण्ड कार्यालय, पी.डब्ल्यू.डी. आदि से लेकर सचिवालय तक हर जगह रिश्वत, कमीशन और सिफारिश का बोलबाला है। शायद ही कोई ऐसा कार्यालय हो, जहाँ काम करने का रेट फिक्स न हो। उधर, पुलिस विभाग तो जनता की नजर में सबसे भ्रष्ट है ऐसा उसके आतंक के कारण है। मजेदार बात तो यह है कि पुलिस, वादी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

और प्रतिवादी, दोनों से रिश्वत लेती है। फिर मालदार असामी से लेकर मामूली रिक्शे–ठेले वाले तक से कुछ ऐंठ लेना पुलिस प्रशासन की विशेषता बन चुकी है। वस्तुतः रक्षक के भक्षक बन जाने का मुहावरा भारत के पुलिस और प्रशासन में ही अपना अर्थ पाता दिखता है।

लोक उद्धारकों का भ्रष्टाचारः–

कानून की रक्षक न्यायपालिका को प्रायः पीड़ितों के उद्धारक के रूप में जाना जाता है, परन्तु आज देश में एक क्रूर मजाक चल पड़ा है कि अति भाग्यशाली गरीब व्यक्ति ही धरती के पंच–परमेश्वरों की अदालत में न्याय पाने में सफल हो पाता है, वरना अधिकतर तो इस लोक के बजाय परलोक में ही न्याय पाने की आशा लिए मर जाते हैं। संक्षेप में, हमारी न्याय व्यवस्था 'वकीलों का स्वर्ग' भले ही हो, लेकिन आम जनता के लिए यह भयानक नर्क ही है। आज भ्रष्टाचारियों को दण्ड देने वाले स्वयं को ही भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं रख पा रहे हैं। अब तो समाज में देवतुल्य माने–जाने वाले न्यायधीश भी अपने परिवार की समृद्धि के लिए भ्रष्टाचारियों की शरण में ही जाते दिखते हैं।

बहरहाल अपवादों को छोड़ दें, तो न्यायपालिका में भ्रष्टाचार अधिकांशतः निचले स्तरों तक ही सीमित है इसके कारण गरीब जनता ही सर्वाधिक पीड़ित होती है। इस तरह धन–बल–छल के बिना न्याय पाने की आशा प्रायः धूमिल ही होती है। झूठे गवाहों, झूठी दलीलों, झूठे शपथ पत्रों के बीच भारतीय न्याय व्यवस्था का यही नग्न यथार्थ है।

सामान्य जीवन में भ्रष्टाचारः–

रेलवे, बैंकिंग तथा अन्य बड़े क्षेत्रों में भी भ्रष्टाचार नीचे से ऊपर तक फल–फूल रहा है। रेलवे में आरक्षण से लेकर बैंकों द्वारा कर्ज दिलवाने तक कमीशनखोरी व्यापक पैमाने पर चलती है वैसे निस्संदेह 'ये जो पब्लिक है ये सब जानती है' लेकिन वह खुद ही जैसे भ्रष्टाचार को मान्यता दे चुकी है इसलिए बेटिकट रेलवे यात्रा, बिजली चोरी, कालाबाजारी जैसे छोटे नमूने आम जीवन में सहज उपलब्ध है। कम शब्दों में कहें तो भ्रष्टाचार भारतीय जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है अतः योजना अनुदानों के एक रुपये के स्थान पर पंद्रह पैसे से संतोष करना इस भ्रष्ट व्यवस्था में आम आदमी की नियति है।

भारत के संदर्भ में विशेष रूप से सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार के कुछ प्रत्यक्ष कारण हैं। पहला, आजादी के बाद देश में एक ऐसे राजनीतिक–सामाजिक मध्यम वर्ग का उदय हुआ है, जो उपभोक्तावाद के चंगुल में फंसकर सुविधाओं को किसी भी कीमत पर हासिल करना चाहता है। दूसरा, देश के आर्थिक वातावरण ने भी भ्रष्टाचार का संपोषण किया है। 'लाइसेंस राज' ने लोक सेवकों को प्रायः निरंकुश बना दिया है, तो बढ़ती बेरोजगारी ने आम व्यक्ति को अनैतिकता की ओर अग्रसर किया है। तीसरा, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण हेतु कानून भी सख्त नहीं रहे हैं उपयुक्त सतर्कता या निगरानी तन्त्र का या तो अभाव रहा है या वे पर्याप्त नहीं रहे हैं।

अंततः व्यापक रूप से देखें, तो पूरी दुनिया में भ्रष्टाचार विकासशील देशों की विशेषता है इसलिए भारत भी इसका अपवाद नहीं है और लोकतंत्र की बढ़ती परिपक्वता से इसमें कमी आती जाएगी।

भ्रष्टाचार निवारण के प्रयासः–

भ्रष्टाचार में कमी लाने के प्रयास आजादी मिलने के बाद ही शुरू हो गए थे। "भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम 1947" से

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

लेकर "भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम, 1988" तक भ्रष्टाचार निरोधी प्रयास निरन्तर जारी हैं। इन अधिनियमों में रिश्वत, अवैध आर्थिक लाभ, आय से अधिक सम्पत्ति और अधिकारों के दुरूपयोग को भ्रष्टाचार माना गया है। सरकार ने 1960 में गठित भ्रष्टाचार निरोधक 'संथानम समिति' के सुझाव पर 1964 में 'केन्द्रीय सतर्कता आयोग' का गठन किया। यह आयोग लोक सेवकों के विरुद्ध भ्रष्टाचार की शिकायत की पड़ताल करता है इसके अलावा सरकार ने कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग में प्रशासनिक सतर्कता विभाग तथा केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सी.बी.आई.) की स्थापना की है। इतने आयोगों के गठन के बावजूद भी भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण नहीं हो पाया।

वर्तमान समय में अन्ना हजारे व बाबा रामदेव भ्रष्टाचार के विरुद्ध जनलोकपाल विधेयक की मंजूरी व कालेधन की वापसी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि जनता भी जागरूक हो रही है और इन लोगों को अपना भरपूर समर्थन दे रही है। जनलोकपाल विधेयक के माध्यम से निश्चित रूप से भ्रष्टाचार पर नियंत्रण होगा। भ्रष्टाचार के आरोपी की जाँच हेतु कुछ राज्यों ने लोकायुक्त संस्था को मान्यता दी है।

भ्रष्टाचार निवारण के सुझावः—

सबसे पहले, भ्रष्टाचार को जन्म देने वाले कारकों को एक—एक कर हटाना होगा। आवश्यक वस्तुओं की कमी को समाप्त करने के लिए बाजारतंत्र को सरकारी नियंत्रण से मुक्त और अधिकाधिक प्रतिस्पर्धी बनाना होगा। लेकिन उदारीकृत अर्थव्यवस्था में नीतियाँ विवेकपूर्ण होनी चाहिए, सामाजिक दायित्वों से मुक्त नहीं।

दूसरे, सतर्कता कानूनों को अधिक धारदार बनाने की जरूरत है। राजनीतिक अपराधीकरण को प्रोत्साहित करने वाले तत्वों को हर हालत में समाप्त करना होगा और "जन लोकपाल विधेयक" पर शीघ्र ही वैचारिक मतभेद दूर करना होगा। जनता को अविलम्ब "सूचना का अधिकार" दिया जाना चाहिए। सूचना के अभाव में ही आम जनता को सरकार की योजनाओं का वास्तविक लाभ नहीं मिल पाता और भ्रष्टाचारी सरकारी धन हड़प जाते हैं।

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना स्थान बना चुका है। इस पर नियंत्रण के लिए अनेकों सराहनीय प्रयास जारी हैं और हम उम्मीद करते हैं कि जन लोकपाल विधेयक, लोकायुक्त, सूचना का अधिकार व मीडिया द्वारा भ्रष्टाचारियों के विरुद्ध चलाए जा रहे ऑपरेशनों, जैसे स्टिंग ऑपरेशन, ऑपरेशन दुर्योधन आदि के माध्यम से भ्रष्टाचार कम होगा।

जीवन—सूत्र

बैंक से वेतन की राशि निकालते समय एक बार अवश्य विचार करें कि आपने अपनी ड्यूटी मुस्कराते हुए पूरी लग्न से की है अथवा इसे बोझ समझकर रोनी सूरत बनाते हुए किया है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

'महिमा सत्संग की'

प्रवीन कुमार

सत् संगति तुम सदा ही करना, मानो मेरा सभी ये कहना ।
कभी कुसंगति में ना जाना, वरना दुखः पड़ेगा सहना ।

गंगा बहती है सत्संग की, जो इसमें स्नान करेगा ।
जन्म–जन्म के पाप मिटेंगे, जग में भी सम्मान मिलेगा ।

आलस, कपट, क्रोध को तजके, निंदा से जो जन घबराते ।
जाने धर्म, ज्ञान भक्ति को, वो नर भव से ही तर जाते ।

ह्रदय नम्रता धारि के यारों, सेवा सदा बड़ों की करना ।
कभी कुसंगति में ना जाना, वरना दुखः पड़ेगा सहना ।

पर नारी से प्रेम ना करना, पर धन सदा समझना माटी ।
मधुर वचन कहना जिव्हा से, है अनमोल भ्रात ये वाणी ।

बोली एक चीज है ऐसी, जो खाई ईर्ष्या की पाटती ।
आपको भी सम्मान दिलाती, औरों को भी मौज बॉटती ।

अधर्म की राह पर मत जाओ, जिस पे चलके मानव रोता ।
सत्कर्मो की राह पकड़ लो, जीवन सुखी सदा तब होता ।

दीन–दुखियों को गले लगाना, उनकी सेवा को आगे बढ़ना ।
बल, विद्या, यश, आयु बढ़ेंगे, जीवन के ये उत्तम गहना ।

कभी कुसंगति में ना जाना, वरना, दुखः पड़ेगा सहना ।

जीवन–सूत्र

जिंदगी बहुत कुछ सिखाती है, कभी हँसाती है, तो कभी रूलाती है।
पर जो हर हाल में खुश रहता है, जिंदगी उसके आगे सर झुकाती है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नैतिक मूल्यों का पतन

नेत्रपाल

परमात्मा द्वारा मानव रचना, सृष्टि की एक सर्वोत्तम कृति है। नैतिकता का शाब्दिक अर्थ है, नीति के अनुरूप आचरण। सामाजिक व्यवस्था को ठीक ढंग से चलाने के लिए कानून बनाए जाते हैं। यही कानून जब व्यापक स्वीकार्यता हासिल कर लेते हैं तो नैतिक मूल्य बन जाते हैं। मनु की सन्तान होने के कारण ही हम मानव या मनुष्य कहलाए। मानव एकमात्र ऐसा सामाजिक प्राणी है जिसमें बुद्धि को विकसित किया जा सकता है। वह उसका उपयोग सही ढंग से कर सकता है। मानव ने अपने बुद्धि–बल से सागर की गहराई को नापने से लेकर चॉद–सितारों से भी आगे उड़ान भरी है। साधारण से असाधारण बनाने वाले गुण जैसे सदाचार, शिष्टाचार, उचित–अनुचित, सबकी भावनाओं का सम्मान, आदर्शों व विचारों के साथ–साथ अपनी सांस्कृतिक परम्परा को आगे बढ़ाना व संवारना मानवजाति का कर्त्तव्य है और यही हमारे नैतिक मूल्य भी हैं।

पहले स्कूलों में नैतिक शिक्षा नामक पुस्तक पाठ्यक्रम में होती थी। इसके विपरीत शायद आजकल उस नैतिक शिक्षा की किताब का अर्थ ही बदल गया है, उसका कोई महत्व ही नहीं रह गया है। आज वो नैतिक शिक्षा की किताबें स्कूलों से गायब हो चुकी हैं। स्कूल में यदि मास्टर बच्चों की बुराइयां दूर करने, अनुशासन व समय का पालन कराने के लिए बच्चों को कभी–कभार डांट देता है, तो अभिभावकों द्वारा इसकी शिकायत की जाती है।

आजकल महापुरूषों को केवल या तो उनके जन्मदिवस के अवसर पर याद किया जाता है या उनके निर्वाण दिवस पर। ये महापुरूष हमारे घरों से नदारद हैं, हमारे मॉ–बाप की जुबान से बहुत दूर हैं, हमारे आस–पड़ोस से दूर हैं। फिर हम यह आशा कैसे कर सकते हैं कि हमारे बच्चों में अच्छे संस्कार आएं। अच्छे संस्कार देने के लिए हमारे पास तो समय है नहीं और जो उनको अच्छे संस्कार दे सकते हैं, उनको उपेक्षित किया जाता है। यहां पर आशय दादा–दादी व अन्य बुजुर्गों से है। बच्चों के कमरे में दुनियाभर के कॉमिक्स, कंप्यूटर गेम्स व फिल्मी गानों की सीडी आदि मिल जाएंगी, लेकिन सरदार भगत सिंह, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, गौतम बुद्ध, चाणक्य, सरदार पटेल, लक्ष्मीबाई, महर्षि अरविन्द, दयानंद सरस्वती आदि मनीषियों की प्रेरणास्रोत पुस्तकें नहीं मिलेंगी। वर्तमान में, संस्कारयुक्त, प्रेरणाप्रद, ऐतिहासिक व पौराणिक कहानियों की किताबों की जरूरत है जिससे बच्चों में नैतिकता का बीजारोपण किया जा सके।

आज परिवेश बदल गया है। हमारे बुजुर्गों की स्थिति क्या है? इससे हम सब लोग भलीभांति परिचित हैं। बचपन में बच्चे को संस्कारित करने में घर के बुजुर्गों का, माता–पिता का, आस–पड़ोस का बहुत बड़ा हाथ होता है। बचपन की सुनी कहानियों तथा बातों का बाल मन पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता है। एकात्म की दुनिया में आज लगभग हर मॉ–बाप की ये कोशिश रहती है उनके बच्चे उनके दादा–दादी से दूर रहें। इस हकीकत को हिंदी फिल्म 'बागवां' में भी प्रदर्शित किया गया है। इसमें किस प्रकार बच्चे मॉ–बाप को भूलकर अपने–अपने एकल परिवारों में मस्त होकर रहने लगते हैं। कभी–कभार दादा–दादी का बच्चे को डांटना माँ–बाप को गंवारा नहीं होता। बच्चों को प्रारंभ से नैतिक शिक्षा नहीं मिल पाने का एक अहम कारण एकल परिवारों में बढ़ोत्तरी होना भी है।

नैतिकता आसमान से नहीं टपकती और अच्छे संस्कार व मूल्य हवा में नहीं बनते। यह तो स्वयं ही निर्मित किए जाते हैं। वर्तमान में, नैतिक मूल्यों का घोर अभाव है। यह एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। मानव जाति का

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

यह दोष जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना आधिपत्य जमा चुका है। पर्यावरण के असंतुलित होने, परिवार, समाज व देश में हो रही सारी समस्याओं के मूल में एकमात्र कारण नैतिक मूल्यों का पतन ही है। पतन के एक नहीं अनेकों उदाहरण आज दृष्टिगत होते हैं। पत्नी के साथ लौट रहे पति की नशे में धुत्त चार युवकों ने पिटाई की और बाद में सुनसान इलाके में महिला के साथ दुष्कर्म किया। कोचिंग सेंटर संचालक ने 9वीं कक्षा की छात्रा को नशीला पदार्थ खिलाकर उसका अश्लील एमएमएस बनाया और ब्लैकमेल करते हुए उससे अपने घर में लाखों की चोरी करवाई। स्कूलों में चाकूबाजी की घटनाएं आम हो गई हैं। बेटा माँ की हत्या करने में संकोच नहीं करता, तो माँ द्वारा अपने ही मासूमों की सामूहिक रूप से निर्मम हत्या कर दी जाती है। कारण कुछ भी हो सकता है। छोटी–छोटी बात पर रोडरेज की घटनाएं दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। इन घटनाओं में मामूली बात पर मारपीट से शुरू होकर जान लेने तक की नौबत आ जाती हैं। आज बेखौफ होकर दिन में ही महिलाओं व लड़कियों को गाड़ी में खींचकर दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया जाता है। असम की घटना शर्मसार करने वाली है जिसमें सामूहिक रूप से एक लड़की के साथ बलात्कार किया गया।

एक ऑटो और स्कॉर्पियों की टक्कर से लाइट टूटने का 100–200 रूपये का नुकसान हुआ। स्कॉर्पियों चालक ने उसकी भरपाई ऑटो वाले को ईंट मारकर उसकी जान लेकर पूरी की। इससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि युवा पीढ़ी न जाने कौन–सी संस्कृति को अपनाने जा रही है? वह किस दिशा में कदम बढ़ा रही है? वह क्षमा करने के महत्व को भूल चुकी है। मात्र 5–6 साल की अबोध बालिका के साथ दुष्कर्म तथा हत्याएं करने की घिनौनी हरकत की जाती हैं। ऐसा नैतिक पतन हमारी संस्कृति एवं सामाजिक व्यवस्था के ताने–बाने को तार–तार कर रहा है। हम छोटी–छोटी बात पर तत्काल आवेश में आ जाते हैं। गुस्से में इंसान अपना आपा खो देता है। ऐसे में उसे सही और गलत का जरा भी आभास नहीं रहता। एक सर्वेक्षण के अनुसार 17 प्रतिशत वारदातें आवेश में आकर ही अंजाम दी जाती हैं। इसलिए स्वयं संयमित रहें, उतावलापन न दिखायें तथा शीघ्र आने वाले गुस्से को नजरअंदाज करना सीखें। अधीर होने से काम चलने वाला नहीं है। सर्वदा धैर्य बनाए रखें। किसी भी परिस्थिति में धैर्य को न छोड़ें।

हमारे पूर्वजों, हमारे महापुरूषों, देश के महान संतों, देशभक्तों और हमारे माता–पिता द्वारा जो नैतिक मूल्य स्थापित किए गए हैं, उनको हम भूलते जा रहे हैं। जो संस्कार हमारे पूर्वजों में थे, वो संस्कार हम अपनी नई पीढ़ी को नहीं दे पा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इन सबके लिए कहीं न कहीं दोषी हम स्वयं भी हैं। छोटी से छोटी गलतियों को देखकर अनदेखा करने की प्रवृत्ति को छोड़ना होगा, अपितु तत्काल ही सकारात्मक निर्णय लेना होगा।

आज मानव मानव का ही दुश्मन बन बैठा है, भाई–भाई में नहीं बन रही है, घर–परिवार बिखर कर अपनी परिभाषा खो रहे हैं, रिश्ते–नाते, छोटे–बड़े, बन्धु–बांधव आदि सम्बन्ध अब लुप्त होते जा रहे हैं क्योंकि सभी के पास समय का अभाव है। आज घर में वह आंगनरूपी प्राथमिक पाठशाला ही नहीं है, जहां बुजुर्गों की हिदायतें और बच्चों की किल्कारियां साथ–साथ खेला करती थीं। उनको अच्छे–बुरे, उचित–अनुचित का पाठ पढ़ाया जाता था। वर्तमान में, सदाचार, संयम, शिष्टाचार, सही–गलत, उच्च–आदर्श एवं सद्‌विचार को अपनाने की जरूरत है। इससे बेहतर चरित्र निर्माण किया जा सकता है। बेहतर चरित्र निर्माण होने पर ही राष्ट्र निर्माण संभव है तथा इस प्रकार वे अपनी सांस्कृतिक परंपरा को प्रगति के पथ पर ले जाने वाले संवाहक बन सकेंगे। अच्छे विचारों को फैलाने के काम में हर किसी को योगदान करना चाहिए। हमें भी नैतिक मूल्योंरूपी सुगंध को समाज में बिखेरने की आदत बनानी चाहिए। जीवन में नैतिक मूल्यों का समावेश बेहद जरूरी है। इन मूल्यों की तिलांजलि देकर भटकाव की ओर बढ़ने वाले कदमों को हमें रोकना होगा।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परिवहन महायोजना निर्माण में ट्रक परिवहन की आवश्यकता एवं ट्रक चालकों के व्यक्तित्व तथा उससे जुड़े मुद्दों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

उदित रत्न

परिवहन महायोजना का मुख्य उद्देश्य भावी जनसंख्या के अनुरूप सड़क की आवश्यकता का आकलन, ट्रांजिट एवं यातायात व्यवस्था तथा भारी गाड़ियों, साइकिल एवं पैदल यात्रियों के आवागमन हेतु एक दिशानिर्देश देना है। ऐसी महायोजना का उद्देश्य शहरों की तीव्रगति से बढ़ती हुई आबादी के अनुरूप रोजगार सृजन एवं उन्हें आधारभूत सुविधाएं प्रदान करना है। शहरों एवं शहरों से जुड़े हुए उपनगरीय क्षेत्रों को रहने योग्य बनाने हेतु उनमें तीव्र गति से बढ़ती ट्रिप्स को सुव्यवस्थित करने एवं कार, ट्रक, बस, साइकिल, व्हील चेयर, स्कूटर एवं पैदल यात्रियों के लिए आधारभूत अवसंरचना का निर्माण आवश्यक है।

परिवहन महायोजना की निर्माण प्रक्रिया

(क) प्रथम चरण –

शहरों की मौजूदा यातायात व्यवस्था से जुड़ी समस्याओं की पहचान करना प्रथम चरण का मुख्य उद्देश्य होगा। इस प्रक्रिया में शहरों में परिहवन की मौजूदा हालत एवं सुधार के बारे में नागरिकों की राय एवं जन साक्षात्कार एक महत्वपूर्ण अंग बन सकती है।

(ख) द्वितीय चरण –

(अ) प्रथम चरण में चिन्हित मुद्दों के समाधान हेतु विकल्प का विकास एवं उसकी समीक्षा करना;

(ब) पब्लिक फोरम, स्टेकहोल्डर एवं रेजीडेन्ट ट्रान्जिट कल्याण संस्था को इस प्रक्रिया में अहम् स्थान देना।

(ग) तृतीय चरण –

(1) परिवहन महायोजना ड्राफ्ट का निर्माण;

(2) ट्रान्जिट सेवा, माल वाहन, साइकिल, पैदल यात्री और वाहनों के सुगम संचालन हेतु नेटवर्क विकसित करना;

(3) आवागमन हेतु सुरक्षित ढांचा तैयार करना, कम्युनिटी की सहभागिता एवं प्रारूप दस्तावेज की समीक्षा।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्रस्तुत लेख में ट्रक यातायात से जुड़े मुद्दों एवं ट्रक चालकों के व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है।

ट्रक चालकों की जिन्दगी जोखिमभरी एवं चुनौतीपूर्ण होती है। वे कई–कई सप्ताह तक झंझावातों, तूफानी एवं बर्फीली रातों का सामना करते हुए निर्जन सड़क पर रात–दिन गाड़ी चलाते हैं, जिसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है। कभी–कभी तो तनाव, अवसाद तथा चिन्ता के कारण उनके रक्तचाप पर असर पड़ता है जिससे वे आपा खो बैठते हैं तथा दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं । शहरों में परिवहन महायोजना का अभाव एवं उन्हें अमल में लाने की कठिनाइयां ट्रक चालकों का कार्य और दुर्गम बना देती है। ट्रक चालकों के कुछ इसी प्रकार के व्यावहारिक जीवन का विश्लेषण निम्नलिखित रूप से किया जा रहा है।

(1) जनसांख्यिकीय सूचना

ट्रक चालकों में से ज्यादातर चालक 25–50 वर्ष की आयु के बीच होते हैं जिनकी शिक्षा आठवीं पास या दसवीं फेल तक होती है। कुछ निरक्षर एवं पांचवी पास भी होते हैं। अधिकतर ट्रक चालक शादीशुदा होते हैं, उनका घर परिवार एवं बच्चे होते हैं । सहायक ट्रक चालक या हेल्पर 18–25 वर्ष की आयु में पढ़ाई छोड़कर ट्रक क्लीनर से अपनी जिन्दगी की शुरूआत करते हैं।

(2) कार्यशैली

अधिकतर ट्रक चालकों की जिन्दगी महीने में 15–20 दिन तक सड़क पर ट्रक में गुजरती है। वे अपने परिवार एवं सगे सम्बन्धियों से अलग रहकर दिन–रात ट्रक चलाते हैं और निर्दिष्ट स्थान पर माल छोड़ने के बाद वापसी का मार्ग अपनाते हैं।

(3) जीवनशैली

(क) धूम्रपान, अल्कोहल एवं ड्रग्स तो ट्रक चालकों का पर्यायवाची शब्द बन गया है । शायद ही कोई ट्रक चालक ऐसा होगा जो नशे का सेवन नहीं करता हो। जैसाकि देखा गया है कि नये ट्रक सहायक शीघ्र ही नशा सेवन के आदी हो जाते हैं।

(ख) पहले तो ट्रक में ही रेडियो/टेप होते थे, जिससे यात्रा के दौरान मनोरंजन हो जाता था लेकिन आज मोबाइल के प्रचलन से उनके कानों को निरन्तर मनोरंजन प्राप्त होता रहता है। समय मिलने पर वे ताश के माध्यम से जुए के शिकार बन जाते हैं जिससे उनके पथ से विचलित होने के आसार बढ़ जाते हैं।

(ग) ट्रक का बीमा तो ट्रक मालिकों द्वारा करा लिया जाता है लेकिन अधिकतर मामलों में ट्रक चालक का खुद का जीवन बीमा नहीं होता है। यदि जीवन बीमा होता भी है तो ज्यादातर मामले में लापरवाही के चलते या जीवन बीमा निगम कार्यालय से दूरी के चलते किस्तें समय से जमा नहीं होने से जीवन बीमा पालिसी टूट जाती हैं और दुर्घटना की अवस्था में इसका फायदा ट्रक चालकों को नहीं मिल पाता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

(4) मनोवैज्ञानिक एवं मादक स्वास्थ्य

शुरू में ट्रक चलाने से लेकर बाकी की जिन्दगी में ट्रक चालक तनाव की जिन्दगी जीते हैं वे अवसादयुक्त एवं उत्तेजित रहते हैं। ऐसा निम्न कारणों से होता हैः–

क) नौकरी का स्वरूप

ख) लम्बी यात्रा

ग) परिवार से लम्बे समय का अलगाव

घ) कटा सामाजिक सम्बन्ध

ड) वित्तीय समस्याएं

च) परिवार/सम्बन्धियों के यहां शुभ अवसर पर मौजूदगी का अभाव

छ) यात्रा की थकावट एवं आराम की कमी।

(5) जोखिमपूर्ण कामुक व्यवहार

एक रूट पर लम्बी दूरी तक गाड़ी चलाने एवं काफी अर्से तक परिवार से अलग रहने के कारण कुछ ट्रक चालकों का मन जहां परस्त्रीगमन की तरफ आकर्षित होता है वहीं कुछ युवा चालक देह व्यापार में लिप्त युवतियों के चंगुल में फंस जाते हैं तथा असुरक्षित यौन के परिणामस्वरूप एड्स जैसी भयानक बीमारी के शिकार हो जाते हैं। ऐसी बीमारियां ट्रक चालक के साथ अन्यत्र भी फैल जाती हैं।

(6) पेट्रोल पम्प एवं ढाबा का जीवन

ट्रक चलाने के बाद जब कभी ट्रक चालकों को विश्राम का मौका मिलता है तो वह जगह ढाबा होती है । ढाबे पर स्नान, कपड़ों की धुलाई, भोजन, विश्राम, ट्रक की सफाई, मनोरंजन (टी.वी., रेड़ियो इत्यादि) का स्रोत भी प्राप्त होता है। पेट्रोल पम्प एवं उसके आस–पास टेलिफोन बूथ, फैक्स मशीन का उपयोग भी किया जाता है। इस तरह उनकी जिन्दगी ढाबों एवं सड़क के इर्द–गिर्द बीत जाती है।

(7) विकलांगता के बीच पनपती जिन्दगी

(क) सामान्य तौर पर यह देखा गया है कि ट्रक चालकों के अंधाधुंध ट्रक चलाने से प्रतिवर्ष हजारों लोगों की जान चली जाती है। गाड़ी में मैकेनिकल खराबी, उसमें लदे बोझ, मौसम की स्थिति, सड़क की बनावट के साथ–साथ चालक की मनोस्थिति (चिड़चिड़ापन, अवसाद, नशा इत्यादि) इसके मुख्य कारण हैं। गलती भले ही छोटी गाड़ी की हो, परन्तु दोषी ट्रक चालक को ही ठहराया जाता है। कभी–कभी तो देर रात को ट्रक का पहिया बदल रहे चालक/क्लीनर को आज के युवा नशे की

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हालत में अपनी कार से टक्कर मार देते हैं। बड़ी दुर्घटनाओं में या तो चालक की जान जाती है या फिर वह हमेशा के लिए विकलांग हो जाता है।

ट्रक चालक प्रकाश कचोरे का हाथ ट्रक दुर्घटना में कट जाने के बाद उसने अपने परिवार के साथ आत्महत्या कर ली। कम्पनी की तरफ से 2000 रूपये प्रतिमाह के वेतन से उनके परिवार का गुजारा नहीं हो पाता था। (चित्र स्रोत इन्टरनेट : विदर्भ भारी वाहन / ट्रक चालक यूनियन)

(ख) यात्रा के दौरान चालकों के पास चालक लाइसेंस एवं ट्रक के कागजात तथा दो चार एस.टी.डी. नम्बर के अलावा कुछ नहीं होता है। उनके पास इसका पुख्ता प्रमाण नहीं होता कि वे 5 या 10 वर्ष से अमुक गाड़ी को चला रहे हैं या अमुक कम्पनी में नियोजित हैं। उनकी उपस्थिति–पंजी नहीं होती है। मोटर गाड़ी कर्मचारी कानून, 1961 के अनुसार एक ट्रक चालक न्यूनतम 5000/– रूपये प्रति माह वेतन, सप्ताह में एक दिन का अवकाश, जीवन बीमा एवं दुर्घटना की स्थिति में मुआवजे का हकदार है। परन्तु 1500–3000 रूपये प्रतिमाह का वेतन एवं लम्बी यात्रा के बीच एक रात के अवकाश के अलावा ट्रक चालक को क्या मिलता है?

(ग) ज़रा सी गलती होने पर आम जनता के साथ–साथ पुलिस भी ट्रक ड्राइवर के साथ कठोरता से पेश आती है ।

(घ) ट्रक चालक गरीबी के कारण कभी–कभी दो चालक का काम अकेले करना पसंद करते हैं जिससे दुर्घटना की सम्भावना प्रबल हो जाती है।

(च) ट्रक मालिक प्रायः ट्रक क्षमता से अधिक सामान लादते हैं। इसके कारण ढलान या मोड़ पर ज़रा सी असावधानी से दुर्घटना के अवसर अधिक हो जाते हैं।

(छ) ट्रक चालक तो पूरी तरह ट्रक मालिकों की कृपा पर जीते हैं । अनचाहे चालकों पर आरोप लगाना, नौकरी से हटाना या कोई अन्य सज़ा निर्धारित करना या विकलांग चालकों के परिवार के सदस्यों को परेशान करना बायें हाथ का खेल है ।

(ज) भारी वाहन चालक मालिक संगठन प्रायः मालिकों के हित में निर्णय लेता है । उनके निर्णय से चालकों (चुने चालकों को छोड़कर) का कम एवं मालिकों का ज्यादा फायदा होता है ।

(8) आवश्यक कदम

ट्रक चालकों की सुरक्षा एवं उनके सुखमय जीवन हेतु निम्न आवश्यक कदम उठाये जा सकते हैं:

(क) सुनियोजित ट्रक रूट चिन्हित करना ताकि ट्रक रूट एवं विद्यमान भू–प्रयोग के कन्फिलिक्ट (Conflict) जैसे कृषि क्षेत्र, विद्यालय, पार्क, अनबाधित शोर–शराबा एवं सुरक्षा इत्यादि के बचाव क्या हो सकते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

(ख) चुनिन्दा पेट्रोल पम्प पर चिकित्सा क्लिनिक "अपना क्लिनिक" की स्थापना की जाये तथा सेक्स इन्फेक्सन एवं चर्म की निशुल्क जांच की जाए।

(ग) प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकत्ताओं द्वारा उन्हें मार्गदर्शन दिया जाए।

(घ) सुरक्षित यौन संबंधी जानकारी देते हुए पम्पलेट बंटवाना।

(च) ढाबों पर प्रसाधन से लेकर आराम घर, मनोरंजन के साधन इत्यादि की व्यवस्था करना। ढाबों को सूचना केन्द्र के तौर पर सुविधा प्रदान करना।

(छ) जिला प्रशासन पेट्रोल पम्प मालिक, ट्रक मालिक तथा सरकारी दवा भण्डार के बीच समन्वय स्थापित करना एवं ट्रक चालकों का ध्यान सुरक्षित जीवन की तरफ आकर्षित करना।

(ज) मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य एवं यौन मूल्यों को सुदृढ़ करना, धूम्रपान, मदिरापान एवं असुरिक्षत यौन को प्रशिक्षण के जरिए कम करना।

(झ) मोटर गाड़ी अधिनियम के अनुरूप वेतन, आराम तथा पारिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वाह में उचित कदम उठाना। वृद्धावस्था पेंशन, भविष्य निधि एवं बीमा योजना को सुदृढ़ करना।

(त) ट्रक मालिकों का ट्रक चालकों के प्रति सौहार्दपूर्ण एवं नम्र व्यवहार तथा ट्रक चालकों का घर परिवार वालों तथा ट्रक मालिकों से ईमानदारीपूर्ण बर्ताव।

(थ) चालक, सड़क, गाड़ी तथा वातावरण का आपस में सीधा सम्बन्ध है। अतः चालक जिस सड़क पर चलते हैं उससे प्यार करें। गाड़ी तो देवी समान पूजनीय है। माल को गंतव्य स्थान तक सुरक्षित पहुंचाएं और अपना उचित वेतन मालिक से समय पर प्राप्त करें। ट्रक चालक को चाहिए कि वे परिवार को स्नेह दें और शिक्षा दिलवाएं ताकि वे समाज में रहने योग्य बन सकें। खुद भी लोगों की नजर में ऊंचा उठकर दिखाए। तभी राष्ट्र का विकास सम्भव है।

(द) 'ऐटवा' ऐसे संस्थानों को जन्म दें, जो ट्रक चालकों/मालिकों, पेट्रोल पम्प मालिकों एवं जिला प्रशासन के बीच समन्वय स्थापित करें। चुने हुए विषय के विशेषज्ञ वक्ताओं से प्रशिक्षण दिलवाने का कार्य भी करें, तभी ट्रक उद्योग के मामले में स्वस्थ भारत की कल्पना को साकार किया जा सकेगा।

जीवन–सूत्र

स्वस्थ रहने के लिए नियमित व्यायाम करें। शरीर में चर्बी बढ़ाने वाले भोजन से परहेज करें। संतुलित भोजन लें। मानसिक तनाव से बचें और पूरी नींद लें। धूम्रपान और अल्कोहल के प्रयोग से बचें। नियमित रूप से मेडिकल जांच कराएं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हमारा सामाजिक बदलाव

विपिन कुमार

अभी पिछले दिनों चैन्नई में एक विद्यार्थी ने अपनी अध्यापिका की जीवन लीला समाप्त कर दी। कहने को तो यह केवल समाचार पत्र में छपा एक समाचार ही लगता है, किंतु इसकी पृष्ठभूमि में आज के दौर में युवा पीढ़ी किस मानसिकता में जी रही है, इसका पता चलता है।

आज जब संयुक्त परिवार समाप्ति के कगार पर हैं और शहरों में एकांकी परिवारों की बहुतायत होना इस बात का संकेत है कि बड़े–बूढ़ों का साया हम लोगों के ऊपर से हटता जा रहा है। तब दादा–दादी की कहानियों के द्वारा बच्चों को समझाना व सुलाना ही नहीं होता था, बल्कि बच्चों में अच्छे संस्कारों की नींव डालना भी होता था। परंतु हमने इस धरोहर को समझने और सहेजने की बजाए इसके लिए वृद्धाश्रम नाम की नई इमारत बना दी ताकि उनके प्यार की खुशबू हमारे बच्चों को पुराने विचारों का न बना दें।

संयुक्त परिवारों जैसी संस्था के टूटने और बिखरने का असर विवाह जैसी संस्था पर भी पड़ा है। वैवाहिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। अपने सहयोगी के प्रति आस्था में कमी आई है तथा आपसी मन–मुटावों के चलते तलाक के मामलों में वृद्धि हुई है जिसका सीधा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। आजकल ज्यादातर बच्चे मोबाइल तथा फेसबुक पर अधिक समय बिताना पसंद करते हैं। आज समाज में संचार की क्रांति सी आ गई है। नए मोबाइल फोन, लैपटॉप तथा मनोरंजन की दुनिया में नई इंग्लिश व हिंदी फिल्मों का समावेश और अंत में टीवी सीरियलों का बड़बोलापन एक नए समाज का निर्माण कर रहा है, जो पश्चिमी संस्कृति पर आधारित है। जहां बच्चों को गोद में खिलाना, साथ में सुलाना व प्यार से हाथों से खाना खिलाना अपराध माना जाता है। जहां बचपन से युवा बनने की यात्रा जल्दी ही शुरू हो जाती है। जो बातें परिजनों व बड़ों द्वारा बताई जाती थीं, वही इन नए मनोरंजन के साधनों द्वारा पता चल जाती हैं।

समाज में धर्म की संस्था का ह्रास तथा धन की सत्ता का उदय हो चुका है। पहले कुछ भी गलत कार्य करने से पहले भगवान तथा उसके बाद समाज का डर होता था। परंतु मौजूदा समय में यह डर समाप्त हो चुका है। धन की महत्ता शुरू हो चुकी है जिसके पास अधिक धन होगा, वही सर्वोपरि होगा। पहले के सामाजिक परिवेश का स्थान अमीरी तथा गरीबी नामक दो स्वरूपों ने ले लिया है। इसका असर हमारे परिवारों, इसके सदस्यों तथा बच्चों में देखा जा सकता है। इन्हीं कारणों से जिंदगी का मशीनी होना, फास्टफूड का चलन, नई बीमारियों से ग्रसित होना शुरू हो गया है। ये सब मानसिक तनाव व गलत खानपान की आदतों से पनपी हैं।

इनके कारण एक ऐसे समाज का जन्म हो रहा है, जहां भ्रष्टाचार को बुरा नहीं बल्कि उसे एक प्रक्रिया समझा जाता है। किंतु क्या हम जानते हैं कि हम ऐसे चक्र में जी रहे हैं जिसका अंत बिना किसी मकसद या उद्देश्य के अपने लिए जीना ही बचता है। क्या हम भी इस मशीनी जिंदगी का हिस्सा बनकर तथा किसी बीमारी से ग्रस्त होकर इस नश्वर शरीर को छोड़ देंगे। हमारी जिंदगी में किसी भी मकसद का ना होना हमारी त्रासदी बनता जा रहा है। क्या हम नहीं जानते कि पैसा, धन आदि हमारे साथ नहीं जाएगा। यह जानते हुए भी हम मेले में घूमने वाले पहिएनुमा झूले की तरह घूमते जा रहे हैं और उस क्षण का इंतजार कर रहे हैं जब कोई हमें आ कर रोकेगा।

काश! हमें कोई रोक पाता अन्यथा जब हम नींद से जागेंगे तो बहुत देर हो चुकी होगी।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हिंदी पुरस्कार वितरण समारोह–2011 के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री अरूण कुमार मेहता, पूर्व संयुक्त सचिव (शहरी विकास), शहरी विकास मंत्रालय का स्वागत करते हुए मुख्य नियोजक महोदय एवं दीप प्रज्ज्वलन एवं मुख्य अतिथि से पुरस्कार ग्रहण करते हुए हिंदी प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हिंदी पुरस्कार वितरण समारोह–2011 के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री अरूण कुमार मेहता, पूर्व संयुक्त सचिव (शहरी विकास), शहरी विकास मंत्रालय से पुरस्कार ग्रहण करते हुए हिंदी प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन मास–2011 के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में कवियों का स्वागत करते हुए अधिकारीगण एवं कवितापाठ करते कविगण एवं कविताओं का आनंद लेते अधिकारी एवं कर्मचारी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

संगठन में हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी निरीक्षण करती हुई श्रीमती सावित्री यादव, उपनिदेशक (रा.भा.), शहरी विकास मंत्रालय

हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी निरीक्षण करते हुए श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, अनुसंधान अधिकारी, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गृह मंत्रालय

संगठन में हिंदी प्रतियोगिता का संचालन करते श्री धनसिंह वर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं श्री ललित मेहता, हिंदी अनुवादक

संगठन में राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए राजभाषा संस्थान से शील्ड ग्रहण करते हुए सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं हिंदी अनुवादक

संगठन में हिंदी कार्यशालाओं के दौरान व्याख्यान देते अधिकारीगण

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आधुनिक समाज और नारी

तनवीर अहमद खान

औरत माँ की हैसियत से आदमी को जन्म देती है और बीबी (पत्नी) की हैसियत से मर्द के हर सुख–दुख में उसका बराबर साथ देती है, लेकिन आज के आधुनिक युग की नारी जाति के इतिहास पर नजर डालें, तो पीड़ा, दास्तां, और शोषण से नारी का इतिहास भरा पड़ा है ।

आज नारी को दासी के दर्जे पर रख दिया गया है । उन्हें मर्दों की बराबरी का दर्जा ही नहीं दिया गया है। उन पर ढेरों बंदिशें लगाई गई हैं। यह पूर्णतया गलत है। महिलाओं के तीन रूप माँ, बहन और बेटी हैं। कहतेहैं किसी ने हजरत मोहम्मद से पूछा संसार में सबसे उत्तम व्यवहार का अधिकारी कौन हैं? उन्होंने उत्तर दिया 'माता' । उसके पश्चात उत्तर मिला 'माता। फिर कौन ? उत्तर मिला 'माता' और उसके बाद फिर वही उत्तर 'माता । हाल ही में कुछ दहशतगर्दों ने पाकिस्तान में 'मलाला' नाम की लड़की को सिर्फ इसलिए गोली मार दी क्योंकि उसने लड़कियों की शिक्षा की हिमायत की थी । आज मलाला जीवन से संघर्ष कर रही है। असंख्य लोगों की दुआओं से वह शीघ्र ठीक हो जाएगी, ऐसा मेरा मानना है । महिलाओं की शिक्षा से ही समाज उन्नति करता है । अतः हमें लड़कियों को शिक्षित करना होगा । इसलिए हमें ऐसे दहशतगर्दों को डटकर जवाब देना होगा। हां, हमें लड़कियों को ऐसे उत्तम संस्कार अवश्य देने होंगे ताकि वे मर्यादा में रहते हुए समाज व देशहित में अपना योगदान दे सकें ।

हमें अपनी बेटियों को आधुनिक विचारों की शिक्षा अवश्य देनी चाहिए। परन्तु उन्हें इस बात की भी जानकारी देनी चाहिए कि वे गलत किस्म के कपड़ें न पहनें। यदि आप देखते हैं कि आपकी बेटी जरूरत से ज्यादा खुलेपन की ओर जा रही है तो उसका उचित मार्गदर्शन करें। आज देखने में आ रहा है कि लड़कियों के कपड़ें जरूरत से ज्यादा छोटे और अभद्र होते जा रहे हैं। इसके लिए कुछ हद तक माता–पिता भी जिम्मेदार है। जब उनकी बेटी ऐसी अभद्र भेषभूषा पहनकर घर से बाहर जाती है तो वे बड़े प्रसन्न होते हैं कि उनकी बेटी बहुत आधुनिक है। आजकल की लड़कियां हर खुलेपन को आधुनिकता का चौला पहनाकर अपनी मर्यादाओं का उपहास उड़ाती है।

औरतों की अपने हुस्न को खोल–खोलकर दिखाने की प्रवृति ने आज उन्हें मुश्किल में डाल दिया है । आज नारी जाति को अपने नारीत्व को समझने की जरुरत है, तभी वह अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों से छुटकारा पा सकती है।

वर्तमान परिवेश में महिलाओं के दुःख को महान शायर साहिर लुधियानवी जी ने कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है–

लोग औरत को फकत जिस्म समझ लेते हैं,

रुह भी होती है उसमे, यें कहां सोचतें हैं,

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जबर से नस्ल बढ़े, जुल्म से तन मेल करे,

ये अमल हम में हैं, बेइल्म परिंदों में नहीं,

हम जो इंसानों की तहजीब लिए फिरते हैं,

हम सा वहशी कोई जंगल के दरिंदों में नहीं ।

औरतों को यह बात समझनी चाहिए कि वे समाज में किसी से कम नहीं हैं फिर वे अश्लीलता और नग्नता से भरी वासना की खाई में क्यों बही जा रही हैं । इसका विरोध स्वयं नारी को करना चाहिए और उन्हें नारीत्व की सीमा में रहते हुए अपने घरों से निकलना चाहिए ।

नाकाम वो रहा जो मुसीबत से डर गया,

वो हो गया सफल जो भला काम कर गया ।

भिखारी ने क्लीनिक पर जाकर आवाज लगाई, 'कुछ खाने को दे दो साहब।
दो दिन से भूखा हूं।'
'तमातर खाओं।' अन्दर से आवाज आई।
'चलो, टमाटर ही दे दो।' भिखारी ने राहत की सांस लेते हुए कहां।
'अरे भाई, क्यो परेशान कर रहे हो?' कम्पाउडर बाहर आकर बोला, 'डॉक्टर साहब तोतले हैं। वह कह रहे है कि कमाकर खाओ। तुम समझ रहे हो, टमाटर खाओ।'

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महिलाएं और व्यक्तिगत वित्त

आभा अग्रवाल

भारत में सदियों से औरत का अस्तित्व घर की चारदीवारी तक ही सीमित रहा है। वह हमेशा से ही अपने आपको गृहस्थी के कामों में व्यस्त रखती है और बाहर के कामों की पूरी जिम्मेदारी मर्दों की रही है। इसी कारण वित्त से संबंधित सभी निर्णयों पर हमेशा पुरूषों का एकाधिकार रहा है। महिलाओं ने पुरूषों के वित्तीय निर्णयों को आंख मूंदकर स्वीकार किया है। महिलाओं ने स्वयं ही पुरूष को अपने ऊपर हावी होने की स्थिति उत्पन्न की है क्योंकि वित्तीय मामलों में वे स्वयं निर्णय लेने में अक्षम महसूस करती हैं।

वास्तविक स्थिति यह नहीं है, बल्कि यह औरत की एक मनोवैज्ञानिक सोच है जोकि सदियों से उनकी मानसिक प्रवृत्ति है। उन्होंने अपने आपको गृहस्थी के कामों में व्यस्त रखा और कई महिलाएं अपनी कमाई को पुरूषों की तुलना में गौण आय मानती हैं।

अब महिला साक्षरता बढ़ने के कारण महिलाओं की स्थिति में बहुत सुधार आ रहा है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली की ओर बढ़ती दुनिया के साथ भारतीय समाज और महिलाओं द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका एक गतिशील परिवर्तन के दौर से गुजर रही हैं। समाज में महिलाएं आज और अधिक गतिशील भूमिका निभा रही है। वे अपनी जिंदगी के निर्णय स्वयं लेने में विश्वास करती है और महिलाएं स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम हो गयी है।

आधुनिक महिलाएं आत्मनिर्भर हो गई है और जिंदगी के हर निर्णय में पुरूषों के साथ पूरी तरह से जुड़ गई हैं। वे अपने कॅरियर के प्रति बहुत सजग हैं। कॅरियर की खातिर वे शादी के प्रति ज्यादा उत्सुक नहीं हैं। अपितु अपने कॅरियर को वरीयता देती हैं। इसी कारण वह देर से शादी करती हैं और अपने मॉ–बाप के प्रति जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभाती हैं।

आधुनिक महिलाएं कॅरियर और गृहस्थी की दोहरी भूमिका पूरी सजगता से निभाती हैं। इसको निभाना उनके लिए बहुत कठिन होता है क्योंकि पुरूष प्रधान समाज होने के कारण गृहस्थी की जिम्मेदारी सिर्फ औरत की समझी जाती है। पुरूष के दिमाग में यह मानसिकता बहुत अच्छी तरह से भर दी गई है जिसको उच्च शिक्षा, अच्छे वेतन और बेहतर कॅरियर में उच्च पद पाकर मिटा पाने में सफल नहीं हुए हैं। इसी कारण आधुनिक पीढ़ी की लड़कियां अपने कॅरियर को घर–गृहस्थी के लिए छोड़ना चाहती हैं और शादी उनके मन से कोसों दूर है। इस पुरूष प्रधान समाज में शादी के बाद महिलाओं को अपने सपनों और कॅरियर की तिलांजलि देनी पड़ती है। यह परंपरा सदियों से चली आ रही है। उनके पति उनके कॅरियर और सपनों की ज्यादा कद्र नही करते हैं क्योंकि उनके दिमाग में पुरानी सड़ी–गली सोच अभी–भी विद्यमान है। औरत की जिम्मेदारी बच्चे और घर की देखभाल तक सीमित है। इसी कारण आजकल परिवार बिखरने के कगार पर आ गए हैं और तलाक की संख्या शहरों में प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। आत्मनिर्भर होने के कारण औरत को यह तक करने की छूट है कि वह शादी के रिश्ते को तोड़कर, बाहर आ सकती है। शादीशुदा औरतें भी अपनी जिंदगी के हर निर्णय स्वयं लेने पर विश्वास करने लगी है क्योंकि पुरूष के अहम और संकुचित सोच ने उन्हें ऐसा करने पर मजबूर कर दिया है। इस डॉवाडोल पारिवारिक स्थिति के कारण आजकल के आधुनिक समाज में स्त्रियों को अपने निजी वित्त का प्रबंध करना और निर्णय लेना बहुत अहम हो गया है। वित्तीय नियोजन की महत्वता की विषम परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए आधुनिक महिलाओं को अपने भविष्य के लिए वित्तीय नियोजन

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अलग से करना चाहिए जिसका उनके पति या परिवार से कोई संबंध नहीं हो। पुरूष प्रधान समाज के कारण औरत का वित्तीय तौर पर मजबूत और आत्मनिर्भर होना अति–आवश्यक है जिससे वे परिवारवालों पर आश्रित न रहें। वित्तीय आवश्यकताओं और चुनौतियों के कारण औरतों को अपना वित्त–नियोजन माँ–बाप और पति से अलग करना चाहिए। औरतों को सक्रिय रूप से अपने वित्तीय नियोजन के बारे में सोचना चाहिए ताकि वित्तीय मामलों के प्रति उनका जो डर है, उस पर वे काबू पा सकें और पैसे के बारे में सही निर्णय लेने की स्थिति में हों। इसी प्रकार उन्हें अन्य पारिवारिक निर्णय लेने चाहिएं। उनको वित्तीय स्रोतों पर हावी होने और उन्हें नियंत्रित करने का चुनाव करना चाहिए।

महिलाओं के लिए वित्तीय निर्णयों के प्रति जागरूकता और सजगता अति आवश्यक है क्योंकि विषम परिस्थितियों में उनको इसकी जानकारी लाभदायक साबित होती है। अपने बूढ़े माँ–बाप की देखभाल करने के लिए पैसा जरूरी है। पति इस मामले में पैसा खर्च करने में हिचक सकता है।

पति की नौकरी में स्थानांतरण होने पर भी औरत के कैरियर की संभावनाओं और वित्तीय स्थिति पर असर पड़ सकता है। उनको अपनी नौकरी छोड़कर पति के साथ जाना पड़ जाता है। इसकी जानकारी उन्हें पूरी तरह से होनी चाहिए क्योंकि ऐसे कार्य के छूटने से उनके कॅरियर पर बुरा असर पड़ता है।

बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी औरत की होती है इसलिए उनको कॅरियर का त्याग करना पड़ता है। स्त्री को इस बात का अहसास होना चाहिए कि नौकरी को बीच में छोड़ने से उनकी कॅरियर संभावनाओं और आत्मनिर्भरता पर गहरा असर पड़ सकता है।

पुरूष प्रधान कॉरपोरेट जगत में अब बैंकिंग और वित्तीय सेक्टरों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत ज्यादा है। यदि वास्तविकता को देखें तो पता चलेगा कि स्टॉक मार्किट में सूचीबद्ध 11 शीर्ष बैंकों में से 5 बैंकों में महिलाएं बोर्ड की सदस्या हैं और दो बैंकों में मुख्य कार्यकारी अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। ईएमए पार्टनर्स, वैश्विक कार्यकारी खोज फर्म के द्वारा कराए गए 240 शीर्ष भारतीय कंपनियों के सर्वेक्षण से यह पता चला है कि आधी से ज्यादा भारतीय महिलाएं कार्यकारी बैंकिंग और वित्तीय सेवा प्रदान करने वाले उद्यमों में उच्च ओहदे पर कार्यरत हैं। कुछ औरतों का विवरण नीचे दिया गया है जो देश की प्रमुख भारतीय और विदेशी बैंकों में शीर्ष पदों पर काम कर रही हैं:

बैंक	**प्रमुख का नाम**
आईसीआईसीआई	चन्द्रा कोचर
एक्सिस बैंक	शिखा शर्मा
एचएसबीसी	नैना लाल किदवाल
जे.पी. मोरगन	कल्पना मोड़पाड़िया
आरबीआई	उषा जोरहट
वित्त सचिव	सुषमा नाथ
इंफ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेंसियल सर्विस (आईआईएलएस)	अरूणा सुन्दाराजन

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

यदि औरत पढ़ी–लिखी समझदार होगी तो परिवार भी शिक्षित होगा और बच्चों को वित्त–प्रबंधन के बारे में जानने का अवसर बचपन से प्राप्त होगा। औरतों को परिवार के भविष्य और वित्तीय लक्ष्यों (बच्चों की शिक्षा से संबंधित खर्चों) की अच्छी समझ होती है। महिलाएं बजट की रानी हैं क्योंकि वे घर का बजट बनाने में माहिर होती हैं और आदमी की तुलना में अधिक बचत करती हैं। इसी कारण समय की आवश्यकता को देखते हुए पुरूष वर्ग को औरत को परिवार के हर निर्णय में शामिल करना चाहिए क्योंकि यह काम परिवार की भलाई के लिए है। औरतों को परिवार के हर वित्तीय निर्णयों में पूरी एकाग्रता और तन्मयता से भाग लेना चाहिए क्योंकि यह उनकी मेहनत की कमाई है। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि पैसे के मामले में विश्वास नहीं करना चाहिए, अपितु आपको परिवार की वित्तीय परिसंपत्तियों के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। विपदा के समय में यह जानकारी बहुत काम आती है। इस लेख के आखिर में इतना कहना जरूरी है कि वित्तीय नियोजन जहां पुरूषों के लिए महत्वपूर्ण है, वहीं यह महिलाओं के लिए अनिवार्य है।

सन्यासी बनूं या गृहस्थ

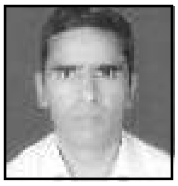

संकलनः अमीर सिंह

एक जिज्ञासु कबीर साहिब के पास पहुंचा और बोला, दो बातें सामने हैं – सन्यासी बनूं या गृहस्थ। कबीर साहिब ने कहा, देख लो, दोनों एक ही तरह के काम हैं। इसलिए तुम्हारी मर्जी है कि तुम क्या बनो। लेकिन जो भी बनो आदर्श बनो। आने वाले ने पूछा, इसका क्या मतलब, आप दोनों को ही एक जैसा बता रहे हैं। कबीर साहिब ने अपनी बात समझाने के लिए दो काम किए। पहले उन्होंने अपनी पत्नी को बुलाया। भरी दोपहरी थी, चारों ओर काफी प्रकाश था पर उन्होंने पत्नी से दीपक जलाकर लाने को कहा, ताकि वे कपड़ा अच्छी तरह बुन सकें। पत्नी दीपक जला लाई और बिना बहस किए रखकर चली गई। कबीर साहिब ने कहा–गृहस्थ बनना हो तो परस्पर ऐसे ही बनना कि दूसरे की इच्छा ही अपनी इच्छा बन जाए। कोई सवाल या कोई विरोध नहीं।

दूसरा उदाहरण देने के लिए कबीर साहिब उस जिज्ञासु को लेकर एक टीले पर गए। वहां एक वृद्ध महात्मा रहते थे। वे कबीर साहिब को जानते नहीं थे। कबीर साहिब ने उनसे पूछा, आपकी उम्र कितनी है? वे बोले – अस्सी बरस। इधर–उधर की बातें करने के बाद कबीर ने कहा, बाबा जी उम्र क्यों नहीं बताते? संत ने कहा ––बेटे, अभी तो बताया था, अस्सी बरस। तुम भूल गए हो। टीले से आधी चढ़ाई उतर लेने पर कबीर साहिब ने संत को जोर से पुकारा और नीचे आने के लिए कहा, वे हांफते–हांफते चले आए। कारण पूछा तो कहा, वहां एक जरूरी सवाल पूछना भूल गया था – आपकी उम्र कितनी है? संत को तनिक भी क्रोध नहीं। वे उसे पूछने वाले की विस्मृति मात्र समझे और कहा– अस्सी बरस। फिर हँसते हुए वापस टीले पर चढ़ने लगे। कबीर साहिब ने कहा, संत बनना हो तो ऐसा ही बनना, जिसे क्रोध न आए।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भ्रष्टाचार एवं विकास

अनिल कान्त मिश्रा

कोई भी देश तभी महाशक्ति बन सकता है जब उस देश में भ्रष्टाचार पर अंकुश हो। भ्रष्टाचार एक कैंसर जैसी बीमारी है जो देश को खोखला बना देती है यह देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा है। महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि "भ्रष्टाचार और कपट लोकतन्त्र का अपरिहार्य उत्पाद नहीं होना चाहिए" लेकिन वह आज देखने को मिल रहा है। किसी भी देश को महाशक्ति बनने के लिए कुशल जनशक्ति, कड़ी मेहनत, समर्पित भाव तथा भ्रष्टाचार मुक्त मशीनरी की आवश्कता होती है लेकिन आज हमारे देश में इन सभी की कमी महसूस हो रही है । इसका सबसे मुख्य कारण भ्रष्टाचारियों और नौकरशाही, राजनीतिज्ञों और अपराधियों के बीच गठजोड़ है। यह ऐसी बीमारी है जिसके इलाज के लिए हर भारतीय को प्रयास करना होगा।

आपने देखा होगा कि कुछ लोग जब सत्ता में आते है तो भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए दृढ़ संकल्प की घोषणा करते हैं लेकिन जल्द ही वे स्वयं भ्रष्ट हो जाते हैं और धन संचय में लीन हो जाते हैं। आधुनिक युग में व्यक्ति का जीवन अपने स्वार्थ तक सीमित होकर रह गया है। प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ प्रमुख हो गया है। समाज में अनैतिकता, अराजकता और स्वार्थ से युक्त भावनाओं का बोलबाला हो गया है जिसके परिणामस्वरुप भारतीय संस्कृति और उसका पवित्र तथा नैतिक स्वरुप धुंधला हो गया है। इसका प्रमुख कारण समाज में फैल रहा भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार के इस विकराल रुप का सबसे बड़ा कारण है, आज के अर्थप्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति किसी भी तरीके से धन प्राप्त करने में लगा हुआ है। कमरतोड़ महंगाई भी इसमें इजाफा कर रही है। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ जाने के कारण एवं उसे पूरा करने के लिए वह मनचाहे तरीके अपना रहा है। भारत में दिन–प्रतिदिन भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। किसी भी क्षेत्र में चले जाएं, भ्रष्टाचार दिखाई देता है। भारत के कुछ सरकारी व गैर–सरकारी विभाग इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है। आप अपना कोई भी काम करवाना चाहते हैं तो बिना रिश्वत खिलाए काम करवाना सम्भव ही नहीं है। ऊपर से नीचे तक पैसे का उपहार चढ़ाना ही पड़ेगा। नामी स्कूलों में बच्चों का दाखिला कराना हो तो डोनेशन के नाम पर मोटी रकम की मांग की जाती है।

बैंक देश की अर्थव्यवस्था का आधार स्तम्भ होते हैं, वे भी आज भ्रष्टाचार के इस रोग से अछूते नहीं हैं। देश की आंतरिक सुरक्षा का भार हमारे पुलिस प्रशासन पर होता है परन्तु आए दिन यह समाचार आते रहते हैं कि अमुक पुलिस अफसर ने रिश्वत लेकर एक गुनहगार को छोड़ दिया है। इस तरह का भ्रष्टाचार भारत को खोखला बना रहा है। हमारे समाज में नाग की तरह फन फैला रहे इस विकराल नाग को मारना ही होगा। सबसे पहले आवश्यक है कि व्यक्ति के मनोबल को ऊँचा उठाया जाए। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए स्वयं को भ्रष्टाचार से बचाना होगा। यही नहीं शिक्षा में कुछ अनिवार्य अंश जोड़ने होंगे, जिससे हमारी नई पीढ़ी में प्राचीन संस्कृति तथा नैतिक प्रतिमानों को संस्कार स्वरुप विकसित किया जा सके। न्यायिक व्यवस्था को कठोर बनाना होगा तथा सामान्य जन को आवश्यक सुविधाएं भी सुलभ करानी होगी। इसी आधार पर आगे बढ़ना होगा, तभी इस स्थिति में कुछ सुधार की अपेक्षा की जा सकती है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ब्रिक्स : उभरती शक्ति

आर.पी. सिंह

बिक्स यानी बीआरआईसीएस (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) बड़ी अर्थव्यवस्था वाले दुनिया के पांच महत्वपूर्ण देशो का संगठन । ब्रिक्स देश दुनिया की 43 फीसदी आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा इनका सकल घरेलू उत्पाद 18000 अरब डालर का है । इन देशों में दुनिया का चौथाई से अधिक भूभाग हैं ।

2001 में गोल्डमेन सैक्स से जुड़े आर्थिक विश्लेषक जिम ओ नील ने ब्रिक (जिसमें दक्षिण अफ्रीका शामिल नहीं था) की अवधारणा दी । नील ने अपनी रपट (रिपोर्ट) में दावा किया कि 2050 तक ब्रिक समूह के देशों की संयुक्त अर्थव्यवस्था वर्तमान में धनी देशों की अर्थव्यवस्था को पीछे छोड़ देगी । यद्यपि नील ने अपनी रिपोर्ट में यूरोपीय देशों के संगठन की तरह किसी भी प्रकार के आर्थिक ब्लॉक या संगठन बनाने की बात नहीं की थी ।

देशों की स्थिति:

सदस्य	पीपीपी में जीडीपी (ट्रिलियन डालर)	पीपीपी में प्रति व्यक्ति आय (अमेरिकी डालर)	मानव विकास सूचकांक	जनसंख्या (करोड़)
भारत	4,469	3,709	0.547	121
चीन	11,316	8,394	0.687	133
ब्राजील	2,309	11,767	0.718	19
रुस	2.376	16,687	0.755	14
द. अफ्रीका	555.340 अरब	10,977	0.619	5

2008 में विश्व स्तर पर जानी जाने वाली पत्रिका "इकोनोमिस्ट" ने विभिन्न देशों के सामाजिक और आर्थिक विषयों के आकड़ों की एक सूची प्रकाशित की । इस सूची में प्रकाशित आंकड़ों को भविष्य में देखने पर ब्राजील, रुस, भारत और चीन (ब्रिक) देशों के आर्थिक आकड़ों में एक समानता दिखायी दी । जिससे बाद में इन ब्रिक देशों के राजनीतिक क्लब या संघ बनाने की बात को बल मिला । इसी इरादे से 16 मई, 2008 को इन चार देशों (ब्राजील, रुस, भारत, चीन) जिन्हें ब्रिक नाम से जाना गया, के विदेश मंत्रियों की एक अनौपचारिक बैठक रूस में हुई जिसमें इन राष्ट्रों के समूह के अस्तित्व के बारे में चर्चा हुई और आगे का रास्ता सुगम हुआ । इसी क्रम में ब्रिक का पहला सम्मेलन जून, 2009 में रूस में आयोजित किया गया जिसमें ब्रिक का गठन हुआ ।

ब्रिक के गठन का प्रमुख मकसद था– भविष्य में एक साथ मिलकर बेहतर तरीके से काम करना, वित्तीय संस्थाओं में सुधार पर बातचीत, समूह के विकासशील देशों की वैश्विक मुद्दों में भागीदारी और नई वैश्विक रिजर्व करंसी की वकालत ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ब्रिक शिखर सम्मेलनः

1. ब्रिक देशों का पहला शिखर सम्मेलन 16 जून, 2009 को रूस के येकातेरिंबर्ग में रूस के प्रेसीडेन्ट महामहिम मेदवेदेव की मेजबानी में हुआ। इस सम्मेलन में समूह देशों के अस्तित्व के बारे में चर्चा हुई और इस समूह का गठन हुआ।

2. ब्रिक के सदस्य देशों का दूसरा शिखर सम्मेलन 16 अप्रैल, 2010 को ब्राजील के ब्रासिलिया शहर में हुआ।

3. तीसरा शिखर सम्मेलन चीन कें सान्या में चीन के राष्ट्रपति हू जिन्ताओं की अध्यक्षता में 14 अप्रैल, 2011 में हुआ। इस सममेलन में दक्षिण अफ्रीका इस समूह में सामिल हुआ। इस प्रकार इस समूह के पांच सदस्य हो गए और इस समूह का नाम ब्रिक से ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) हो गया। इस सम्मेलन में सदस्य देशों के नेताओं ने एक संयुक्त घोषणा पत्र जारी किया जिसमें वैश्विक अर्थव्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय मसलों और विकास से जुड़े पक्षों पर ब्रिक्स देशों में सहमति बनी।

   दुनिया के पांच उभरती अर्थव्यवस्था वाले देशों के इस (ब्रिक्स) शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहे चीन के राष्ट्रपति ने अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक और वित्तीय तंत्र में सुधार का आह्वान किया। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि वैश्विक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए न्यायोचित, समेकित और बेहतर प्रबंधन युक्त अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक और वित्तीय तंत्र की स्थापना करनी चाहिए। इसके लिए इस तंत्र में उभरते बाजारों और विकासशील देशों के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने की जरुरत है।

   इस सम्मेलन में एक समान और न्यायोचित अंतरराष्ट्रीय मुक्त व्यापार तंत्र को बढ़ाने और संरक्षणवाद के विरोध पर जोर दिया गया तथा यह कहा कि हमें बहुपक्षीय व्यापार को मजबूती प्रदान करते हुए दोहा दौर की वार्ता के लक्ष्य को जल्द से जल्द हासिल करना चाहिए। दुनिया की अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी समस्या विकासशील देशों के अपर्याप्त विकास की समस्या के प्रति चिंता जताते हुए ब्रिक्स देशों ने विकासशील देशों के विकास के लिए अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की।

4. ब्रिक्स का चौथा शिखर सम्मेलन – वैश्विक स्थिरता, सुरक्षा और समृद्धि के लिए ब्रिक्स की साझेदारी "थीम" के साथ चौथा ब्रिक्स शिखर सम्मेलन भारत की मेजबानी में भारत की राजधानी दिल्ली में 28 मार्च, 2012 को हुआ। ब्रिक्स समूह का इतिहास बहुत पुराना नहीं है लेकिन 43 प्रतिशत आबादी और 26 प्रतिशत हिस्से वाले इस समूह ने बहुत कम समय में उभरती हुई ताकत के रुप में छाप छोड़ी है।

कार्यसूचीः

1. यूरोप के आर्थिक संकट और अमेरिका द्वारा ईरान पर लगाए गए प्रतिबंधों के मद्देनजर कच्चे तेल की कीमत में बढ़ोतरी व ईरान के साथ संबंधों के सम्बंध में चर्चा।

2. सदस्य देशों के बीच कूटनीतिक संबंधों कों बेहतर बनाना और दुनिया में एक मंच के रुप में अपनी भागीदारी बढ़ाना।

3. सदस्य देशों के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना, व्यापार को बढ़ाना और क्षेत्र की स्थितियों के संबंध में चर्चा।

   ब्रिक्स देशों ने 2015 तक आपसी व्यापार में दोगुनी वृद्धि कर इसे 500 अरब डालर तक ले जाने का लक्ष्य तय किया है। ब्रिक्स व्यापार मंच का गठन 2011 में हो चुका था। इस सम्मेलन में व्यापार बढ़ाने के लिए आपसी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बाधाओं को हटाने पर भी सहमति बनी । इसके अतिरिक्त कृषि, ऊर्जा, ढ़ांचागत संरचना, खनन, स्वास्थ्य सेवा, औषधि और सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी जैसे क्षत्रों में अवसरों के दोहन की भी जरुरत समझी गई ।

ब्रिक्स देशों ने अमेरिका और यूरोपीय प्रतिबंधों के बावजूद ईरान के साथ संबंध बनाए रखने पर जोर दिया । उनका मानना है कि कच्चे तेल की कीमत में हो रही वृद्धि से वैश्विक अर्थव्यवस्था प्रभावित हो रही है और ईरान कच्चे तेल की आपूर्ति में अहम् भूमिका रखता है । अन्त में इस बात पर सहमति हुई कि हमें ईरान के साथ सामान्य संबंध बनाए रखना चाहिए क्योंकि वे किसी देश की घरेलू नीतियों से बंधे नहीं है ।

4. स्थानीय मुद्रा में ऋण संबंधी सुविधाएं प्रदान करने के लिए विश्व बैंक की तर्ज पर संयुक्त विकास बैंक की स्थापना ।

संयुक्त घोषणा–पत्र :

ब्रिक्स के चौथे सम्मेलन में एक संयुक्त घोषणा–पत्र जारी किया गया जिसमें कहा गया कि अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष में पश्चिमी ताकतों (अमेरिका व यूरोप) को अपने वोटिंग अधिकार कम कर देने चाहिए क्योंकि 187 देशों की सदस्यता वाले आईएमएफ में अकेले अमेरिका का वोटिग अधिकार 16.75 फीसदी है, वहीं यूरोप के छः देशों (जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन, इटली, नीदरलैंड, और स्पेन) का वोटिंग अधिकार 21.26 फीसदी है । यही वजह है कि दूसरे विश्व युद्ध के बाद 1945 में बनी दो अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में से आईएमएफ का मुखिया हमेशा यूरोप और विश्व बैंक का अध्यक्ष हमेशा अमेरिका का रहा है । गौरतलब है कि ब्रिक्स के देश दुनिया की तकरीबन आधी आबादी और विश्व अर्थव्यवस्था के पांचवे हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं । अतः आईएमएफ में सदस्य देशों के वोटिंग अधिकारों में बदलाव की आवश्यकता है । यह आईएमएफ के औचित्य और प्रभावोत्पादकता को सुनिश्चित करने और आईएमएफ की उधार क्षमता को बढ़ाने के प्रयास की सफलता के लिए भी आवश्यक है ।

विकसित देशों की नीतियों के कारण पिछले पांच वर्षों से विश्व अर्थव्यवस्था की हालत डांवाडोल है । अतः यह नितांत जरुरी है कि विकसित देश जिम्मेदार आर्थिक व वित्तीय नीतियां अपनाएं । अतिशय वैश्विक तरलता पैदा करने से बचें और ऐसे संरचनागत सुधारों को लागू करें जिससे रोजगार के अवसर पैदा हों और आर्थिक विकास को गति मिले ।

ब्रिक्स देशों ने आपसी व्यापार में अमेरिकी मुद्रा डालर की भूमिका घटाने का फैसला किया और यह तय किया गया कि व्यापारियों को ऋण सुविधा स्थानीय मुद्राओं में दी जाएगी । इस संबंध में दो अलग–अलग समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए ।

ब्रिक्स देशों में विकास संबंधी ऋण देने वाले बैंकों द्वारा किए गए समझौते से उनको अपनी मुद्राओं में ऋण की सुविधा होगी और व्यापार को बढ़ाने में मदद मिलेगी । इससे ब्रिक्स देशों में न केवल व्यापार और निवेश को बढ़ावा मिलेगा बल्कि वैश्विक आर्थिक संकट के समय भी सदस्य देशों की आर्थिक वृद्धि की संभावनाओं के संरक्षण में मदद मिलेगी ।

ब्रिक्स विकास बैंक की स्थापना के संबंध में सदस्य देशों के वित्त मंत्रियों को इस प्रस्ताव की समीक्षा कर अगले शिखर सम्मेलन तक रिपोर्ट देने के लिए कहा गया है ।

रूस और चीन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के स्थाई सदस्य हैं । साथ ही वे ब्रिक्स से भी जुड़े हुए हैं । वे संयुक्त राष्ट्र में भारत, ब्राजील तथा दक्षिण अफ्रीका को महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उनकी आकांक्षाओं का समर्थन करते हैं । संयुक्त घोषणा पत्र मे कहा गया है कि संयुक्त राष्ट्र में इसकी सुरक्षा परिषद् समेत समग्र सुधारों की

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जरुरत की पुष्टि करते हैं। ऐसा करना आज की दुनिया की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए जरुरी है ।

घोषणा पत्र में पश्चिम एशिया, उत्तरी अफ्रीका और पश्चिम अफ्रीका में मौजूदा घटनाक्रमों पर बेहद चिंता जताई गयी तथा यह उम्मीद की गई कि ये देश जनता की आकांक्षाओं के मुताबिक शांति, स्थिरता और तरक्की की ओर आगे बढ़ें । सभी देशों को एक दूसरे राष्ट्र की स्वतंत्रता, संप्रभुता, एकता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करना चाहिए और बल प्रयोग से परहेज करना चाहिए ।

समीक्षा

अमेरिका व पश्चिम के अमीर देशों को पहली बार उभरती ब्रिक्स /उभरती अर्थव्यवस्था वाले देशों की जोरदार चुनौती मिली है । पांच देशों के समूह "ब्रिक्स" के चौथे सम्मेलन से निकली यह आवाज दुनिया की बदलती अर्थव्यवस्था और शक्ति संतुलन का जोरदार संकेतक है । इस गुट ने विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में अमेरिका के वर्चस्व को ललकार कर अपने अभियान की शुरुआत की है । ब्रिक्स के बैनर तले इस गुट ने अपनी अलग राजनीतिक और आर्थिक पहचान बनाने की पहल दिखायी । विश्व बैंक जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं अमेरिका और पश्चिमी देशों के वर्चस्व से बाहर नहीं निकल पा रही है और गरीब तथा उभरती आर्थिक ताकतों वाले देशों की जरुरतों को नजर अंदाज करती हैं । पांच देशों का यह समूह इसका जबाव "ब्रिक्स विकास बैंक" की स्थापना से देना चाहता है जो सदस्य देशों के अलावा दुनिया के गरीब और जरुरतमंद देशों को बुनियादी जरुरतों और विकास के लिए फंड मुहैया कराएगा । दिल्ली सम्मेलन में इस बैंक की अवधारणा रखी गयी और इस पर तेजी से काम करने का संकल्प लिया गया ।

ब्रिक्स ने जोरदार आवाज उठायी है कि अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संगठनों के फैसले में उनकी भागीदारी बढ़ायी जाए । अमीर देशों के लिए ब्रिक्स की आवाज को अनसुना करना आसान नहीं होगा क्योंकि दुनिया का चौथाई से अधिक भूभाग रखने वाले इन देशों में विश्व की 43 फीसदी से अधिक आबादी रहती है। विश्व के कुल जीडीपी का चौथाई इन पांच देशों से बनता है और दुनिया के कुल स्वर्ण भंडार और विदेशी मुद्रा का आधा इनके खजाने में जमा है। ब्रिक्स का यह आत्मविश्वास उनकी बदलती तकदीर का नमूना है जो अपने बढ़ते विदेशी मुद्रा भंडार का प्रयोग अमीर देशों की डूबती अर्थव्यवस्था की नैया को पार लगाने में कर रहे हैं । इस संगठन के सदस्य फैसले के अनुसार वे अपनी आपसी कारोबार में डॉलर की जगह स्थानीय मुद्रा को तरजीह देंगे । शीत युद्ध के बाद से ब्रिक्स की यह पहली पहल है जो पश्चिमी देशों के खेमे के बाहर से आयी है । यह सच है कि अमेरिका या पश्चिम के अमीर मुल्क ब्रिक्स को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं । उनका मानना है कि यह समूह अपने आप में इतने अंतरविरोधों से जकड़ा हुआ है कि इसका कोई भविष्य नहीं है । यह बात काफी हद तक सही भी है क्योंकि इस गुट के देशों की राजनीतिक व्यवस्था और आर्थिक हैसियत अनेक मामलों में एक–दूसरे की विरोधाभासी दिखाई देती है । चीन और भारत क्रमशः दुनिया के सबसे बड़े तानाशाही और लोकतांत्रिक व्यवस्था के आइने हैं तो लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था वाले रूस का इस गुट में स्थान अटपटा सा लगता है । चीन की आर्थिक ताकत गुट के अन्य देशों को उसके वर्चस्व को लेकर भयभीत रखती है। ऐसे में प्रस्तावित "ब्रिक्स विकास बैंक" की कल्पना किस हद तक साकार होगी, यह समय ही बताएगा । चीन इस गुट के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संगठनों की रुपरेखा बदलने का दबाव बना रहा है लेकिन दूसरी ओर वह संयुक्त राष्ट्र खासकर सुरक्षा परिषद् में बदलाव के लिए उठती आवाजों का विरोध भी करता है । किन्तु यदि यह समूह अपने आपसी अंतरविरोधों को दरकिनार कर एकजुटता से काम करता रहा तो इसमें कोई संदेह नही है कि यह गुट विश्व अर्थव्यवस्था को बदलने और विश्व में अमीर देशों की तानाशाही समाप्त करने मे सक्षम होगा और गरीब देशों को विकास के साधन मुहैया कराने में सहायक होगा । ब्रिक्स विश्व के मानचित्र पर एक नई शक्ति के रुप में उभर कर आएगा।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आतंकवाद से कार्यालय की सुरक्षा

आर. डी. मीना

भारतवर्ष का इतिहास उठाकर देखने से पता लगता है कि भारतवासियों ने हमेशा मानवता की मिसाल दी है। हिन्दुस्तान को आजाद हुऐ 60 वर्ष हो चुके हैं फिर भी हिन्दुस्तान–पाकिस्तान की लड़ाई में बेकसूर, लाचार, अनजान और सीमा पर बैठे हमारे जवान मारे जा रहे हैं। मनुष्य के साथ अमानवीय व्यवहार किया जा रहा है। हम भारतवासियों का क्रूरता एवं आतंकवाद से तो दूर–दूर तक का रिश्ता भी नहीं है। हम हिन्दुस्तानियों के दिल में राम–रहीम, वाहेगुरु, ईसामसीह के द्वारा दिया गया संदेश, दयाभाव एवं भाई–चारे की भावना से मिल–जुल कर रहने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। इसलिए हमारा देश अनेकता में एकता का प्रतीक है।

आज आतंकवाद का कारण हमारी सोच और तनावयुक्त जिन्दगी में पीछे छूटते वो हमारे रिश्ते है जो दूरियों में बदल गऐ हैं। उसका ही फायदा उठाकर चन्द स्वार्थी लोग आतंकवाद के सहारे समाज में आतंक फैला रहे हैं जिनका उद्देश्य समाज में आतंक का भय बनाकर, समाज को भयभीत करना और देश पर शासन कर अपने नापाक इरादे पूरा करना है।

आतंकवाद किसी व्यक्ति, समुदाय, धर्म या समाज की उपज नहीं बल्कि कुछ स्वार्थी लोगों की सोची–समझी चाल का परिणाम है जो अपने स्वार्थ की खातिर समाज में नफरत, द्वेषभावना और भय का माहौल तैयार कर अपना शासन इसलिए चलाना चाहते हैं कि व्यक्ति, समुदाय, धर्म या समाज उनके अधीन रहकर उनकी नापाक इच्छओं का पालन करता रहे।

आज आतंकवाद ने आक्रामक रुख़ अपना लिया है जिसका परिणाम हम बार–बार देख रहे हैं कि बेकसूर, लाचार, अनजान लोग आतंकवाद का शिकार हो रहे हैं। पर यह भी सच है कि चन्द विशिष्ट लोगों को छोड़कर, आज तक गरीब, अनजान, बेकसूर और लाचार लोग ही आतंकवाद के शिकार हुए हैं। ऐसे में हम सब का कर्त्तव्य है कि हम अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए सजग रहें एवं आतंकवाद से कार्यालय की सुरक्षा में अपना पूरा सहयोग दें।

आतंकवाद से कार्यालय की सुरक्षा के संदर्भ में कुछ बहुमूल्य जानकारियों के अलावा कड़ाई से अपने–अपने कर्त्तव्यों का पालन करने की अपील भी करना चाहूंगा। क्या कारण है कि 9/11 के बाद से आज तक अमेरिका में दुबारा आतंकवाद को बढ़ने नहीं दिया गया है। क्यों, कैसे उसकी पुनरावृत्ति नहीं हो सकी? क्यों, हमारे ही देश में उसकी पुनरावृत्ति हो रही है। हमारे देश के लोग कर्त्तव्य अपरायणता, मन्द होती देशभक्ति की भावना, भ्रष्टाचार और चन्द रुपयों की खातिर अपना ईमान बेचकर जीना पसंद कर रहे हैं। उसका परिणाम है कि आतंकवाद ने पुनः हमारी उच्च न्यायप्रणाली की दहलीज पर बम विस्फोट कर यह संदेश देशवासियों को दिया है कि हमारा देश आतंकवादियों के रहमों करम पर चल रहा है।

एक कहावत है कि "आप भला तो जग भला" यानी आप ठीक है तो सब ठीक है। जब आप ही अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं करेगें तो अन्य क्यों अपने कर्त्तव्यों का पालन करेंगे। इसलिए सभी को हिम्मत से एकजुट होकर सजग और डटकर आतंकवाद का मुकाबला करना होगा। इस संदर्भ में मुख्य नियोजक महोदय से अपील है कि जो अधिकारी/कर्मचारी कार्यालय में सुरक्षा कार्यो में सहयोग नहीं देते, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई हो।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आतंकवाद से लड़ने के लिए कार्यालय में एक सुरक्षा अधिकारी काफी नहीं बल्कि सभी को जागरुक रहना और आज के परिवेश में समय–समय पर सुरक्षा से संबंधित कार्यशालाओं का आयोजन भी अब समय की मांग बन गया है। जिसमें सुरक्षा सलाहकार, सुरक्षा अधिकारी, दिल्ली पुलिस एवं अन्य सुरक्षा विशेषज्ञों के विचारों द्वारा हम अपने कार्यालय की सुरक्षा के साथ अपने आस–पास की भी सुरक्षा को चाक–चौबंद कर सकते हैं।

मैं आतंकवाद से कार्यालय की सुरक्षा के संदर्भ में निम्न विचार रखना चाहूंगाः–

1. कार्यालय के मेन गेट एवम् सभी तलों पर एक–एक सीसीटीवी कैमरा लगवाया जाए एवं उसकी रिकार्डिंग भी रखी जाए।
2. सुरक्षाकर्मियों पर भी नजर रखें।
3. सुरक्षाकर्मियों को सुरक्षा जांच में सहयोग न करने वाले अधिकारी/कर्मचारी के खिलाफ शीघ्र कार्रवाई।
4. कार्यालय के आकार के अनुसार सुरक्षा अधिकारी को सहयोग करने के लिए सुरक्षा सहायक को भी मनोनीत करें।
5. कार्यालय में चोरियां न हों, इसके लिए सुरक्षा अधिकारी द्वारा आकस्मिक सुरक्षा जांच की जाए।
6. आपातकाल की दशा में कैसे, क्या करना है इसकी सही एवं समुचित जानकारी सभी अधिकारी/कर्मचारियों को दी जाए।
7. आगंतुकों की रजिस्टर में प्रविष्टियां सुनिश्चित की जाए।
8. कार्यालय की छत पर मरम्मत कार्य करने के लिए आए कर्मचारी के आवागमन पर विशेष नजर रखी जाए।
9. सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के घरों के पते, मोबाइल टेलीफोन नम्बर, ब्लड ग्रुप जैसी अति आवश्यक जानकारी रखी जाए।
10. आगंतुकों के बैठने के स्थान का प्रयोग केवल आगंतुकों द्वारा ही किया जाए।
11. क्षीण होती देशभक्ति की भावना को जागृत किया जाए।
12. कार्यालय में लगे अग्निशमन उपकरणों की समय–समय पर जांच कर आपातकालीन अवस्था में उनका प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।
13. आतंकवाद से कार्यालय की सुरक्षा जैसे विषयों को ध्यान में रखकर कार्यशालाओं एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन कर जागरुकता पैदा की जाए।
14. आतंकवाद से निपटने के लिए कार्यालय में आधुनिक तकनीक का प्रयोग कर आतंकवादी गतिविधियों को रोका जाए।
15. बदलते परिवेश में आतंकवाद को एक चुनौती मान कर जागरुकता के साथ सरकार को सहयोग करना आवश्यक हो गया है।
16. यदि सावधानी बरतने के बावजूद भी आतंकवाद का सामना करना ही पड़े तो एकजुट होकर समस्या का सामना किया जाए।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

17. हमें अपनी पुलिस, अर्ध सैनिक बल, सैन्य बल और मेडिकल व्यवस्था को भी दुरुस्त करने की आवश्यकता है ताकि समय पर इनकी भागीदारी का भरपूर फायदा उठाकर आतंकवाद को कुचला जा सके।

जागरुकता से आतंकवाद पर आसानी से विजय प्राप्त की जा सकती है। आतंकवाद एक कलंक है जो हमारे देश के अमन चैन को छीनकर एक घुन की भांति देश को बर्बाद करने पर लगा हुआ है। आज आतंकवाद के कारण सीमा पर तनाव बढ़ता ही जा रहा है। उसी का परिणाम है कि सब तरफ आतंकवाद का साया ही नजर आ रहा है। घर, अस्पताल, रेलवे स्टेशन, एयर पोर्ट, बाजार, यहां तक कि सरकारी कार्यालय भी अब सुरक्षित नहीं है। यदि बाहरवालों से सुरक्षा करनी है तो संभव है किन्तु सुरक्षा देश के अन्दर रहने वालों से करनी है तो असंभव है। समुदाय विशेष जिसका कोई मजहब, दीन ईमान नहीं है, केवल आतंकवाद फैलाकर अपनी हुकूमत चलाना चाहता है।

चन्द शब्दों में यही कहा जा सकता है कि आतंकवाद एक वायरल की भांति फैलने वाला संक्रामक रोग है जो आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान, एक राज्य से दूसरे राज्य, एक देश से दूसरे देश तक फैल गया है जिसे काबू में करने के लिए हिम्मत, एकजुटता और आपसी भाई चारे की जरुरत है। सरकारी कार्यालय आतंकवाद की चपेट में न आएं इसके लिए हमें सतर्क और जागरुक रहने और उपलब्ध साधनों का बेहतर उपयोग करने की आवश्यकता है।

वचनबद्धता

किरन बाला

नदी को बहने के लिए दो किनारों की आवश्यकता होती है । बाढ़ तथा नदी में अंतर है कि नदी का पानी एक विशेष दिशा को बहता है । जबकि बाढ़ का पानी दिशाहीन होकर बहता है । इसी प्रकार हमारे जीवन में यदि उर्जा को कोई दिशा नहीं प्रदान की जाती, तो यह दिग्भ्रमित हो जाती है । जीवन की ऊर्जा के प्रवाह के लिए एक दिशा की आवश्यकता होती है । एक परिवार भी वचनबद्धता के साथ चलता है । जीवन के किसी भी क्षेत्र में चाहे वह प्यार हो या व्यवसाय, मित्रता हो, वचनबद्धता अवश्य होती है । हमारी शक्ति , क्षमता या कार्यकुशलता हमारी वचनबद्धता के समानुपाती होती है ।

यदि आपने अपने परिवार का पालन–पोषण करने की वचनबद्धता ली है, तो आपको उतनी शक्ति या क्षमता प्राप्त होती है। जितनी अधिक वचनबद्धता का आप वहन करते हो, उतनी ही अधिक शक्ति आपको उस वचनबद्धता को वहन करने के लिए प्राप्त होती है। छोटी वचनबद्धता घुटन देती है: क्योंकि क्षमता बहुत अधिक है। जब आपके पास दस कार्य होते हैं और यदि उनमें से एक कार्य गलत हो जाता हे, तो बाकी कार्यो को करते रह सकते हो। लेकिन, यदि आपके पास केवल एक ही कार्य है और वह गलत हो जाता है जो आप उसी में चिपके रह जाते हो। आप जितना बड़ा कार्य करने का संकल्प लोगे, उतने ही स्रोत स्वयंमेव प्राप्त हो जाएंगे । जब आपके अंदर किसी कार्य को करने का विचार आता है, तो जब भी और जितना भी आवश्यक होता है उसके लिए स्रोत आपको मिल जाते हैं। अपनी क्षमता से अधिक हाथ–पैर फैलाने से विकास होता है। जैसे ही आप और अधिक उत्तरदायित्व लेते हैं, आपकी क्षमता बढ़ जाती है एवं आप दैविक शक्ति के साथ एकीकृत हो जाते हैं । जिस किसी भी क्षमता में आप अपने समाज, पर्यावरण और इस प्रकृति के लिए कुछ करते हैं, उतना ही आपके अंदर भौतिक तथा आध्यात्मिक विकास होता है । आपका हृदय इस अनुभव के साथ खुल जाता है कि आप हर एक का हिस्सा हो ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

समाज में मीडिया की भूमिका

आशा चंद्रा

मीडिया हमारे समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। सूचना, शिक्षा तथा मनोरंजन के क्षेत्र में मीडिया का योगदान अतुलनीय है। सामाजिक विकास के क्षेत्र में भी मीडिया ने निरंतर सकारात्मक भूमिका निभाई है। देखा जाए तो आज मीडिया हमारे जीवन की एक आवश्यकता बन गई है समाचार पत्र, रडियो, टेलीविजन और इन्टरनेट हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया है । मीडिया को हमारे संविधान के चौथे स्तम्भ के रूप में माना जाता है क्योंकि यह एक ऐसा माध्यम है जो समाज की वास्तविक स्थिति से आम जनता को सीधे जोड़ने का काम करती है। मीडिया हमारे समाज का आईना भी है और प्रगति का मार्ग भी। मीडिया के महत्व की बात करें तो यह स्पष्ट है कि आज पूरे विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम' का जो स्वरूप प्रदान किया है, वह मीडिया के कारण ही संभव हुआ है। किसी ने शायद ठीक ही कहा है "जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो" हमने व हमारे अतीत ने इस बात को सच होते देखा है। याद कीजिए वो दिन जब भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, तब अंग्रेजी हुकूमत के पांव उखाड़ने के लिए देश के अलग–अलग क्षेत्रों में जनता को जागरूक बनाने के लिए एवं ब्रिटिश हुकूमत की असलियत जनता तक पहुंचाने के लिए कई पत्र–पत्रिकाओं व अखबारों ने लोगों को आजादी के समर में कूद पड़ने एवं भारत माता को आजाद कराने के लिए जोश भरने की खबरों को छापकर समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का बखूबी से निर्वहन किया। तब देश के अलग–अलग क्षेत्रों से स्वराज्य, केसरी, काल, पयाम, आजादी, युगान्तर, वंदेमातरम, संध्या, प्रताप, भारतमाता, कर्मयोगी, भविष्य, अभ्युदय, चांद जैसे कई पत्र–पत्रिकाओं ने सामाजिक सरोकारों के बीच देशभक्ति का पाठ लोगों को पढ़ाया और आजादी की लड़ाई में योगदान देने हेतु हमें जागरूक किया।

मीडिया से भारतीय समाज का विकास

मीडिया भारतीय समाज के विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई है। सूचना प्रौद्योगिकी ने तो इस विकास की गति को कई गुना बढ़ा दिया है । यदि समाज की बात करें तो उसका विकास मीडिया पर ही निर्भर करता है, किसी समाज की सांस्कृतिक, पारंपरिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक छवि का निर्धारण इस बात पर निर्भर करता है कि उस क्षेत्र की मीडिया इन विषयों को कैसे प्रस्तुत कर रही है।

20 वर्षों में मीडिया का स्वरूप

हम स्वतंत्र भारत के वासी हैं तथा हमें अपने आसपास की घटनाओं की जानकारी होना आावश्यक है और यही जानकारी प्रदान करने का कार्य मीडिया के द्वारा किया जाता है। देखा जाए तो मीडिया का क्षेत्र काफी विस्तृत है, क्योंकि यह न सिर्फ सूचना देने का बल्कि विज्ञापन का भी सशक्त माध्यम है पिछले 20 वर्षों में मीडिया का स्वरूप काफी तेजी से बदला है, समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविजन तक सिमटी मीडिया आज इन्टरनेट से जुड़कर एक विस्तृत रूप ले चुकी है जिसके द्वारा आज सिर्फ कुछ ही समय में पूरे विश्व में कहीं भी जुड़ा जा सकता है ।

पत्रकारिता और आज

जैसे–जैसे विकास एवं आधुनिकता के नये–नये आयाम स्थापित होते जा रहे हैं, ठीक उसी प्रकार मीडिया की निष्पक्षता तथा समाचार को जनता के बीच प्रसारित करने की तकनीक में भी कई तरह के परिवर्तन एवं उसकी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

निष्पक्षता पर सवाल उठना लाजमी है । वर्तमान में मीडिया जगत में युवाओं की चमक—दमक काफी बढ़ी है, अब इसे युवक—युवतियां अपने उज्जवल कैरियर के रूप में देखने लगे हैं । चमकता—दमकता कैरियर, नेम—फेम की चाह ने युवाओं को काफी हद तक इस और खींचा है, जिससे हजारों युवा पत्रकार बनने की चाह लेकर मीडिया जगत में आ रहे हैं और नित्य नये—नये पत्र—पत्रिकाएँ व न्यूज चैनल भी सामने आ रहे हैं ।

मीडिया समाज और कल

अपने शुरूआत के दिनों में पत्रकारिता हमारे देश में एक मिशन के रूप में जन्मी थी जिसका उद्देश्य सामाजिक चेतना को और अधिक जागरूक बनाना था। तब देश में गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे युवाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक आजादी के लिये संघर्षमयी पत्रकारिता को देखा गया। कल के पत्रकारों को न यातनाएं विचलित कर पाती थी, न धमकियां। आर्थिक कष्टों में भी उनकी कलम कांपती नहीं थी, बल्कि दुगुने जोश के साथ अंग्रेजों के खिलाफ आग उगलती थी। स्वाधीनता की पृष्ठभूमि पर संघर्ष करने वाले और देश की आजादी के लिये लोगों में अहिंसा का अलख जगाने वाले महात्मा गांधी स्वयं एक अच्छे लेखक थे।

आज की मीडिया

आज ये पत्रकार उद्योगपतियों व राजनीतिज्ञों के आगे घुटने टेकते नजर आते हैं। सामाजिक सरोकारों से इतिश्री करने के साथ पैसा कमाने की होड़ में आम जनता का दर्द व उनकी परेशानियां उद्योग घरानों व राजनीतिज्ञों के रूपये के आगे दबकर रह गए हैं। यही कारण है कि पत्रकारिता की निष्पक्षता को लेकर पत्रकार खुद जनता के कटघरे में खड़ा है। जिस पेज व समय पर संपादकीय की जरूरत होती है, वहां आज नेताओं, उद्योगपतियों व अन्य रूपये—पैसे वालों के कसीदे पढ़े जाते हैं। ज्वलंत मुद्दों पर त्वरित टिपणी पढ़ने व देखने वाली जनता को अब पेज—3 व नेताओं, उद्योगपतियों के विज्ञापन व साक्षात्कार पढ़कर व देखकर काम चलाना पड़ता है। जिस पेज पर कल तक खोजी पत्रकारों द्वारा ग्रामीण पृष्ठभूमि की समस्या, ग्रामीणों की राय व गाँव की चौपाल प्रमुखता से छापी जाती थी, वहीं आज फिल्मी नायिकाओं की अर्द्धनग्न तस्वीरें नजर आती हैं। क्योंकि आधुनिकता व वैश्वीकरण के इस दौर में इन पत्र—पत्रिकाओं व नामी—गिरामी न्यूज चैनलों को ग्रामीण परिवेश से लाभ नहीं हो पाता और सरोकार भी नहीं। इसलिए वे धीरे—धीरे इससे दूर भाग रहे हैं। मीडिया की स्थिति एक बिचौलिए से कम नहीं है, आज मीडिया केवल बिचौलिए के कार्य करने में लिप्त है।

मीडिया समाज को दिखाने का एक आईना है। मीडिया की भूमिका समाज के लिए आधुनिक युग से पहले भी थी। तब कुछ और थी आज कुछ और है। मीडिया बाजार का हिस्सा है यह लोकतंत्र के तीन अन्य स्तंभ की तरह नहीं है। संविधान इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देता हैं। क्या यह सारी सूचनाएं समाज तक पहुंचा रहा है या फिर उसे वंचित रख रहा है। ऐसा करते हुए भी उसे एक लोकसंस्थान का दर्जा देते हैं। ऐसे कई मौकों पर मीडिया की भूमिका से लोगों को काफी असहज महसूस होता है। कभी—कभी तो ऐसा भी महसूस किया जाता है कि कुछ मीडिया घराने मात्र किसी एक व्यक्ति, पार्टी व संस्था के लिये ही कार्य कर रही है। अतः मीडिया को एक बार फिर से ठीक उसी तरह निष्पक्ष होना पड़ेगा, जिस तरह आजादी के पहले था। हालांकि अभी कुछ आंदोलनों में इसे जनता के साथ देखा गया। क्या ये बदलेगा?

इसका जवाब खुद मीडिया को देना होगा।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

माता पिता का ऋण

राम सिंह

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । वह समाज में ही रहना पसन्द करता है । भारतीय मुनियों ने समाज के महत्वपूर्ण घटक घर में रहने वाले सभी व्यक्तियों के जीवन को एक दूसरे पर आश्रित मानकर गृहस्थ धर्म के पालन के सूत्र दिये हैं जिन्हें अपनाकर मानव अपना व अपने परिवार के सदस्यों का कल्याण कर सकता है, जिसमें माता पिता को विशेष स्थान दिया गया है।

महाभारत युद्ध में यक्ष ने युधिष्ठर से पूछा कि 'आकाश से ऊंचा क्या है ? तो युधिष्ठर का उत्तर था कि पिता आकाश से भी ऊंचा है । पिता संसार में सभी से जीतना चाहता है परन्तु अपने पुत्र से हारना चाहता है । श्री रामचन्द्र जी पिता की आज्ञा से सहर्ष 14 वर्ष के लिए वनवास चले गए जो पुत्र के आचरण को स्पष्ट करता है । यदि हम अपने माता पिता को कष्ट देंगे तो परिणाम भी भयंकर होंगे।

महाभारत के यक्ष युधिष्ठर संवाद से माता के महत्व का भी पता चलता है । यक्ष ने पूछा कि भूमि से भारी क्या है ? तो युधिष्ठर का उत्तर था कि माता भूमि से भी भारी है । आज के वैज्ञानिकों ने भूमि को तो माप लिया है परन्तु वह माता के हृदय को नहीं माप पाए हैं।

बीरबल ने माता के ऋण से मुक्त होने के विचार से एक लाख रूपये एक थैली में भरकर माता के चरणों में डाल दिये और कहा ' माता जी जितना चाहो दान कर लो ताकि मैं आपके ऋण से मुक्त हो जाऊं । बीरबल ने कई दिन जब इस प्रकार कहा, तब एक दिन माता बोली, पुत्र यदि तू मेरा ऋण ही चुकाना चाहता है तो एक रात्रि को मेरे पास सो जाना । पुत्र ने माता के निकट सोना स्वीकार कर लिया । रात्रि में बीरबल माता जी के पास सो गया । जब उसे निद्रा आने लगी तब माता ने कहा बेटा प्यास लगी है, पानी ला दो । बीरबल प्रसन्नता से उठा और पानी का गिलास ला कर माता को दे दिया । माता ने एक दो घूंट पानी पी कर शेष पानी बिस्तर पर गिरा दिया । जब बीरबल ने देखा कि सारा बिस्तार गीला हो गया है तो बोला, मां यह क्या किया । मां कुछ नहीं बोली । फिर थोड़ी देर के बाद माता ने फिर कहा, बेटा प्यास लगी है, पानी ला दो । बीरबल ने कहा अभी तो पानी पिया था इतनी देर में फिर प्यास लग गई, क्या बिनौले खाए थे। इतनी देर में वह बिस्तर से उठा और पानी का गिलास भर कर ला दिया । थोड़ा सा पानी पीने के बाद मां के हाथ से फिर गिलास गिरा पड़ा और पानी गिरने से बिस्तर गीला हो गया । बीरबल ने झिड़क कर कहा, माँ ये क्या करती हो, सारा बिस्तर गीला कर दिया । माता बोली बेटा अंधेरा था, जिससे हाथ से गिलास छूट गया । बीरबल चुप हो कर फिर सो गया और थोड़ी देर में निद्रा में लीन हो गया । मां ने पुनः जगा कर पानी मांगा। अब की बार बीरबल का पारा 104 डिग्री पर पहुंच गया और झुंझला कर बोला, मां सोने देती हो या नहीं तब से प्यास लगने की रट लगा रखी है। यूं कहता हुआ पानी लाया और बोला अच्छी तरह से पी लो । माता ने पूर्ववत् पानी होटों से लगाया और शेष पानी बिस्तर पर गिरा दिया। अब बीरबल सहन नहीं कर पाए और गुस्से से बोले क्या यूं ही दुखी करने के लिए अपने पास सुलाया था । मुझे लगता है तेरी बुद्धि खराब हो गई है । माता ने कहा बेटा बस ! तूने मेरा ऋण उतार दिया है। तू मेरा ऋण क्या उतार सकता है, तेरे सिर पर जितने बाल हैं इतने जन्मों तक भी तू निरन्तर सेवा करता रहे तो भी माता के ऋण से मुक्त नहीं हो सकता है। जब तू बच्चा था तब एक दिन नहीं, सप्ताह नहीं, मास नहीं, निरन्तर कई वर्षों तक तुम्हें में सूखे में सुलाती रहीं और स्वयं तेरे द्वारा गीले किए गए बिस्तर पर सोती रही । तू तो दो–तीन बार बिस्तर गीला होने से आवेश में आ गया और एक रात में ही घबरा गया । बीरबल लज्जित हो कर माता के चरणों में गिरा पड़ा और बोला, माता तू धन्य है । आपका ऋण चुकाना असम्भव है ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

माता पिता की सेवा के सम्बन्ध में पौराणिक कथा भी है ।

महाराष्ट्र में पण्ढरपुर नामक नगर है । इसी नगर में एक मन्दिर है जो विठुजी (विष्णु) का मन्दिर कहलाता है। इसी मन्दिर में विष्णु जी की मूर्ति के साथ ही एक वृद्ध एवं वृद्धा की मूर्ति है और दूसरे कमरे में एक युवक और एक युवती की मूर्ति है । विष्णु जी के साथ में ये मूर्तियां क्यों है और इनके दर्शनों की क्या विशेषता है। इस विषय में वहां से प्रकाशित पुस्तकों में निम्न वृतांत दिया गया है । किसी समय एक युवक और युवती तीर्थ यात्रा पर गए । मार्ग में एक दिन संत रैदास के यहां ठहरे । रैदास की पितृ भक्ति से प्रभावित इन दोनों ने भी अपने वृद्ध माता पिता की सेवा करने का व्रत लिया । घर लौटकर इन्होंने माता पिता की बहुत सेवा की।

एक दिन विष्णु भगवान दर्शन देने के लिए आए और बाहर आ कर आवाज दी। युवक ने उत्तर दिया कि मुझे अभी अवकाश नहीं है, अवकाश पा कर बाहर आ सकूंगा । विष्णु जी ने यह सुना तो कहला भेजा कि विष्णु भगवान दर्शन देने के लिए आए है। इस पर युवक ने एक विठु भिजवा दी और कहलवा दिया कि इस पर बैठ जाएं (वहां की भाषा में ईंट को विठु कहते हैं।) मैं अवकाश मिलने पर दर्शन के लिए आऊंगा। यदि बैठने की इच्छा हो तो बैठ जाएं अन्यथा चले जाएं । विष्णु भगवान उनके द्वारा बताई गई ईंट पर बैठ गए । सेवा के बाद युवक बाहर आया और उसने विष्णु जी को प्रणाम किया । विष्णु भगवान ने कहा कि भक्त मैं तुम पर प्रसन्न हो कर तुम्हें दर्शन देने आया हूं तुमने इतनी देर कर दी और आने में लाहपरवाही क्यों की ?

युवक ने पूछा कि भगवान आप अब तक नहीं आए आज आपने कैसे कृपा की ? विष्णु जी ने कहा, पहले तुम्हारे पुण्य कर्म कम थे और पाप ही पाप थे परन्तु अब पुण्य कर्म इतने हो गए हैं कि मुझे विवश हो कर दर्शन देने के लिए आना पड़ा । युवक बोला मैंने तो कोई पुण्य कार्य नहीं किया, पूजा आराधना नहीं की, मन्दिर नहीं गया, फिर ऐसा कौन सा पुण्य कर्म था कि आपको विवश हो कर दर्शन देने के लिए आना पड़ा। विष्णु भगवान जी ने कहा कि आपने अपने माता पिता की इतनी अटूट सेवा की, ये उसी का फल है । यह सुनकर भक्त ने कहा कि महाराज फिर आप जाइए यह उनकी सेवा का फल है जिनकी सेवा करने से आप दौड़े चले आए तो मैं उन्ही की सेवा करूंगा । माता पिता की भक्ति का आदर्श पण्डित ईश्वरचन्द विद्यासागर से भी सीख सकते हैं । ईश्वरचन्द विद्यासागर कॉलेज में प्रोफेसर थे । एक दिन उन्हें अपनी माता के रोगी होने का तार मिला । कॉलेज से छुट्टी न मिलने पर उन्होंने कॉलेज की नौकरी से त्याग पत्र दे दिया और माता पिता की सेवा करने पहुंच गये । जब किसी ने पूछा कि आपने अपनी नौकरी से त्यागपत्र क्यों दे दिया तो वह बोले कि नौकरी तो और मिल जाएंगी परन्तु माता पिता की सेवा का अवसर पुनः नहीं मिल सकता ।

हमें अपने माता–पिता की पूरे मन से सेवा करनी चाहिए । आज हम अपने माता–पिता के प्रति अपने कर्तव्य को भूलते जा रहे हैं । आओ, हम सब मिल कर ये कसम लें कि हम अपने माता–पिता की सेवा का आदर्श फिर से संसार के सामने प्रस्तुत करेंगे।

शादी के शुभ मौके पर जब दूल्हा दुल्हन की मांग में सिंदूर भरने लगा तो एक व्यक्ति बोला, 'यह रस्म उल्टी होनी चाहिए। यानि दुल्हन को दूल्हें की मांग में सिन्दूर भरना चाहिए।' दूसरा व्यक्ति बोला–'अगर ऐसा हुआ तो दुनिया के तमाम गंजेग कुंवारे रह जाएंगे।'

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भारत में पंचायती राज व्यवस्था

राम स्वरूप मीना

स्थानीय संस्थाएं प्रजातंत्र की रीढ़ की हड्डी मानी जाती हैं। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी जी स्वशासन के पक्षधर थे। और जवाहरलाल नेहरू जी कहते थे कि गांवों का विकास होगा तो देश का विकास होगा । पंचायती राज व्यवस्था के लिए सन् 1957 में बलवन्त मेहता जी के नेतृत्व में एक समिति गठित की गई थी। 2 अक्टूबर, 1959 को सर्वप्रथम राजस्थान के नागौर जिले से त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का उद्घाटन तात्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा किया गया ।

केंद्र सरकार ने पंचायती राज व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए 73वां संविधान संशोधन अधिनियम बनाया और इसमें पंचायती राज की सभी इकाइयों का चुनाव नियमित कराना, कार्य व शक्तियां देना आदि का प्रावधान किया गया । पंचायती राज की निचली इकाई में ग्राम–सभा व वार्ड सभा को जोड़ा गया है,। ग्राम सभा निर्वाचित सदस्यों व गांव के प्रबुद्व व्यक्तियों से गठित की जाएगी जो संसद की तरह ग्राम स्तर पर जवाबदेह होगी। 73वें संविधान संशोधन अधिनियम अनुसार सभी राज्य अपने पंचायती राज व्यवस्था में निम्न प्रावधान रखें :–

- ग्राम सभा की कम से कम तिमाही बैठक ।
- ग्राम सभा के सभी सदस्यों को उनके उत्तरदायित्व व अधिकार के प्रति जागरूक करना ।
- अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति व महिला आदि सभी पिछड़े वर्गो की सहभागिता ।
- ग्राम सभा की मीटिंग का प्रचार ओर मीटिंग में आपसी झगड़ों का निपटारा, भूमि रिकार्ड, प्राकृतिक संसाधन पर उचित फैसला ले सके ।
- पंचायती राज व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए केन्द्र सरकार ने पंचायती राज मन्त्रालय का गठन किया है जिसके तहत समय–समय पर पुरस्कार वितरण योजना तथा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।
- भारत में 2009 को पंचायती राज के 50 वर्ष पूरे होने पर वर्ष 2009–10 को ग्राम सभा वर्ष मनाया गया और पंचायत सशक्तीकरण व उत्तरदायित्व प्रोत्साहन योजना के तहत कुछ राज्यों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गए ।
- पंचायती राज नवाचार के लिए केन्द्र सरकार ने पुरस्कार योजना भी चलाई। 2010–11 के दौरान राजस्थान में पंचायती राज के विकास के लिए किए गए कार्यों को उत्कृष्ट माना गया है।
- इस वर्ष 2011–12 के लिए केन्द्र सरकार ने पंचायत सशक्तीकरण व उत्तरदायित्व प्रोत्साहन योजना राशि में बढोतरी की है ।
- 74 वें संविधान संशोधन अधिनियम के कार्यान्वयन पर भी केन्द्र सरकार जोर दे रही है ताकि सभी जिलों की समेकलित जिला विकास योजना तैयार हो सके ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

– केन्द्र सरकार द्वारा न्याय पंचायतों की व्यवस्था करना भी प्रस्तावित है।

पंचायती राज व्यवस्था में राज्यों की भूमिका

73वें संविधान संशोधन की भावना के अनुसार सभी राज्यों ने पंचायती राज व्यवस्था सुदृढ करने के प्रावधान किए हैं, जैसे :–

– 73वें संविधान संशोधन के प्रावधानों के अनुकूल पंचायती राज अधिनियमों में सुधार/संशोधन हुए ।

– पंचायती राज मन्त्रालयों का गठन केन्द्र सरकार की तर्ज पर शुरू हुआ।

– चुनाव प्रक्रिया, वित्त आयोग व आरक्षण व्यवस्था लागू हुई ।

– राज्यों में जिला नियोजन समितियां गठित होना शुरू हुआ है। जहां पर समग्र जिला विकास नियोजन भी तैयार किए रहे हैं ।

– कई राज्यों में पंचायती राज इकाइयों में महिलाओं के लिए आरक्षण 50 प्रतिशत तक लागू किया गया हैं ।

– पंचायती राज व्यवस्था के अनुसार राज्य, उनके विभागों, कार्यों एवं अधिकारों को भी हस्तांतरित कर रहे हैं।

ग्राम पंचायत स्तर पर पंचायती राज व्यवस्था

- नियमित चुनाव व आरक्षण व्यवस्था लागू हुई हैं
- महिलाओं में चुनाव में भाग लेने के प्रति जागरूकता बढ़ी है ।
- ग्राम–सभा की बैठकों में ग्रम विकास योजनाएं तैयार की जा रही है।
- गॉवों/पंचायतों के लिए स्थानीय विकास योजनाएं तैयार करने का कार्य प्रारम्भ हुआ ।
- इंदिरा आवास, वृद्धावस्था/विधवा पेंशन, आंगनवाड़ी, मनरेगाा जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं के कार्यान्वयन में ग्राम पंचायत की बड़ी भूमिका देखने को मिल रही है।

निष्कर्षः–

राष्ट्र के समग्र विकास की दिशा में 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन की एक अहम् भूमिका है। पंचायती राज व्यवस्था में 73 वें संविधान संशोधन अधिनियम से पंचायती राज की सभी इकाइयों के चुनाव आरक्षण व्यवस्था सहित नियमित समय पर हुए। इस संशोधन के उपरान्त शहरों के साथ–साथ गॉवों/पंचायतों/निकायों के लिए स्थानीय विकास योजनाएं तैयार करने का कार्य प्रारम्भ हुआ। कुछ ग्राम पंचायतों में उत्कृष्ट एवं अनौखे कार्य हुए हैं। केन्द्र सरकार 12वीं पंचवर्षीय योजना में पंचायती राज सशक्तीकरण अभियान चलाना चाह रही है जिससे प्रायोगिक तौर पर पंचायती राज सशक्त होगा।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

श्रद्धा का महत्व

मोख्तार राय

भारतीय परम्परा में माँ–बाप का महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। वेदों में कहा गया हैः–

बेटे को अपने पिता का आज्ञाकारी और माँ की भावनाओं को समझने वाला होना चाहिए। गृहस्थ जीवन में सुख और शांति लाने के लिए माता–पिता का आशीर्वाद आवश्यक है। वेदों में यह भी कहा गया है कि घर–गृहस्थी को सफल बनाने के लिए पति–पत्नी में मधुरता के संवाद हों और बोलने में जहां मधुरता का प्रयोग किया जाए, वहीं वह शब्द शांति देने वाले भी हों।

महाभारत में युधिष्ठिर–यज्ञ संवाद में यक्ष युधिष्ठिर से प्रश्न करता है कि धरती से भारी क्या है और आसमान से ऊंचा क्या है? युधिष्ठिर का उत्तर था कि इस संसार में धरती से भारी माँ की ममता होती है और पिता आसमान से ऊँचा होता है क्योंकि अपनी संतान के प्रति पिता का अरमान इतना ऊँचा होता है कि उसके सामने आकाश की ऊँचाई भी कम नजर आती है।

मनु महाराज ने भी कहा हैः– जिस घर में बड़े का सम्मान होता है, उस घर में रहने वाले बच्चों की आयु बढ़ती है, उसका बल, यश और धन भी बढ़ता है। भारतीय परम्परा में माँ को प्रथम गुरू, पिता को दूसरा गुरू और आचार्य को तीसरा गुरू माना गया है। मॉ द्वारा दिए गए संस्कार बच्चे पर बहुत प्रभाव डालते हैं।

नेपोलियन ने जब कई देशों को जीता तो एक व्यक्ति ने नेपोलियन से पूछा कि किसी देश के लिए सबसे बड़ा योगदान देने वाला कौन होता है? तो नेपोलियन का जवाब था कि देश को सबसे बड़ा योगदान माँ देती है जो बच्चों को उच्च संस्कार और शिक्षा देती है। आज जो मैं बना हूॅ अपनी माँ के कारण बना हूॅ और अपनी माँ के द्वारा दिए गए संस्कारों के कारण बना हूॅ।

माँ को प्रथम गुरू कहा गया है जो भाषा माँ बोलती है, वही भाषा बच्चा भी बोलने लगता है। इसलिए मातृभाषा के बारे में पूछा जाता है। किसी कवि ने मॉ की उपमा सागर, चन्द्रमा और सूर्य से देते हुए माँ को इनसे भी महान कहा है। कवि कहता है कि, 'हे माँ! यदि मैं आपकी तुलना सागर से करता हूं तो सागर का जल खारा है, पर माँ तेरा दूध तो अमृतमय है। चन्द्रमा में भी दाग है, पर माँ की ममता में कोई दाग नहीं है। सूर्य की गर्मी जहां जलाती है, वहीं माँ के आंचल की ठंडी छांव होती है। माँ बच्चे पर कितने ही उपकार करती है, परन्तु उन्हें भूल जाती है। माँ का प्यार भी बहुत अनोखा होता है। माँ बच्चे को पहले सजाती है, फिर काला टीका लगाती है कि कहीं उन्हें किसी की नजर न लग जाए। खुद खाना खाने से पहले बच्चों को खाना खिलाती है। जब बच्चा बीमार होता है तो उसे पकड़कर डॉक्टर के पास ले जाना और डॉक्टर से बच्चे को टीका लगवाना भी मॉ का प्यार है।

भगवान की प्रार्थना करते हैं तो कहते हैं कि तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो। अतः माता–पिता को सम्मान देने का तात्पर्य है परमपिता परमात्मा के आदेश को मानना। जिस घर में बड़े–बूढ़ों का सम्मान होता है और आपस में एकता होती है, उस घर मे सुख–समृद्धि का वास होता है। जिस घर में कलह–क्लेश होता है और महिलाएं आंसू बहाती हैं, खाना खाने के लिए परिवार के सदस्य इक्ट्ठे न बैठते हों, जहां अतिथियों का स्वागत न होता हो, उस घर में लक्ष्मी एक दरवाजे से आती है और दूसरे दरवाजे से चली जाती है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भारतीय परम्परा में वर्ष में एक बार श्रद्धा की परम्परा भी है। यह श्रद्धा परंपरा हमें अपने बड़ों के प्रति श्रद्धा का प्रतीक ही है। राम जी अपने माता–पिता को कितना आदर देते हैं। अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए राम जी 14 वर्ष के लिए जंगल चले जाते हैं। मातृ–पितृ भक्त श्रवण कुमार को कौन भारतीय नहीं जानता?

आज हम अपनी महान परम्पराओं को भूलते जा रहे हैं। इसलिए परिवारों में देखने में आ रहा है कि बच्चे माँ–बाप को बुढ़ापे में घरों से निकाल देते हैं। कई मामलों में तो बच्चे माँ–बाप को बांट देते हैं। बुढ़ापे में माँ–बाप को बच्चों की बहुत आवश्यकता होती है। जब बुढ़ापे में बच्चें उन्हें घर से निकाल देते हैं तो उन्हें बहुत पीड़ा पहुंचती है। हमें भारतीय परम्परा के महान आदर्श को अपनाते हुए माँ–बाप की सेवा करनी चाहिए व उनकी आज्ञा पालन को अपने जीवन में धारण करना चाहिए।

चमक

सरोज बाला

जून का महीना था। दोपहर की तपती धूप में सड़कें आग उगल रही थीं। हवा का नामोनिशान नहीं था। न चाहते हुए भी हमें अपनी कार से किसी जरूरी कार्य से घर से बाहर जाना पड़ा। एक लाल बत्ती पर वाहनों की कतारें लगी हुई थी। गाड़ियों से गरम हवा निकलकर वातावरण को गरमा रही थी। पसीने से लोगों का शरीर तर–बतर हो रहा था। जैसे ही हरी बत्ती हुई, वाहनों ने सरकना प्रारंभ किया। धीरे–धीरे वाहनों ने तेज रफ्तार व आवाज के साथ दौड़ना शुरू किया। हम भी हरी बत्ती होते ही कार स्टार्ट करके गंतव्यस्थल की ओर चल दिए। इतने में एक रिक्शावाला गलत दिशा से आता हुआ दिखाई दिया जिसने अपनी रिक्शा में क्षमता से अधिक लोहा लादा हुआ था। हमारे आगे सड़क पर एक नीली कार जा रही थी। आगे वाली नीली कार ने अचानक ब्रेक लगाया क्योंकि उसमें बैठे नौजवान युवक ने जानबूझकर अपनी कार को रिक्शा के आगे के पहिए में दे मारा। कार की टक्कर से रिक्शे का अगला पहियां मुड़ गया। लाचार रिक्शावाला अपना नुकसान देखकर भी अपने रिक्शे पर बैठा–बैठा डर के मारे पसीना–पसीना हो रहा था। उसका पसीना बालों व माथे से होता हुआ आँखों के आसुँओं के साथ मिलकर ठोड़ी के नीचे टप–टप बह रहा था। गुस्से से भरा नौजवान कार चालक कार से नीचे उतरा और रिक्शावाले को खूब गालियां देने लगा।

गालियां सुनकर भी रिक्शावाला स्तब्ध, टकटकी लगाकर उसकी गालियां हाथ जोड़कर सुनता रहा उसने बदले में एक शब्द भी नहीं कहा। उसके पसीने व आसुँओं की चमक उसके प्रायश्चित को बयां कर रही थी। गालियां देकर नौजवान कार चालक तो चला गया, परन्तु हमने उसकी आंखों में मेहनत की चमक देखी जो उसकी लाचारी और दुःख को दबा रही थी और उसकी इसी चमक को बरकरार रखने के लिए हमने उस रिक्शेवाले का पहियां ठीक करवाने में मदद की और उसके उपरांत हम इस बात से संतुष्ट होकर अपनी राह चल दिए कि उसने शिक्षित होने के बावजूद मेहनत करते हुए रिक्शे को गलत राह पर चलाया, परन्तु गलत राह पर तो नहीं चल रहा था। हमने उसको दिलासा देते हुए पूछा कि भाई तुम गलत दिशा से रिक्शा लेकर क्यों आए? उसने बताया, साहब मैं बारहवीं पास हूँ, नौकरी न मिलने की वजह से रिक्शा चलाने के लिए मजबूर हूँ। पूरे परिवार की जिम्मेदारी मुझ पर ही है और इस महंगाई के जमाने में परिवार का गुजारा कैसे हो। मैंने रिक्शे में तीन चक्करों का लोहा लादा है जिससे मुझे 50 रूपये अधिक मिलेंगे। अगर मैं सही दिशा में जाकर वापस यू–टर्न लेकर आता तब वह रास्ता मुझे करीब एक किलोमीटर लम्बा पड़ता इसलिए चमचमाती धूप में कम समय में छोटा रास्ता तय करने के लिए मैं गलत दिशा से आया हूँ। उसकी बातों से गरीब व पढ़ा–लिखा होने के बावजूद नौकरी न मिलने के दर्द का अहसास नहीं हो रहा था।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सफलता का मूल मंत्र : अच्छा स्वास्थ्य

राम प्रकाश

वेदों में कहा गया है 100 वर्ष तक कर्मशील रहते हुए जीवन जिएं अर्थात जीवन के अंत समय तक स्वस्थ रहते हुए अपना जीवन बिताएं।

व्यक्ति जब बच्चा होता है तो बहुत प्रसन्न रहता है। जब वह धीरे–धीरे बड़ा होता है तो धन कमाने के चक्कर में इतना उलझ जाता है कि उसके लिए दिन–रात भागदौड़ करता रहता है। इस भागदौड़ में उसे अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान नहीं रहता। धन कमाने की अंधी दौड़ में शामिल होकर वह अपने घर में देशी–विदेशी सामान तो भर लेता है, लेकिन इस भागदौड़ में वह अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह हो जाता है। जिसका परिणाम यह होता है कि वह पैसा तो कमा लेता है लेकिन उसका पैसा उसके ईलाज पर ही खर्च होना शुरू हो जाता है और वह पैसों का आनन्द नहीं ले पाता।

स्वास्थ्य ऐसा अनमोल धन है जिसको सुरक्षित रखना जरूरी है। स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन का सही आनन्द ले सकता है। कहा भी गया है:–

पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में हो माया।

लेकिन आजकल कुछ लोग यह भी कहने लगे हैं:–

पहला सुख घर में हो माया, चाहे जैसी भी हो काया।

मानव तभी चहुंमुखी विकास कर सकता है जब वह स्वस्थ हो। जितनी चिंता हम धन के लिए करते हैं, क्या उतनी ही चिंता हम अपने स्वास्थ्य के लिए भी करते हैं? पहले हम शरीर को बिगाड़कर धन कमाते हैं फिर उसी धन को शरीर को ठीक करने में खर्च कर देते हैं। अच्छी सेहत के लिए ईर्ष्या, द्वेष, चिंता, निराशा और भय से बचें। ये सभी मनोरोग को उत्पन्न करते हैं जिससे मन भय और निराशा से भर जाता है। अस्वस्थ मन वाला व्यक्ति जीवन में सफल कैसे होगा? स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन का सही आनन्द ले पाता है। भोजन का पूरा आनन्द भी स्वस्थ व्यक्ति ही ले पाता है। अस्वस्थ व्यक्ति भोजन का आनन्द नहीं ले पाता। भोजन सात्विक व नपा तुला लें। वही भोजन लें जो सेहत के लिए लाभकर हो। तले, मिर्च–मसाले युक्त भोजन व मांसाहार से बचें। अंकुरित भोजन लें। खाना जल्दी–जल्दी न खाएं। खूब चबाकर भोजन करें। सप्ताह में एक दिन का उपवास करना लाभकर रहता है। लगातार सैर का नियम बना लें। रात्रि में हल्का भोजन लें और सोने से दो घंटे पूर्व ही भोजन कर लें। सदा प्रसन्नचित मन से भोजन करें। अधिक मात्रा में भोजन न लें। प्रतिदिन व्यायाम करें। दिन में कई बार खुलकर हॅसें। बैचेन रहने की आदत न बनाएं। ठीक नींद लें। नशीले पदार्थों के सेवन से बचें।

अपने जीवन में एक–एक क्षण का उपयोग करें। जीवन का प्रत्येक क्षण बहुत कीमती है। इसे कभी ना गवाएं। प्रतिदिन की योजना बनाकर चलें। धन अवश्य कमाएं, परंतु स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाकर नहीं। अपने बच्चों को धन अवश्य दें, परन्तु उन्हें अच्छे संस्कार भी दें। अपने परिश्रम से अर्जित सफलता ही सफलता है। वह ही आपको आनन्द प्रदान करेगी और परिश्रम केवल स्वस्थ व्यक्ति ही कर सकता है। अत: स्वास्थ्य की उचित देखभाल करें।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दिल्ली मेट्रो ट्रेन

प्राण कुमार

पलक झपकते आती है,
पलक झपकते ही जाती है।
कभी–कभी तो पलकों को भी,
धोखा दे जाती है।

पलक झपकते ही एक स्टेशन,
पलक झपकते दूसरे स्टेशन पहुंचाती है।
पलक झपकते गुम हो जाती,
पुनः धरती के आगोश में खो जाती है।
फिर पलक झपकते ही,
धरती से बाहर आ जाती है।

सुन्दर है सुशील है,
सब के दिलों को भाती है।
यही तो दिल्ली मेट्रो कहलाती है,
जो दिल्ली की वरदान कही जाती है।

जीवन–सूत्र

माँ का दूध पीने के बाद शिशु अपने पैरों को साइकिल की तरह चलाकर कसरत करता है। बिल्ली व कुत्ता भी उठते समय पहले अपने पंजों को आगे खींचकर और फिर अपने शरीर को पीछे की ओर खींचकर कसरत करते हैं, लेकिन आज का बुद्धिमान कहलाने वाला इंसान कसरत के बजाए आराम अधिक पसंद करता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भाभी का बलिदान

उदयवीर सिंह प्रजापति

मई का महीना था, स्कूलों की छुट्टियां पड़ चुकी थी। विशाल और विवेक अपने माता–पिता के साथ अपनी ननिहाल में अपने मामा की शादी में जा रहा था। रेलगाड़ी में सफर के आनंद को ठंडी हवाओं ने और भी सुहावना बना दिया था। लगभग आठ बजे होंगे कि जोरदार आवाज के साथ रेलगाड़ी पटरी से उतर गई और एक गहरी खाई में गिर गई। चारों ओर सिर्फ बचाओ–बचाओ की आवाज आ रही थी। विशाल की उम्र 14 वर्ष की थी और विवेक की उम्र लगभग 5 वर्ष की थी। विशाल इस घटना को देखकर बुरी तरह घबरा गया और बेहोश हो गया।

खेतों में काम कर रहे किसान घटनास्थल पर पहुंच कर बचाव कार्य में लग गये। विशाल को राधेश्याम नामक किसान ने उठा लिया और अपने घर ले गया, जहां उसकी पत्नी राधा ने उसे अपने ऑचल में ले लिया और अपने पति से पूछा कि – 'किसका बच्चा है।' 'राधा! ये तो मुझे पता नहीं कि यह किसका बच्चा है अब तुम ही इसकी माँ हो, पता नहीं इस हादसे में इसके माता–पिता बचे भी हैं या नहीं।' राधा ने कहा कि 'किस हादसे की बात कर रहे हो।' 'अरे भाग्यवान! अभी दो घंटे पहले ही रेलगाड़ी आपस में टकरा गई, पता नहीं कितने लोग मारे गये हैं।' राधा के पति ने बताया।

विशाल दो दिन के बाद सदमे से बाहर आया और उसने मम्मी–पापा को पुकारा। तभी राधेश्याम ने विशाल को गोद में उठाया और कहा– 'बेट क्या हो गया?' विशाल ने कहा कि –'मेरे मम्मी–पापा और मेरा छोटा भाई विवेक कहां हैं? विशाल की बात सुनकर किसान को घबराहट होने लगी, लेकिन धैर्य से काम लिया और कहा, 'बेटा तुम्हारे मम्मी–पापा आते ही होंगे। नहीं बाबा! अब मेरे मम्मी–पापा कभी नहीं आयेंगे। इतने बड़े हादसे में तो वो मर चुके होंगे, बाबा मेरा मन कहता है। मेरा छोटा भाई अभी भी जिन्दा है। आप मुझे वहां ले चलो, मेरा भाई मुझे पुकार रहा है। वो कह रहा है, 'भैया मुझे बचाओ।' विशाल को याद आया कि हम लोग रेल के कोच एस–7 में सफर कर रहे थे। किसान तुरंत उसको कोच एस–7 के पास ले गया, वहां पर एक बच्चे की कराहने की आवाज आई कि– 'भैया मुझे बचाओ।' विशाल ने कहा बाबा देखो मेरा भाई मुझे पुकार रहा है। विवेक मॉ की गोद से छिटक कर दूसरी बर्थ के नीचे गिर गया था। काफी तलाश के बाद विवेक उन लोगों को मिल गया, उसका शरीर पीला पड़ चुका था, लेकिन उसकी सांस चल रही थी।

किसान ने दोनों बच्चों को गोद में लिया और तुरंत डॉक्टर के पास ले गया। गॉव का डॉक्टर कहने लगा–'अरे भाई! ये किसके बच्चे हैं और इनको क्या हुआ है?' डॉक्टर साहब बाद में पूछना, पहले मेरे बच्चों को दवा दो, इनके प्राण बचाओ। डॉक्टर ने तुरंत उपचार शुरू किया। लगभग चार घंटे में डाक्टर ने बच्चे की हालत को नियंत्रित कर लिया और कहने लगा कि राधेश्याम अब इस बच्चे को कोई खतरा नहीं, ईश्वर ने चाहा तो आठ, दस दिन में ही भला–चंगा नजर आयेगा और इन बच्चों का इलाज मैं अब तुम्हारे घर आकर ही कर दूंगा।

जब विशाल और विवेक अच्छे हो गये तो डॉक्टर ने किसान से आग्रह किया भैया राधे मेरा तुम्हारी किसी चीज पर अधिकार नहीं, फिर भी एक विनती करता हूँ कि आप इन बच्चों को मुझे दे दीजिए, मैं भी आस–औलाद वाला बन जाऊंगा। तभी किसान की पत्नी राधा ने हाथ जोड़कर कहा–'डॉक्टर साहब! आप मेरा सब कुछ ले लीजिए, परन्तु बच्चों के बारे में कुछ मत कहना, इन बच्चों को जन्म तो मैंने नहीं दिया पर पता नहीं मेरी आत्मा कहती है कि ये बच्चे मेरे ही अंश हैं।' अंत में डॉक्टर व किसान एक साथ दोनों बच्चों का पालन–पोषण बड़े प्यार से करने लगे। अब दोनों

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बच्चे स्कूल भी जाने लगे। विशाल की उम्र लगभग 18 वर्ष की हो चुकी थी। एक दिन विशाल ने किसान से कहा –'बाबा! अब खेत का काम मैं करूंगा और आप माँ के साथ घर पर आराम करोगे।'

विशाल के काफी आग्रह करने पर किसान ने विशाल को खेती का कार्य सिखा दिया। एक दिन राधा खाना लेकर खेत पर गयी। वहां देखा कि विशाल कितनी सफाई से हल चला रहा है और बैल भी उसका इशारा कितनी अच्छी तरह से समझ रहे हैं। विशाल ने अब खेती का कार्य संभाल लिया और किसान को पूरी आजादी दे दी। एक दिन किसान सोचने लगा कि भगवान जब भी देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है। शायद मेरी अपनी औलाद भी मुझे इतना आराम नहीं दे पाती, आज मैं विशाल को पाकर धन्य हो गया।

एक दिन किसान की पत्नी राधा और डॉक्टर बैठे हुए आपस में कुछ बातें कर रहे थे। डॉक्टर ने राधा से कहा–'भाभी आप कई दिनों से कुछ परेशान नजर आ रही हैं। आप अपने दिल की बात बताइये, शायद मैं आपकी कुछ मदद कर सकूँ।' राधा ने कहा–'भाई साहब! मैं आपसे एक निवेदन करना चाहती हूँ। अगर आपके भाई साहब की सहमति मिले तो हॉं कहिए।' तब राधा ने कहा–'अब हमें विशाल की शादी कर देनी चाहिए।' किसान और डॉक्टर ने राधा की बात का समर्थन करते हुए कहा कि–'अरे राधा! आपने तो हमारे दिल की बात कह दी।'

फिर क्या था पूनम नाम की एक लड़की से विशाल की शादी तय कर दी गई और एक महीने बाद ही वो दिन भी आ गया जब शहनाइयों से किसान का घर गूंज उठा। शादी के बाद जब पूनम विशाल के घर में खुशी–खुशी रहने लगी तो एक दिन उसने अपने पति को उदास देखकर उनसे आग्रह किया–'क्या आप मुझे पत्नी के रूप में पाकर खुश नहीं हैं और अगर आपको कुछ परेशानी है, तो कृपया मुझे बतायें जिससे मैं आपकी कुछ मदद कर सकूं।'

'पूनम मेरे मन में जो चिन्ता है, उसका निवारण आप नहीं कर सकती हैं।' पूनम बोली–'जब कोई लड़की शादी के बाद अपने पति के घर आती है, तो उसका कर्तव्य बनता है कि वो अपने पति की हर मुश्किल में पति का साथ निभाये और पति–पत्नी का धर्म भी यही कहता है कि बुरे समय को हंसकर निभाए। मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप मुझे अपनी ढाल समझकर परेशानी बताएं जिससे मैं आपके कर्तव्य व स्वाभिमान की रक्षा कर सकूं।'

'पूनम बात स्वाभिमान की नहीं, बात कर्तव्य की है। मेरे मन में जो चिन्ता है उसके लिए आपको अपने नारी धर्म का बलिदान देना होगा। मैं जानता हूँ कि कोई भी नारी इस तरह के बलिदान को स्वीकार नहीं करेगी।' 'विशाल पहेलियां मत बुझाओ, साफ–साफ बताओ कि कौन–सा बलिदान ऐसा है जिसको मैं नहीं कर सकती।'

पूनम अगर नहीं मानती हो तो सुनो –' मेरे माँ–बाप दुर्घटना में मारे जा चुके हैं। मेरा छोटा भाई विवेक मेरा भाई है। विवेक मेरा बेटा भी है। क्या तुम इस रिश्ते को निभा पाओगी।' उस समय तो पूनम चुप रही। जैसे ही सुबह हुई, घर के कामकाज को निपटाकर विवेक को साथ लेकर सरकारी अस्पताल जा पहुंची और डॉक्टर से बोली–'मैं परिवार नियोजन का ऑपरेशन कराना चाहंती हूँ।' डॉक्टर ने पूनम से कहा, 'पूनम तुम जानती हो कि तुम क्या कह रही हो? अभी तुम्हारी शादी के चन्द दिन हुए हैं और हर औरत का सपना होता है कि मैं माँ बनूं।' पूनम ने कहा–'सही कहा आपने डॉक्टर साहब, परन्तु भगवान ने ये इच्छा शादी होने से पहले ही पूरी कर दी। मेरा भी एक बेटा है विवेक। इससे ज्यादा बोझ मैं नहीं उठा सकती।' डॉक्टर ने कहा–' जैसी तुम्हारी मर्जी।' पूनम का ऑपरेशन कर दिया गया।

डॉक्टर ने ऑपरेशन की रिपोर्ट विवेक को दे दी। विवेक ने रिपोर्ट ले जाकर भाई की अल्मारी में रख दी। एक दिन विशाल ने वो रिपोर्ट देखी कि पूनम ने अपना परिवार नियोजन का ऑपरेशन करा लिया है। विशाल के दिल को बहुत ठेस लगी और पूनम से जाकर पूछा–'पूनम! तुमने ये क्या किया? जीते जी अपनी ममता का गला घोट दिया।' 'नहीं विशाल। अगर मैं ऑपरेशन नहीं कराती तो कभी विवेक को अपनी ममता का प्यार नहीं दे पाती। अब केवल विवेक ही मेरा बेटा है और यह कह कर पूनम ने अपनी ममता के आंचल में विवेक को छिपा लिया। पूनम जैसी पत्नी को पाकर विशाल धन्य हो गया। धन्य है ऐसी भाभी का बलिदान।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

चिंतन के मोती

संकलनः चंद्रकान्ता शर्मा

1. जिसके चित्त से राग द्वेष का नाश हो गया है, वही ज्ञानी, गुणी, दानी और ध्यानी है।
2. बहुत बोलने से वाणी की शक्ति नष्ट होती है इसलिए संयमित वाणी बोलो।
3. अपनी प्रशंसा से न तो प्रसन्न हो और न निन्दा से दुखी हो।
4. विपत्ति में धैर्य, वैभव में दया और संकट में सहनशीलता – यही महान व्यक्ति के लक्षण हैं।
5. जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है, वह दूसरों के क्रोध से बच जाता है।
6. जो सत्य का सामना करने की हिम्मत रखता है वह कभी पराजित नहीं होता और न ही कभी दुखी होता है।
7. परिश्रम व्यक्ति को सोना बना देता है।
8. समय कभी रूकता नहीं। वह निरन्तर आगे बढ़ता जाता है। उसके साथ कदम मिला कर चलने वाले के लिए असफलता का प्रश्न नहीं उठता।
9. समय की कद्र करने वाला कभी हारता नहीं।
10. वाणी की कड़वाहट जीवन के मिठास को समाप्त कर देती है।
11. अपने लक्ष्य पर सदैव अडिग रहना सफलता का सर्वोत्तम सोपान है।
12. आज का पुरूषार्थ ही कल का भाग्य निर्धारित करेगा इसलिए कर्म करने से कभी पीछे ना हटे।
13. दूसरों का जो आचरण तुम्हें पसंद नहीं, वैसा आचरण दूसरों के प्रति तुम भी न करो।
14. हर अच्छा काम पहले असंभव नजर आता है लेकिन जब उसमें सफलता मिलती है तब व्यक्ति सब कठिनाइयॉं भूल जाता है।
15. व्यक्ति अपने कार्यों से श्रेष्ठ बनता है।

गुप्ता जीः आप मियां–बीबी में कभी लड़ाई–झगड़ा नहीं होता। हमेशा हँसने की आवाज आती रहती है। इसका क्या राज है?

'नहीं भाई, ऐसा नहीं है। हम मियां–बीबी में भी जमकर लड़ाई–झगड़ा होता है। हँसने का राज यह है कि जब मेरी बीबी गुस्से से बेलन खींचकर मारती है तो निशाना लग जाने पर वह हँसती है और निशाना चूक जाने पर मैं हँसता हूं।'

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

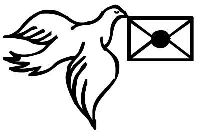

आपका पत्र मिला

आपका धन्यवाद

आपके विभाग द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'नियोजन संदेश' के 16वें अंक की सज्जा तथा सामग्री संकलन अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख उच्च कोटि के तथा ज्ञानप्रद हैं। संपादन और कलेवर की दृष्टि से पत्रिका सुरूचिपूर्ण है। पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई एवं शुभकामना।

शान्ति कुमार स्याल, उप संपादक,
राजभाषा भारती, राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, नई दिल्ली

'नियोजन संदेश' का 16वां अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। पत्रिका में सरस्वती वंदना के साथ लेख और कविताओं को प्रकाशित किया गया है। वैसे तो सभी रचनाएं पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं, परंतु मुझे लेखों में 'कर्म का महत्व' तथा 'भावना' रोचक लगे एवं कविताओं में 'आदमखोर' एवं 'खुद को भुला बैठे हैं' काफी रोचक लगी। मुझे आशा है कि भविष्य में भी 'नियोजन संदेश' इसी प्रकार प्रकाशित होती रहेगी। कृपया मेरी शुभकामनाएं प्राप्त करें।

महिमानन्द भट्ट,
सहायक प्रबंधक, राजभाषा,
केन्द्रीय भण्डारण निगम,
अगस्त क्रांति मार्ग, नई दिल्ली–110016

हिन्दी पत्रिका 'नियोजन संदेश' का 16वां अंक प्राप्त हुआ। 'शहरों के अव्यवस्थित फैलाव के कारण आने वाली समस्याएं एवं उनका समाधान', 'शहरी जनगणना–2011 : एक परिदृश्य', 'कार्यालय और अनुशासन', 'मैली सरिता', 'वर्षा जल संचयन', मेहनत और कर्म से बनती है तकदीर', 'भावना', 'इन्हें अपनाइए और टेंशन दूर भगाइए' लेख एवं 'सर्प बनाम मानव' तथा 'आदमखोर' नामक कविताओं ने बहुत प्रभावित किया है। कुछ त्रुटियों को छोड़कर पत्रिका का संपादन कार्य अच्छा है। संपादक मंडल को इसके प्रकाशन के लिए बधाई।

श्री राजेन्द्र कुमार कंचन,
लखीसराय, बिहार

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन द्वारा प्रकाशित 'नियोजन संदेश' पत्रिका के 16वें अंक का कवर पृष्ठ बहुत ही मनमोहक है। इसमें लिखी कुछ रचनाएं तकनीकी हैं व कुछ नैतिक ज्ञान को बढ़ाने में सहायक हैं। संपादकीय क्षेत्र में भी कार्य उल्लेखनीय है। इन सभी रचनाओं के साथ–साथ यदि पत्रिका में कुछ हास्य–व्यंग्य रचनाओं का समावेश हो जाए तो यह और रूचिकर हो सकती है।

विपिन कुमार, अनुसंधान सहायक,
नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'नियोजन संदेश' के 16वें अंक में दिए गए लेख एवं रंगीन फोटोग्राफ आदि से गृह पत्रिका की खूबसूरती में चार चाँद लग गए हैं। अच्छा होता यदि पत्रिका में राजभाषा का वार्षिक कार्यक्रम एवं हिन्दी को बढ़ावा देने संबंधी कोई जानकारी भी दी जाती।

आर.डी.मीना, अनुसंधान सहायक,
नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'नियोजन संदेश' के 16वें अंक में दी गई सभी रचनाएं मौलिक एवं सुन्दर हैं। मुझे 'कार्यालय और अनुशासन' तथा 'मेहनत और कर्म से बनती है तकदीर' लेख बहुत अच्छे लगे।

– लुकास रतन बारला, अनुसंधान सहायक,
नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन

---

1. **हिंदी में ही अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है – राजा राममोहन राय**
2. **हिंदी ही एक भाषा है जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है –डॉ. ग्रियर्सन**
3. **प्रांतीय ईर्ष्या–द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी किसी दूसरी चीज से नहीं – सुभाष चंद्र बोस**
4. **हिंदी का शृंगार राष्ट्र के सभी भागों ने किया है, वह हमारी राष्ट्रभाषा है–राजगोपालाचारी**
5. **हिंदी की प्रगति से ही देश की सभी भाषाओं की प्रगति होगी – डॉ. जाकिर हुसैन**
6. **राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी, इसमें दो राय नहीं – जवाहर लाल नेहरू**
7. **देश की एकता को एक सूत्र में आबद्ध करने की शक्ति केवल हिंदी में है – इंदिरा गांधी**
8. **भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी प्रचार के द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत–बन्धु हैं – महर्षि अरविंद**

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

संगठन में प्रयोग में आने वाले अंग्रेजी शब्दों का हिंदी पर्याय

English Words	हिन्दी अर्थ
Accelerated Water Supply Scheme	त्वरित जलापूर्ति योजना
Accessibility	सुगम्यता, पहुँच
Adaptability	अनुकूलनशीलता
Adherence	अनुपालन
Advertisement hoarding	विज्ञापन पट्ट
Affordable housing	वहनीय आवास, किफायती आवास
Afforestation	वृक्षारोपरण
Aggrieved Party	व्यथित पक्ष
Amended	संशोधित
Analogous	सदृश, अनुरूप
Annexure	संलग्नक
Apex	शीर्ष
Appeals	अपील
Appellate Authority	अपीलीय प्राधिकारी
Appellate Tribunal	अपीलीय अधिकरण
Appendix	परिशिष्ट
Arbitrator	मध्यस्थ
Assign values	मानों को नियत करना, मूल्य निर्धारित करना
Authentication of Order	आदेश का प्रमाणीकरण
Avenue	मार्ग, एवेन्यू, अवसर
Barrier free environment	बाधा मुक्त/अवरोधमुक्त वातावरण
Barrier free Environment	बाधा मुक्त/अवरोधमुक्त वातावरण
Basic village	आधारभूत गांव, मूल गांव, छोटा गांव
Betterment Charges	बेहतरी प्रभार
Building Regulations	भवन विनियम

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

English Words	हिन्दी अर्थ
Building Services	भवनों की देख–रेख
Builtup area	निर्मित क्षेत्र
Bye Laws	उपनियम
Catchment area	जलग्रहण क्षेत्र
Categorisation	वर्गीकरण
Central Information Commission	केंद्रीय सूचना आयोग
Central Public Information Officer	केंद्रीय जन सूचना अधिकारी
Civic Survey	नगर विषयक सर्वेक्षण, नगरीय सर्वेक्षण
Climate change Adaptation	जलवायु परिवर्तन के अनुकूल ढ़ालना
Collaborative Initiatives	सामूहिक पहल
Colouring of Plans	मानचित्र में रंग भरना
Commencement Certificate	कार्यारंभ प्रमाणपत्र
Committed programmes	प्रतिबद्ध कार्यक्रम
Common areas	सामान्य / आम क्षेत्र
Compatible with the Exigencies	तात्कालिक आवश्यकता के अनुरूप
Competent Authority	सक्षम प्राधिकारी
Composite scoring system	संयुक्त अंकन प्रणाली
Comprehensive water supply	समग्र जलापूर्ति
Concentration Index	संकेंद्रण सूचकांक, सूचकांक केन्द्रीकरण
Conceptual detail project report	वैचारिक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट
Conceptual Plan	वैचारिक योजना
Conclusive Evidence	निश्चायक साक्ष्य
Concourse	भीड, जमावड़ा
Concurrence	सहमति
Connectivity	आने जाने के साधन
Contravention	उल्लघंन, विरोध
Contravention of Condition	शर्त का उल्लघंन

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

English Words	हिन्दी अर्थ
Copies Plan and Statements	योजना एवं विवरण प्रतियां
Core issues	महत्वपूर्ण विषय, मुख्य मुद्दो
Corresponding figure	अनुरूप आंकड़ें
Corridor	गलियारा /कॉरीडोर
Criminal Procedure	दंड प्रक्रिया
Crop suitability	फसल की उपयुक्तता
Cropping area	फसलीय क्षेत्र
Cultural Assets	सांस्कृतिक परिसंपत्ति
Cursory review	सरसरी समीक्षा
Data bank	डाटा बैंक
Decentralized planning process	विकेन्द्रीकृत नियोजन प्रक्रिया
Delete Section	खंड हटाएँ
Demography	जनसांख्यिकी
Demolition of Building	भवन गिराना / ढ़हाना
Dependency Ratio	अधीन क्षेत्र अनुपात, निर्भरता अनुपात
Deposit works	निक्षेप (जमा) कार्य
Detached building	विलग्न भवन/असम्बध्द भवन
Determination of functional Hierarchy	कार्यात्मक पदानुक्रम का निर्धारण
Development Concept	विकास संकल्पना
Development Control Regulations	विकास नियंत्रण विनियम
Development issues	विकास के मुद्दे
Development Permission	विकास अनुमति
Development perspective	विकास परिप्रेक्ष्य
Development Perspective	विकास परिप्रेक्ष्य
Development policies and strategies	विकास नीतियां एवं रणनीतियां
Development potentials and constraints	विकास संभावना एवं बाधाएं
Development Potentials and Constraints	विकास संभावनाएं एवं बाधाएं

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

English Words	हिन्दी अर्थ
Development promotion regulations	विकास प्रोत्साहन विनियम
Development Schemes	विकास योजनाएं
Developmental Charges	विकास प्रभार
Disaster Mitigation	आपदा को कम करना
Disaster Preparedness	आपदा तैयारी
Dispensation	वितरण
Disposal of Appeals and Complaints	अपील व शिकायतों का निपटान
Dissemination of Information	सूचना का प्रचार प्रसार
Dissolution of Planning Authority	योजना प्राधिकरण का विघटन
Dwelling Unit	आवासीय इकाई
Economic input	आर्थिक इनपुट
Economic status	आर्थिक स्थिति
Effluent Treatment Plant	बहिस्रावी शोधन संयंत्र
Enactment	अधिनियमित
End-to-end	शुरू से अंत तक
Enforcing the development Plans	विकास योजनाओं को लागू करना
Enthusiastically	उत्साहपूर्वक
Environmental impact	वातावरण का प्रभाव
Existing development administration	मौजूदा विकास प्रशासन
Extinction of Right	अधिकार का समापन/निर्वापन
Flood Management and Vulnerability	बाढ प्रबंधन एवं जोखिम
Forecast of Planning	योजना का पूर्वानुमान
Functional character of settlements	बस्तियों के कार्यात्मक स्वरूप
Functional hierarchy	कार्यात्मक पदानुक्रम
General Building Requirements	सामान्य भवन आवश्यकताएं
Geographic Information System	भौगोलिक सूचना प्रणाली
Global Positioning System	वैश्विक स्थिति प्रणाली

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

English Words	हिन्दी अर्थ
Goals and objectives	लक्ष्य एवं उद्देश्य
Good Governance	सुशासन
Good Practices	उत्तम व्यवहार
Goods Vehicles	माल वाहन
Grass root-up	बुनियाद / घास को जड़ से उखाड़ना
Growth Centre	वर्धन/उत्पादन केन्द्र
Growth Centres	विकास केंद्र
Growth Point	विकास बिंदु
Growth Points	विकास बिंदु
Growth Poles	आर्थिक क्रियाकलाप वाला शहरी क्षेत्र
Habitat	आवास
Haltage time	ठहरने का समय
Handrail	रैलिंग
Haphazard Development	अव्यवस्थित विकास
Human Settlement	मानव बस्ती
Hypothesis	परिकल्पना/अनुमान
Illuminated Symbol	प्रदीप्त प्रतीक
Imperatives	अत्यावश्यक/अनिवार्य
Indiscriminate Developmental Activities	अव्यवस्थित/अंधाधुंध विकास गतिविधियां
Industrial Potential	औद्योगिक संभावना
Infrastructure	अवसंरचना / बुनियादी सुविधा
Infrastructure and Social facilities	अवसंरचना एवं सामाजिक सुविधाएं
Infrastructure facilities	अवसंरचना सुविधाएं
Inhabitant	निवासी
Instead of exclusively committing	विशेष रूप से करने की बजाय
Irrigation Command Area	सिंचाई कमान क्षेत्र
Kerb Ramp	कर्ब रैम्प

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

English Words	हिन्दी अर्थ
Key elements	महत्वपूर्ण अवयव
Land and Vegetation	भूमि एवं वनस्पति
Land use Distribution	भूमि उपयोग वितरण
Land use zones and Planning Requirements	भूमि उपयोग क्षेत्र एवं नियोजन आवश्यकताएं
Legal and Institutional frame work	विधिक एवं संस्थागत ढांचा
Legislation	विधान
Local Area Development Programme	स्थानीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम
Local Centrality	स्थानीय केन्द्रीयता
Location and setting	स्थान एवं परिवेश
Location Plan	स्थान निर्धारण योजना
Long term Plan	दीर्घकालीन योजना
Management Action Plan	प्रबंधन कार्रवाई योजना
Manpower Mobilisation	जनशक्ति लामबंदी
Mapping for Devolution of Functions	कार्यों के हस्तांतरण का मानचित्रण
Market Towns	मार्केट टाउन
Mercantile building	व्यापारिक भवन
Methodology	कार्यप्रणाली
Mitigation	शमन, कम करना
Mobility device	चलता–फिरता यंत्र
Model Urban & Regional Planning	मॉडल शहरी एवं क्षेत्रीय नियोजन
Monoculture	एक ही किस्म की फसल की खेती करना
Mortgage without consent	सहमति के बिना बंधक रखना
Natural Hazard Zones	प्राकृतिक जोखिम क्षेत्र
Nevertheless	तथापि, फिर भी
Nodal Officer	नोडल अधिकारी
Non-Injury Accidents	चोटरहित दुर्घटनाएं
Norms & Standard	मानदंड एवं मानक

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

English Words	हिन्दी अर्थ
Notwithstanding	के होते हुए भी, के बावजूद, यद्यपि
Obsolete Development	अप्रचलित विकास
Obstructing contractor	निरोधक संविदाकार
Occupancy Certificate	अधिभोग प्रमाणपत्र
Occupational structure	व्यावसायिक संरचना
Official Gazette	सरकारी राजपत्र
On going projects	जारी परियोजनाएं
Organisational setup	संरचनात्मक ढांचा
Outline Development Plan	रूपरेखा विकास योजना
Overall development trend	समग्र विकास प्रवृत्ति
Overwhelmed	अभिभूत
Ownership title	स्वामित्व हक
Parapet	रेलिंग/मुंडेरा
Patelad Maps	पटेलाद मानचित्र
Perspective Plan	परिप्रेक्ष्य योजना, भावी योजना
Physical Feature	भौतिक विशेषता
Physiographic characteristics	भू–आकृति संबंधी विशेषताएं
Plan Formulation	योजना निरूपण
Planning Agenda	योजना कार्य सूची
Planning Brief	योजना ब्रीफ
Planning Engineer	योजना इंजीनियर
Plinth Area	प्लिंथ एरिया
Plinth Level	फर्श का स्तर
Population projection	जनसंख्या प्रक्षेप
Population Replacement	जनसंख्या का प्रतिस्थापन
Preamble	उद्देशिका, प्रस्तावना
Preparatory works	प्रारंभिक निर्माण कार्य

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

English Words	हिन्दी अर्थ
Primitive Settlement	प्राचीन बस्ती, कच्ची बस्ती
Project specifications	परियोजना विनिर्देश
Promoter	प्रोत्साहक, प्रोमोटर
Prototype Plan	प्रोटोटाइप योजना
Prototype Special Development Plan	मूल/आदर्श विशेष विकास योजना
Public Authority	जन प्राधिकारी, लोक प्राधिकरण
Quarry Zone	खदान क्षेत्र
Reconstituted Plot	पुनर्गठित भूखंड
Regional Setting	क्षेत्रीय परिवेश
Regulation of Periphery	उपनगर विनियम
Regulatory Authority	नियामक प्राधिकारी, नियामक प्राधिकरण
Rehabilitation	पुनर्वास
Relocation	स्थान परिवर्तन
Remission	छूट, क्षमा, कमी, ऋण भुगतान
Removing Marks	निशान हटाना
Retrospect and Prospect	भूतलक्षी और भविष्यलक्षी, पूर्वप्रभावी और पश्चप्रभावी
Ribbon Development	मार्ग के साथ–साथ गृह निर्माण
Road Network	सडक तंत्र
Rural Business Hub	ग्रामीण व्यापार केंद्र
Rural hinterland	ग्रामीण पश्च प्रदेश
Scope of the Plan	योजना का क्षेत्र
Secondary Sector	सहायक सेक्टर
Sectoral Plan	अर्थव्यवस्था के विशिष्ट उद्योगों एवं क्षेत्रों के लिए रणनीतिक योजना
Selective Catalytic Reduction	चयनात्मक उत्प्रेरक कटौती
Septic Tank	सैप्टिक टैंक
Settlement	बस्ती, निपटारा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

English Words	हिन्दी अर्थ
Settlement Pattern	बस्ती प्रतिरूप
Settlement Pattern	बस्ती प्रतिरूप
Settlement System	बस्ती प्रणाली
Sewage and Sanitation	मल–निकास एवं स्वच्छता
Short title and commencement	संक्षिप्त नाम एवं प्रारंभ
Site Plan	स्थल योजना
Sliding Door	स्लाइडिंग दरवाजा
Slum Cluster	झुग्गी–झोपड़ी समूह
Spatial Development Plan	स्थानिक विकास योजना
Spatial Integrated Committee	स्थानिक एकीकरण समिति
Spatial Planning	स्थानिक योजना
Special Component Plan	विशिष्ट घटक योजना
Specifications general and detailed	सामान्य एवं विस्तृत विनिर्देश
Specified area	विनिर्दिष्ट क्षेत्र
Standardization	मानकीकरण
State scenario	राज्य परिदृश्य
State Sponsored scheme	सरकार द्वारा प्रायोजित योजना
Statutory authority	सांविधिक प्राधिकारी/प्राधिकरण
Statutory Instruments	सांविधिक लिखत
Statutory Plan	सांविधिक योजना
Structural bottlenecks	संरचनात्मक मार्ग अवरोध
Structural Design	ढांचागत डिजाइन
Structural stability certificate	संरचनात्मक मजबूती प्रमाणपत्र
Subsumed	सम्मिलित किया गया
Suggested Development Mechanism	प्रस्तावित विकास तंत्र
Suggested Strategy	प्रस्तावित रणनीति
Suggestive Framework	महत्वपूर्ण ढांचा, विचारोत्तेजक रूपरेखा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

English Words	**हिन्दी अर्थ**
Suo Motu Disclosure	स्वप्रेरणा प्रकटीकरण
Terms & Condition	निबंधन एवं शर्तें
Terms and expressions	नियम और अभिव्यक्ति
Terms of References	विचारार्थ विषय
Tertiary	तृतीयक
Tertiary Activity	तृतीयक व्यापारिक गतिविधि
The Right to Information Act 2005	सूचना अधिकार अधिनियम–2005
Threshold	अवसीमा, दहलीज
Top-down	ऊपर से नीचे
Topography	स्थलाकृति
Transfer of Application	आवेदन का स्थानांतरण
Uniqueness	अनोखापन, अद्वितीयता
Urban infrastructure and Governance	शहरी अवसंरचना एवं शासन
User charges	उपभोक्ता प्रभार
Validation of Act	अधिनियम का विधिमान्यकरण
Various inter–state regions	विभिन्न अंतर राज्यीय क्षेत्र
Vesting of Right	अधिकारनिहित होना
Waste Land	बंजर भूमि
Water Body	जल निकाय
Water closet	शौचघर, पाखाना
Water course	जलमार्ग, नहर
Water Harvesting	जल संचयन
Water Shed Development	जल विभाजक विकास
Watershed	जल विभाजक
Wholesale establishment	थोक स्थापना
Zoning Regulations	जोनिंग विनियम

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

टीसीपीओ के दौरे के दौरान माननीय डॉ. सुधीर कृष्णा, सचिव (शहरी विकास) का स्वागत करते हुए मुख्य नियोजक महोदय

टीसीपीओ के अधिकारियों के साथ बैठक के दौरान माननीय डॉ. सुधीर कृष्णा, सचिव (शहरी विकास) एवं श्री आशुतोष जोशी, निदेशक (शहरी विकास)

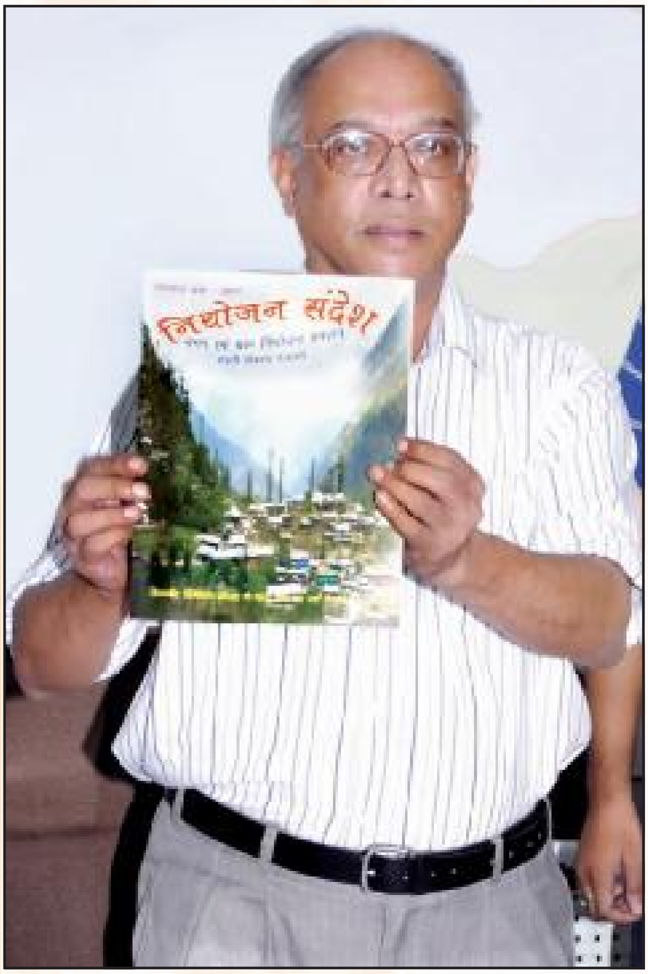

संगठन की हिंदी गृह पत्रिका "नियोजन संदेश" के 16वें अंक का विमोचन करते मुख्य नियोजक महोदय एवं इस दौरान उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

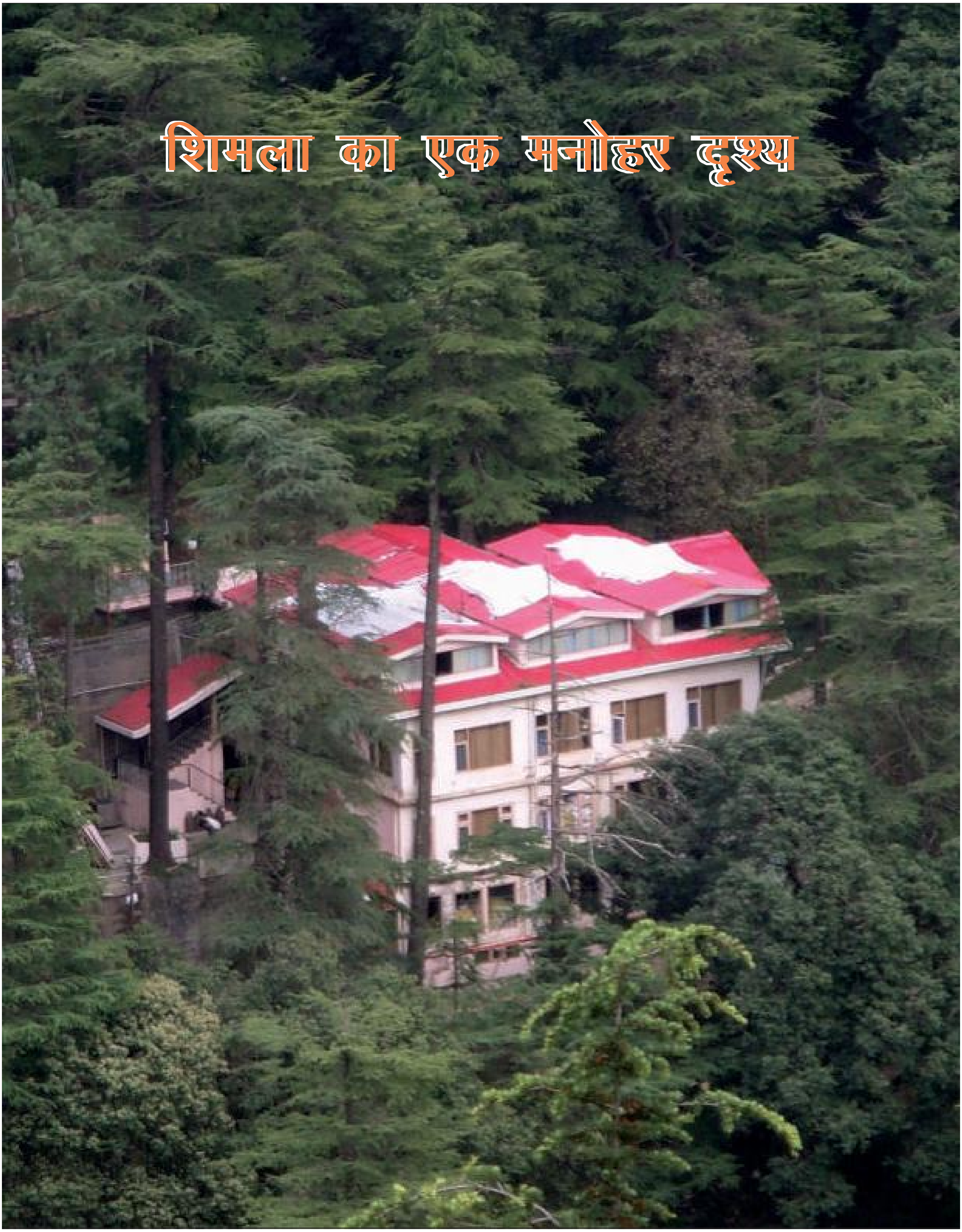

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com